

प्रेरणा-प्रवाह

•

चि नो पा

•

सर्व - सेवा - सध - प्रकाशन
राजघाट, धाराणसी

प्रकाशक	मन्त्री, अ० मा० सर्व-सेवा-संघ, राजघाट, वाराणसी
संस्करण	दूसरा
प्रतियाँ	३,००० अप्रैल, १९६३
कुल प्रतियाँ	६,०००
मुद्रक	शिवनारायण उपाध्याय, नया संसार प्रेस, भदौनी, वाराणसी
मूल्य	१ २५ नव पैसे

<i>Title</i>	PRERANA PRAVAH
<i>Author</i>	Vinoba
<i>Publisher</i>	Secretary A B Sarva Seva Sangh Rajghat Varanasi
<i>Edition</i>	Second
<i>Copies</i>	3 000 April 63
<i>Total Copies</i>	6 000
<i>Printer</i>	S N Upadhyaya Naya Sansar Press Bhadaini Varanasi
<i>Price</i>	Re 1 25n P

अनुक्रम

१ अहिंसासूत्रक वरुणा	५
२ जीवन का समीकरण = त्याग _२ + भोग _१	१४
३ गृहवित्तमेवम्	२१
४ तुलसी-पुष्पस्मरण	२७
५ गवत मूयाका	४४
६ शब्दा का बल	५४
७ गायत्री मंत्र	६१
८ मत्स्य त्रेम वरुणा	७३
९ एकचित्त ममानवित्त और गृहवित्त	८३
१० थडा बुद्धि और गुद्धि	८६
११ प्रना प्राप्ति	९७
१२ नान का फलित साम्यशाव	१०५
१३ धीकृष्ण-स्मरण	११६
१४ भगवन्-पररणा की आवश्यकता	१३१
१५ सान-ममूट नना	१३७
१६ वित्त निर्माण और वि-ममस्याण	१४४
१७ उद्योग मवश्रेष्ठ याग	१५२
१८ वीरहा	१५६
१९ विदार विचार और चिन्ता ने मुक्ति	१६६

अहिंसामूलक क्रूरता

अन्य प्राणी और अहिंसा का विचार

अहिंसा शब्द का उच्चारण बहुत पुराने समाने न होता रहा है। प्रायः मनुष्य के अनायास्य प्राणियों का यह विचार सूझता ही ऐसा वास्तविक नहीं है। मुमकिन है सूझना भी ही लेकिन मनुष्य पहचान नहीं करता। पर हमें जिनका दोषता है उतना ही सामिन हम बालक है। मामाहारी प्राणा मामाहार करते हैं और खावाहारी प्राणी खावाहार। मातूम नहीं गाय का बसा सूझता है कि वनस्पति खानी चाहिए, बहा खाना उचित है और मामजय वस्तु का प्राहार उमके लिए उचित नहीं है। मम प्रकार का उचित और अनुचित का विचार कभी उमे छूना होगा या नहीं मातूम नहीं लेकिन छूना हुआ दोषता नहीं है। ऐसा दाख है कि उसका देह प्रकृति ही बुद्ध ऐसा है कि वह वनस्पति ही ग्रहण करती है और प्राणिजय वस्तु पसन्द नहीं करती।

हिरन और 'घा' का रोटा

हमारे आश्रम में एक हिरन था। जब-जब खाने की घण्टी बजता थी तब उम हम खिलाने थे। घण्टी सुनकर वह घाता भी था। उस भान हो गया था कि घण्टी बजने पर खाने के लिए जाना चाहिए। एक राटी हम उमे खिलाते थे। एक दिन जिस घाटे की रोगी बनी था उम घाटे में घा डाला गया था। हमारा वैसी रोटी नहीं बनती थी। उम दिन राटी जब उमके सामने रखा तो सूँध लिया खाया नहीं। हमेंगा की तरफ गिना थी की राटी बनाकर खिलाती पड़ी। मतलब यह कि वह मामाहार में हमसे घागी बना हुआ था। हम लाग तो प्राणिजय

बम्बु भी खला लेने हे लेकिन वह उम पगल नहा करना था। उसी गंध का भ्रांत उम हानी हानी तो वह क्या करता मातूम नहीं।

घंल पर अलसी का प्रयोग

वर्षा के बाजार में सागरा का एक बैल हमने छराया। उम हम धनमी की खली खिलाने थे। वहाँ तो वह धनमी का खली नहा खाना था। उसकी भ्रांत मगपली की खला खाने की थी। उसे धनमी का बम्बू भ्राता थी। हमने उसकी नाक में धनसा के तन में भिगाय हुए ब्याम के दो टुकड़े रख दिये। इन टुकड़ों का वह नाक में घाँस भी नहीं पिराल सकता था। दाँतान ग्लि में उमका भ्रांत बन गयो, ता धनमी का खला खाना करने शुरू कर दिया। उसी तरह की भी भ्रांत ग्लि में लगा दत ना बरा मरना था। यह एक भूत जानवर है धनसा है, उसे इस प्रकार की ट्रेनिंग दी जा सकता है।

हिरन आदत से शाकाहारी

उम हिरन ने घा की रोटी नहीं खायी, क्योंकि वह थोड़ा शाकाहारा साहित्य हुआ। लेकिन he choice नहीं। भ्रांत थी हमलिया नग खाया। शाकाहारा प्राणी घास नहीं खाने। शाकाहार कहते हैं कि उनका भ्रांत घास के पायव नहीं है। लेकिन वे प्राणी यह साबते हैं कि नहीं, मातूम नहीं।

अहिंसा का व्यापक अर्थ

लेकिन मनुष्य यदि प्राचीन काल में अहिंसा का विचार करता थाया है। अहिंसा क्या है यह जय कभी माया जाता है तब मरी धडा उसका व्यापक अर्थ में है। गीता में कहा है न हति, न ह्यत — आत्मा न मारता है न मरता है न घातवति — न मरवाना है। यह आत्मा का स्वभाव है। वह सहज है। वह कमजोर है काइ क्रिया नहीं करता लेकिन मारने की क्रिया हो हा नहा सकती। जहाँ दूरी भा मारा क्रिया न। हानी वहाँ मारने की भी नहा हानी। मारता नहीं, मरता नडा

ऐसा धारणा है और यही अहिंसा है। फिर हमका सामाजिक विचार बना तब हमने उसका एक विशिष्ट-विशेषयुक्त शास्त्र बनाया। लेकिन हमारा मूल विचार यही है कि धारणा का साथ अहिंसा जुड़ा है। इसलिए हम जिनने धाम-स्वभाव का नज़दीक जायेंगे उनका धन्तस्तुति और धार्मिक मित्रता और जिनने धाम-स्वभाव से दूर जायेंगे, उनका मार्गिक नज़ा मित्रता।

कर्मणा परायण पुण्य भी हिंसा पस्त-द करत है

हम तरह अहिंसा का मूल विचार और मूल्य विचार ऐस दो विभाग जीवन में बन गय और धारणा तब मनुष्य मानता आया है कि अहिंसा अर्थात् अहिंसा मानस अर्थात् है लेकिन मनुष्य का रक्षण का लिए— अहिंसा का लिए—यात्रा जब हमला होता है तब हिंसा का जो स्वभाव है और यह हिंसा अहिंसा मंजिरी जा सकती है इस प्रकार मनुष्य का विचार बनता हा रहा। यह देखा जाता है कि बहुत बरगान-बरगान पुण्य भा हिंसा को पस्त-द करत है यह समझकर कि हमसे मन्त्र मित्रता। कम्युनिस्टा ने हिंसा का भाव किया गरीबों के हित में। उगर मूल में बदरगा है। समाज-शास्त्रकारों ने अरराधिया का तरह-तरह का दण्ड देना माय किया। उसके मूल में भा बरगाना है। परगुणम ने धनुष ग्यशा आझराण शबर भी सत्रिय का काम किया—जमें भी बरगाना है। इसका हमने परमशर का मिय बरगाना नहीं मांगा है। साथ प्रेम और बरगाना मांगी है। जो साथ बरगाना म आ सतना है यह प्रेम में भा आ सतना है। उन दोनों को निराप बनाने के लिए सत्य का धारणयतना है। इसलिए सत्य प्रेम और बरगाना मित्रतर एक पूण विचार बनता है।

अहिंसा के विचार में विज्ञान की मदद

समाज में जितना भा गानन बनता हा, चाह वह सरदार का अरिये हा या अय निमीने जरिये—उगमें एक दबाव का अरय हा माय किया जाता है वह भी बरगाना की प्रेरणा स ग। धना तब मनुष्य का सामने

यह विचार साफ नहा हो रहा है कि अहिंसा के हिंसा क्या क्या किया जा सकता है और क्या-क्या नहीं। अब सांख्य का युग आ रहा है। वह गन्ना की भयानकता खिलावर सोचने में मग्न दे रहा है और साचने के लिए लाजिमी कर रहा है।

एटम बम के खिलाफ खोलनेवाले अहिंसक हैं ?

आज कई दयालु लोग भी हिंसा के खिलाफ नहीं हैं। वे एटम बम के खिलाफ हैं, लेकिन पाँचों के खिलाफ नहीं हैं। बन्व-सुनल बपन्स, जिनका मामूली शस्त्र बंद सकता है उनका उपयोग हा ऐसा वे चाहते हैं। इसलिए एटम बम का उपयोग बंद हो ऐसा चाहनेवाले सीमित हिंसा चने, यह वास्तव है। वह इसलिए कि दड चल मके। उन बड़े गन्ना ने तो खन छोटे गन्ना की दृजत कम का है इसलिए वे चाहते हैं कि बड़े गन्ना न चलें नाकि छोटे गन्ना चलें और दड-शक्ति का दपन्वा चने राय चले और हम चनायें। आज दुनियाभर के सारे राज्य दड-शक्ति पर खड़े हैं। अगर प्राणविक गन्ना चनेगे, तो उस हालत में इन छोटे गन्ना की कुछ चनेगी नहा और वह दड-शक्ति परत हागी इसलिए वे धरडा गये है कि दड क्या चनेगा ? वा अरपन्त तीशता से आटागिक वेपन के खिलाफ खोलते है वे अरपन्त हा अहिंसा में सोचते है, ऐसा नहा कहा जा सकता बल्कि दड जारी रह इसलिए वे वेगा सोचते हैं। धम-राज युधिष्ठिर की मिथ्या बोलने की प्रेरणा दो धार हुई, वह करुणामूलक ही थी। बहुत करुणावान् नाग साचते है कि सन्धि नियमन हाना चाहिए। एक करुणा सन्धि नियमन करने के लिए करना है और दूसरी करुणा दुजना का दप देन के लिए कहती है। एक करुणा बड है, ता मजदूर यूनियन बनानी है और एक करुणा बड है जा वासना के क्षय के बिना अहिंसा नगी चनेगी यह कहती है।

गीतम सुद्ध का महान् रोज

वासना के क्षय के बिना अहिंसा नहीं चलेगी यह करुणा गीतम सुद्ध

का मूर्खी। यह धरणा उसे नही मन्नाता ता य मजदूर पुनिया बनाने में ग्या गहना और बानून बनाकर प्रचार-कार्य में गता। लेकिन यह भाव का भाव में पटा और धरणा का सात कटा न चतता है यह पञ्चानने न गिण साज की। साज यह धी वि मनुष्य का वागना-शय करना थालिए। हम भाव के प्रति धरणा सिधात है और चाहत है वि भाव बचे। लेकिन वासना बगदेंगे ता भाव स्वम हाता। भाव भाव है, लेकिन वल हम अपनी मन्नात बगद चने जायेंगे तो मनुष्य भाव और बत की धरणा हराफ तुम्हने मानेगा और उनका स्वम करने का तत्रबीज तरकाव जरूर तुम्हेंगा। धरणा मृतभूत धरणा वागना-शय में ने जाती है। धरणा का विचार पुराना है। वागना-शय का विचार भा पुराना है। मुनि का साज में वागना-शय का जा विचार थाता है वद भी पुराना है। धरणा के बिना समाज मुषी नहा हा सवता यह साज भी पुरानो है। धरणा के गिण वागना-शय तब पहुँचना है। यह साज जर्ण तक हम जानने है, गौतम बुड का है और उमव वा बहुत मन्ना ने म्मवा उठाया है।

—यक्तिगत और सामाजिक क्षेत्र में धरणा

बहुत साग कन्ते है वि हिन्दुमान गिरा और प्रतिकार नहा कर सका म्मवा कारण है बुड का परम्परा विगने हिन्दुमान का और दुर्ज बनाया। लोग समभते हैं वि बुड लाग वागना-शय करेंगे तो बुड सागा का मन् ही होनी है। धल लोगो ने मन्तो व उन विचारा का विराध नग किया। लेकिन जहाँ धाज हम धरणा क गिए सामाजिक क्षेत्र में वागना-शय सात है ता समाज ज्ये पमन् नही करना। एक धात्मा त्याग करे, तो समाज उसे पमन् करना है। लेकिन यह धात्मा धरने समाज को दूसरे समाज के गिए त्याग करने के गिए सिन्वाये तो समाज उसे पमन् नहा करेगा। त्यागा और वैरागा मनुष्य अच्चा है लेकिन वह त्याग और वैराग्य भाये समाज का सिन्वाता और त्याग कराना समाज का पमन् नग है। एक समाज को दूसरे समाज के गिए त्याग करना

चाहिए, यह समझाने के लिए यह कह कि हिन्दुस्तान का पाकिस्तान का
 भ्रष्ट करना चाहिए या पाकिस्तान का हिन्दुस्तान के लिए प्रेम से त्याग
 करना चाहिए, ता समाज उमक खिनाफ सड़ा होगा और कहेगा कि यह
 मनुष्य समाज-द्रोही है मरने योग्य है। सारास, इस प्रकार का आपने
 वामना-शय और कथना के लिए नही है। बरगना तो सबका पसन्द है
 वामना-शय भी पसन्द है लेकिन जहाँ आपने वामना-शय का सम्बन्ध समाज
 में जाला बना वामना-शय के खिलाफ समाज उठेगा। आप इसका
 सामाजिक तत्त्व बनात ह ता समाज पसन्द नही करेगा। यह जा
 विचारधारा है, वह सिर्फ हिन्दुस्तान में ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया में
 चलनी है। इमाममाह के खिलाफ नाट्य उठा। कम्युनिस्ट भी बोलत
 है कि आपने वामना-शय और कथना से जाला सिर्फ यह हम सागा के लिए
 साचने की बात है।

शारदाप्राही और मूलप्राहा करुणा

हम करुणा चाहत है लेकिन किस तरह का ? हम मल-मूत्र-सफाई के
 लिए जात है बीमारों को सेवा करत है—उममें करुणा हाता है। इनके
 आपत्तिया में गृहस्थाश्रमी पने ह और सन्तान बडा है, उस हालत में
 मरना करत की इच्छा होती है। यह भी कथना है। क्या यह करुणा उन
 गृहस्था का समभायेगा कि तुम नाहन भाग में पड़े हा इसलिए भोग-मुक्त
 हा जाओ ? वे भाग में पड़े है ता यह करुणा उनकी मरना करती है।
 इसलिए वह गालाप्राहा कथना है मूलप्राहा नहा।

दुःख मुक्ति के लिए वासना शय आवश्यक

तुलाराम ने मानसिक विक्रम के क्रम में आन्विकी मोवे पर कहा है
 काम नाही, काम नाही नाला पारो रिबामा। इनके दो अर्थ हात है
 काम नहा है क्याकि कामना नहा है। गसत्या छडे 'नसत्या छडे गग
 बिना विह्वलतसे।' दुनिया दुःख कर रही है वान रही है निना म
 लकिन दुनिया का उम बेचना भाग में धालत घाता है। इसलिए उमका

वेदना म छुटाने का प्रयत्न में नडा करुंगा । 'एकाएकी सुखा लोको
निराला । इसलिए तुकाराम कहता है कि वह लागे स भलिस हा गया
है । वह जानता है कि उन लोगो का दुख से भलग करें, तो अच्छा नडा
उगेगा । उनका उसीम अच्छा सगता है इसलिए विनो में दुनिया
चिज्ञानी है । यह बडा बडोर वाक्य मात्रुम होना है लेकिन उसमें भूल
करणा का है । तुम वामना बटात रहा ता दुख पात रहो । तुम्हें भूल
भिवता रहगा । यह सिनमिला नाटनी है तो जड काटनी हागी । इसलिए
वामना-शय की आर जाना ही हागा । वासना-शय की तरफ जाना हा
है और बन्म-ब-बन्म जायेंगे तो किस तरह वासना शय हागा ? गौनम
बुद्ध ने एसीलिए कहा है कि वामना और तृपणा सारे दुखा का भूल है
उम काटना हा हागा । तो क्या जिजीविषा तांने की है ? वामना-शय
के लिए क्या यह भी करना है ? यह तो आश्विरी कदम है । जब तर
हम यत्न ममभेग कि हरणक को जिजीविषा है तब तक हम दूउर प्राणी
का हिमा नहा करेंगे । जैसी हमें जिजीविषा है, वैने दूमरा को भा ह ।
मुझे भूल है वैने दूमरे को भी है । एस तरह आत्मोपम्य दृष्टि म दवेगे,
ता उमका भी जीने की इच्छा है और वामनाएँ भी है । आरम्भ म छूटगा
नडा, ता आरम्भ कहाँ से करना होगा ?

कुवासनाएँ धोडनी हैं

जिम वासना के कारण स्पष्ट ही गरीर का इन्द्रिया की समाज का
हावि होना है उम काटना हागा । गराब से गरीर, मन सराब हाता
है—या माण बान है लेकिन यह साफ नहा दूधा तब तक ता सत्र करना
गगा । दूमरा वामना है पर-स्त्री व साथ सम्बन्ध नडा रखना चाहिए ।
याने पडने कु-वासना पर प्रहार करना हागा । वासना में कुद कु वामना
है और कुद स-वामना—या समभकर जो माय कु-वागना है उह
छांता हो हागा । स-वासनाएँ रहेंगा । उनमें त्रम निठाना हागा ।

वासना-भ्रम । यठाना ह

जिम वासना व लिए सबर मन म चाह है लेकिन जिसका पूर्ति

के माधन कम है वह कामना चाहे मद्रागना न हो। त्रितीया कम कर
 सके, करें। यह दूसरी बगोली होगी। मद्रागना में भी त्रितीया मद्रा
 उपयोग नग मिलता है उन्हें मद्रागना पड़ता है। कामनाओं की कम
 है—ॐ और राम का जो बान बनी उममें—जब ॐ बानना है
 सब ॐवार के लिए शुचिभूत होना होगा। मना धर्म करके कामना
 पड़ता है। लेकिन राम-नाम धर सना है। ता विगा चार को काइ
 जकरा नहो। धारकरा बहुत है कि स्थिती मद्राग में चारकीय नि
 धरग रहती है उम रजरता का धरम्या में ॐवार का मय न। बान
 सवना, लेकिन राम-नाम बान सवना है। राम-नाम एक लेग माधन
 सान दिया जिसे पाया उपवान शुचि-धरुमि सब मान सवन है।
 इगनिण हम ॐवार की पागना भी नही सकेग राम नग हा बानेग।
 धार यह कि मद्रागना सबक लिए न हो ता उमका स्याम करना
 धारिण छोडना धारिण। १ कुवामना स्यामना धारिण। - मद्रागना
 जो मयको उपलब्ध न हो सबका उमर। माधन रहा है स्यामना धारिण।
 कम-कम उसका माधन सबर हाय में धान एक स्यामना धारिण।
 ३ सबका मद्रागना उपलब्ध है पूर्ति का माधन है—नेग माधे के
 लिए मिटाई सबका उपलब्ध है ता बहुत साउ है। लेकिन नम
 सयम का सवान धारम्या। धारु सबके लिए उपलब्ध हो फिर भी धार
 धोर मन पर जडता न धारं कि कां काम हो न कर एक ऐसा धरम्या
 न हो। इगनिण उमका अधिक् माया म गेवा न हो। यही माया का
 सवाल धार्या। जिन मद्रागनाओं को पूर्ति का साधन सर्वेन है, उनका
 भी मात्रा में लेना धारिण। क्योंकि बुद्धि पर धारो वर बुरा धरम्य न हो।
 जहाँ मात्रा एक यह विचार पडुवना है और सद्राग पर भी पाबन्दी धारो
 है वही धोर विचार भी मामने धारता है।

सद्वासनाओं का त्याग

पलाहार हो तो सर्वोत्तम। मिटाई राजस आहार है। लेकिन पला
 हार की इच्छा हो और भूख लगे, और भूख सन्न मरा हाती, इसविध-

खाना हा पेटे, यह लाचारा की अवस्था भा नहा आनी चाहिए । समय पर खाये लेकिन धुधा का पीडा सहन नहा कर सक्ते ऐसी हालत न आये । ऐसी हालत में अपने पर हो हमारो सत्ता नही रहती । जिन वामनामा से मनुष्य आजानी सत्त्व और काबू खाना है उन वामनामा का भी काबू में रखने की कागिग हानी चाहिए । इसलिए पनाहार का छाडकर निराहार का विचार आया ।

आराग वामनामा के निराकरण का क्रम यह हाया

- १ कुवामना का त्याग
- २ मद्रामना भी सबको उपलघन हा तो उसका त्याग
- ३ मद्रामना हो लेकिन उसका भाग में मात्रा और
- ४ ध्याकुवना को काबू में रखने के लिए मद्रामना का त्याग ।

इदौर

—पजाब कायकर्ता गिविर में

६८६०

ब्रिटेन का समीकरण = त्याग, + भोग,

भारतमाता ने पारतन्त्र्य में भी प्रतिभा प्रकट की

मत्र जानत है कि लालमाय तिनक अपने जमाने में अद्वितीय थे । भारत पर परमन्त्र की बहुत कृपा रही निन्स जमाने म अपने अपने क्षेत्र में बड़ अन्विताय पुरुष हुए । यह भारत की बहुत बड़ी विगपता रहा । रामट्टण समन्वय में अद्वितीय थे । महात्मा गाधी अनसक्त बगयोग म अद्वितीय रह । श्री भरविन्द याग के क्षेत्र में अद्वितीय थे । रवीन्द्रनाथ टाडुर का काञ्च प्रतिभा में अद्वितीय स्थान है । इन प्रकार अद्वितीया का समुह हिन्दुस्तान में तर हुआ, जब कि हिन्दुस्तान अश्रेजा की गिरफ्त में था । लालमाय की गणना ऐम अन्वितीयो में है । यह नजारा यं दृश्य अन्तर कम दलने का मिलता है कि बड़ अद्वितीय एक जमाने में एतन हा पावें । अर्थात् भारतमाता ने पारतन्त्र्य में भी प्रतिभा प्रकट का ।

नेता आत्म मशोधन म लग गये, दवे नहीं

दूमर देगा क इतिहास बतान है कि दंग का गुलामो में या तो लागो ने बगावतें का या याग दर गये । लेकिन हिन्दुस्तान के इतिहास म लागरा ही दृश्य देखने का मिलता है । अश्रेजा के गाय की स्थापना क दान यर्न छुत्पुत् बगावतें लोगो ने की, लेकिन ज्यान नहीं । लागो ने म बगावतें का म देग ने दव जाना पगन्द किया । बल्कि नेता आत्म मशोधन म लग दय । चिन्तन करनेवाले नेता आत्म-संगाधन में लग गये निन्सने दूर स लाग द्यावे और हम पर हूहूमन कायम की ता हमारे ममाज गारर म और हम लागों क मानस में बुद्ध दाय होने चाहिए और एत शोषा का निम्न करने पर भारत का अगती प्रतिभा प्रकट करने का

संज्ञ ही मोक्ष मिलेगा । अतः यज्ञ व वेदना का मूल्य ही देना का प्रवृत्ति व दाग का समाह्वरण और निवारण होना चाहिए और उसमें परिश्रम का सम्पत्ति का धारा लाभ लेना चाहिए ।

समाज-मुधार और सशोधन

इसलिए समाज-मुधार धर्म-मुधार उपाधना-मुधार संस्कार-मुधार हुआ । उनके लिए ब्रह्म-सनातन ऋषि-समाज प्राय-समाज प्राथना-समाज, विद्या-संस्थान समाज—एक तरह-तरह के अनेक समाज स्थापित हुए । महान समाज-मुधार का वातावरण और समाह्वरण किया ।

भारत का अद्वितीय इतिहास

गमकृष्ण परमहंस ने सब साधनाओं का अनुभव ही समझकर अनुभव किया । समाज, ईश्वर बौद्ध हिन्दू वैष्णव शक्ति-मय ऐसी विविध साधना करके एकात्मता प्राप्त की । इस प्रकार के समाज-समाह्वरण और समाज-मुधार का कार्य परमेश्वर के वातावरण को सूर्य यह मिना जहाँ तक इतिहास का मुझे ज्ञान है भारत के इतिहास में ही हुई है । इसका वातावरण स्वराज्य का आवागमन पदा हुई । स्वराज्य के लिए आत्म-संयम हुआ स्वराज्य की यात्रा हुई और स्वराज्य प्राप्त हुआ ।

महात्मा गांधी ससृष्टि का फलश्रुति

अब सर्वोच्च का विचार निकलता है । ये सारी बातें एक के बाद एक हो गयी । अतः इनमें समाज-समाह्वरण का प्रवृत्ति ही था । परमेश्वर का वातावरण यह हुआ । इनमें प्रवृत्ति है कि एतद् एतद् के अन्तर्गत का प्रवृत्ति में स्वराज्य मन्त्र भग्न है । अज्ञान वषों के चिन्तन के परिणामस्वरूप का हुआ है समाज दर्शन समाज में मिलता है । इनमें मेरा विश्व बहुत थावा है और वरिष्ठार मेने समाज जिज्ञासी किया है कि परमेश्वर के वातावरण यज्ञ व वेदना-सनातन आत्म-समाह्वरण के काम में उगे हुए उमीद परिणामस्वरूप का स्वराज्य प्राप्ति का साधन मूला वह अस्मिताय था । एतद् वह साधन आत्म-समाह्वरण की गयी था । एतद् वह साधन भा भारतवर्ष सम्पूर्ण आत्म-समाह्वरण था ।

महात्मा गांधी यदि न भा हाने ता यह चीज न बनती ऐसी बात नहीं। वे न होते तो यहाँ की सम्पत्ता दूसरों को जगानी। यह यहाँ की सम्पत्ति का पक्षधर है जो महात्मा गांधी के रूप में प्रकट हुई।

राजनीति आपद्धर्म

भारत के अर्वाचान इतिहास में ऐसा दृश्य देखने का मिलता है कि यहाँ दाया का संगोपन हुआ और जीवन के विविध क्षेत्रों में अनेक अर्थनीय पुरुष पैदा हुए। उन्होंने लोकमान्य हैं। उन्होंने सिखाया कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध हक है और वह हम हासिल करके लेंगे। उन समय नाबन्धन स पूछा गया था कि स्वराज्य के बान् आप कौनसा पाठपत्रियो लेंगे ? ता उन्होंने कहा था कि राजनीति में मैं नाश्ताज स हूँ। धर्म बन रहा है, देश का विकास बन गया है इसलिए लाचारों से मैं राजनीति में हूँ राजनीति मेरा काम नहीं है। स्वराज्य प्राप्ति के बान् ता में देश का संगोपन करना या गणित विद्या का संशोधन करना। यह ता मैंने आपद्धर्म के तौर पर बतूत किया है।

नोआखाली का यात्रा क्यों ?

अभी तर हम इतना हा समझे हैं कि राजनीति में तारत है। लेकिन अगर यह समझने के लिन आर्य है कि राजनीति में एक जमाने में ही शास्त्र थी आज नहीं है। स्वराज्य प्राप्ति के पहले जा लोग राजनीति में थे वे लोग लोगों के उत्थान के लिये राजनीति स अत्यन्त जरूर होता है न्नालाप थ। वह राजनीति नहीं है। वह तो लोकनीति हानी है, चाहे उसका स्वरूप राजनीति जैसा दागता हा इसलिए स्वराज्य के आखिरी धान्नेशन में अनेक धार्मिक पुरुष ने सहयोग लिया और अपना काम छोड़कर हममें आये। वह लाकनानि थी। अगर वह राजनीति हाती, तो स्वराज्य के बान् महात्मा गांधी नोआखाली में न दाखल। जैसे बेरिस्टर जिना न अपने अधिकार हाप म लिये थे और पाकिस्तान का बागडोर सँभाली था मागन्गन का जिन्मा उठाया था वैसा महात्मा गांधी भी

कर सकते थे। लेकिन वे जानते थे कि स्वराज के लिए हमें साहसी बननी है और नीचनीति के तौर पर स्वराज के लिए कांग्रेस का साहसिक-कार्य बनने की हिम्मत उठाने दी। मृत्यु के प्रतिमंति उठाने का हिम्मत दी। यानी कांग्रेस के काम का यह और उच्चतर रूप देना चाहते थे और उस उच्चतर बनना चाहते थे।

जहाँ त्याग, वहाँ बल

वात एसी है कि जिन क्षेत्रों में त्याग करना पड़ता है त्याग के बिना जो क्षेत्र सफल नहीं होता उसमें ताकत होता है। कांग्रेस के जमाने में स्वराज के पक्षे कांग्रेस का मन्वर बनना याने कांग्रेस के विनाश नाम जाहिर करना था। शासन का टांगा पहनना उनका दुस्मा मोन बना था। एक जग में मजबूत बनना था। उस जमाने में उसमें बहुत ताकत उठाना पड़नी थी। आज कांग्रेस का मन्वर बनना याने कुछ पाने का का बान हागा खाने का नही। मार यह कि राजनीति में तब ताकत था। उस जमाने में राजनीति में जाना यानी रागी माना जेन जाना मार माना कोड़े माना फाँस पर चढ़ना—यह सारा राजनीति क्षेत्र में होता था। वह ताकत आज नग गपना है। आज राजनीति में त्याग नही है। तो आज गति कर्न है? समाज-क्षेत्र में है। धार्मिक क्षेत्र में है। उसमें हम काम करते हैं तो त्याग करना पना है। 'यत्र त्याग तत्र बल'—जहाँ त्याग है वहाँ बल है।

सत्ता में कमलपत्रयत् रहें

मैं मानता हूँ कि आज राजनीति में त्याग का मौका नही है तो भा त्याग कर सकते हैं। जम, जनक मन्वराज ने त्याग किया था। देम में चान्ता है कि जिनने हाथ म गता है वे जनक महाराज का या भरत का आत्मा अपने सामने रमें। ये ग बड़े पुरुष यहाँ हा गये। ऐसा हा मानता है। लेकिन आज राजनीति में स्वाभाविकत त्याग का क्षेत्र है गना नही कट सक्ते। त्याग कोई करेगा और वाकजू भा के वह त्याग

करेगा, तो वह त्याग परम उत्तर होगा। लेकिन वह स्वभाविक, नमस्मिन् प्राकृतिक त्याग का क्षेत्र नहीं है। वह भाग का क्षेत्र है। इसलिए आज समाज-मवा में बल त्याग है। जति समाज-मवा के क्षेत्र में है। आज तरह-तरह का मवा का जहर है। जति का अनुसंधान त्याग में है, वह स्वाभिमानी जहर है।

नववायू के त्याग का अत्यन्त प्रपञ्चा

मैं आपका मित्रान देता हूँ। नववायू उदासा व दुःख मन्त्री ध। व भूदान म धाना चाहत ध। उदान त्याग-मत्र दन का छावा भी था। उनमें मरी मुतावान वइ धार हाता था तबिन एव भी मुतावान म मैने उनका यह नहा ममभावा कि इस पत्र का धाय त्याग दाजिध। मैं यह नहा मानता कि इन तरह की मलाह विभावा न जाय। व धयन विचार काप्रेम व गामन रखा थे। धागिर उपरवाला न रखा कि उनका मन में तल्पन है, ता उदान छा निया। उनका त्याग की प्रणामा करनवाला थाई आटिकन धायन पडा ? विभीतो लिखने की प्रेरणा नही हुइ। मैं उनकी प्रणामा महा का क्याकि उनका प्रणामा करता धयना प्रणामा करने जसा होगा। लेकिन धागिर मैने देखा कि उनका त्याग का अत्यन्त एव ता हा रहा है। तत्र मैं समितना म धूमता था। वही माणिक्यवाचकर एव मशान्द तत्त्वज्ञानी वगीर का कोटि व हा गय। उदाने एव तमाने में प्रयानमवा-एव का त्याग किया और बहुत बड़ भक्त बन गये। उनका मजन हर बालक क कठ पर है। उनके गौर हम गये ध। उस दिन माणिक्य वाचकर की अन्तिय मिमाला देकर मैने नववायू का धान रखा। मैने जागा से कहा कि अगर रायसत्ता व जरिये प्राप्ति नो मकनी थी, तो माणिक्यवाचकर ने यह क्या छाया ? रायसत्ता म प्राप्ति होनी तो गौरम खुद मत्ता का त्याग क्या करता ? ऐसा मिमाले प्राचीन काव में इहा का मवाधान काव में भी ऐसी मिमाल हो रहा है इम तरह मने नववायू की मिमाल देकर उनकी प्रणामा का। त्याग की विधानी प्रणामा अपने एव म धान है।

त्याग की उपेक्षा की दूसरी मिसाल

इसकी और एक मिसाल है। अभी आपने सुना होगा कि रानेन्द्रबाबू ने अपना वेतन कम किया। और अब वे कोई ढाई हजार रुपये ले रहे हैं। गांधीजी ने नाहिर किया था कि पाच सौ रुपया वैसा चाहिए। उस जमाने के पांच सौ रुपये की कीमत आज के ११ हजार रुपया से बहुत ज्यादा है। लेकिन कितने श्रद्धावादी ने इस पर लेख लिखा? मैं पूछना रहता हूँ इसलिए सब श्रद्धावादी तो मेरे पास आ नहीं सकते हैं। लेकिन जहाँ तक मेरा खयाल है विमाने नहीं लिखा। और आजकल श्रद्धावादी में आता क्या है? काइ मिनिस्टर दान की फरारी बालने जाता है और भाषण देता है। वह खबर दो-दो कालम में आता है। हना तो यह चाहिए था कि रानेन्द्रबाबू ने जो यह काम किया उसका खबर देहात-देहान घर घर जाकर दनी चाहिए थी।

सकट चगा रहा है

इस तरह त्याग के लिए जनता आज उन्मत्त है। कनी मुस्ता आज देश में है। और अब आज चीन के साथ सामना करने का मौका आ रहा है। मोमा हमें जगा रही है तो मुझे बड़ी खुशी होती है। अब हिमालय इनकार कर रहा है दोनों पैरों का टाँसे स। इसलिए हम उन्मत्त रहने का नहीं चनेगा। हिमालय कह रहा है हम आपका अलग नहीं रहने देंगे। आपको लडना है तो लडो और खत्म हाना है तो खत्म हो जाओ। पर लोग क्या कहते हैं? कहते हैं कि हम सब एक होकर चान के साथ डटकर मुकाबला करेंगे। एक होने के लिए आपका आपत्ति की जरूरत है क्या? और जब तक आपत्ति नहीं आती है तब तक क्या आप गालियाँ देने रहेंगे? जब सामना करने का मौका आयेगा तो त्याग करना पडेगा। लडाईं में तो बहुत कठिन जीवन रहना है। लेकिन आज हमारा जीवन बहुत साफ—मुनायम—बना है। भाग विलास में पडे है, रात को जागते हैं मुकदम नान-मात आठ-धाठ बने-

उत्पन्न है। घूप नहा सहन कर सकते टड नहीं सहन कर साने बारिड नटा सहन कर साने ऐमी हालत आज है। हम अपना गमा नरम जीवन कायम रखेंगे ता टिक नहा मरेंगे। दूसर हमारा क्या बचाव करेंगे ? क्या आपने यह समझ रखा है कि उधर सना लडती रह और आप भाग बिलाग म पड़े रह, तो आप अपना बचाव कर सर्वेगे ? मुझे तो आनन्द हा रहा है कि मख लाग जरा जायेंगे, त्याग करना सीलेंगे और नरम जीवन नहा बनायेंगे क्यकि सामने एक् सवट सडा है। वह हमें जगा रहा है।

जीवन के लिए समाकरण

जने $H_2 + O =$ पानी यह समीकरण रसायन में आता है वैस हा भेने जीवन का एर समीकरण बनाया है— $t_2 + m_1 =$ जीवन। त्याग जीवन म दो मात्रा में होना चाहिए और भाग एक मात्रा म। तब जायन बनता है। आज तो तीनों मात्राभा म भोग बन रहा है।

वे योगी के समान थे

नाकमाय की स्मृति म आज यह कटा। हमारे सामने उहाने अपना मिमाल पथ को है। वे यागा के समान रहन थे और परमश्वर पर घडा रखने थे। उनका स्मृति में हम यह जीवन का समीकरण आने जावन म लायें।

इन्दोर

—तितक पुण्य तिथि के अघतर पर

गृह-मन्त्रविरा करता चाहिए । यह एक बहुत बड़ा
ने इस नाम दिया है—बोधयन्त परस्परम् ।
ब्रह्मा होनी चाहिए । मैं बोध देता हूँ ता मैं गुरु और
लेकिन कभी आप मुझे बोध देंगे और कभी मैं
। देने हैं और मैं आपका । वहाँ भक्ति-भाग हा गया ।
। है 'अमरु ह्रम गुरा ययन ह्रम'—आत्म में
काम करना चाहिए । फिर सबका सह चिन्त हागा ।
अमर वनता है । हमने माने यह है कि मरा चिन्त
ने है और मैं मानता । इसलिए अमान्य विश्वास है ।

अमान्य विश्वास का बहुत कमी है । गहराई में
गिरा नष्ट की जाता । बुद्ध संघ को जानते हैं
नव इसलिए अमान्य लगते हैं । फलतः बुद्ध गहन
उरे पर गहन हेतु का आरोपण हाता है । विश्वास
० आ० में आमने-सामने टेबल पर बातचीत करने
न अमान्य विश्वास नहा हाता । सामनेवाला किम
के गुरु का अर्थ क्या है ? याने एक शत्रु के सम
और हेतु का आरोपण करते हैं । इससे गुरुजान
वैशाल अधिप करने के अनाय एक-दूसरे को गहन
अमान्य टल गया । शत्रु कहने हैं कि यह ठीक
दूसरे पर आरोपण है कि आपने कारण यह
दूसरे के हेतु पर आरोपण कर रहे हैं ।

१. आमने-सामने यही हालत होनी है—
जो या उद्योग हा, या भूतान-मण्डल
है । २. आरोपण चिन्त वह नहा
। और बाकी के लिए

'समान चित्त'

'एकचित्त बना मह नहा कहा । 'एकचित्त बनेगा तो विविधता का नाश नहीं बनेगा । एकनानज आयेगी । विचार में वृद्धि नहीं होगी । विचार का संपोषण नहा हागा । जो विचार मरा है, बड़ी भाषका हा, तो हम इकट्ठा क्या हागे ? एकचित्त बनेंगे तो विचार और चिन्तन क लिए एकत्र होने का जरूरत नहा रहेगी । दूसरे काम क लिए नले हा इकट्ठा हो । एकचित्त हागा तो समझना चात्रिा कि प्रलय हागा । चिन्तन-प्रलय हागा और चित्त लीन होने पर दुनिया का तोष हागा, लय हागा । साम्यावस्था में पुण प्रिया समाप्त हागी । समान चिन्त की बात भी नहा है । याने किशा एक प्रलय पर सब एक हो गये । एक सामान्य कायक्रम तय किया ता समान चित्त हो गया । लेकिन यह छोटी चीज है । उस प्राप्ता पर ताग एकता करते हैं और उस अमल में लाने की कोशिश करत है । हम भी एलौर में वह काशिश कर रह है । लेकिन एकचित्त याना प्रलय का लक्षण । यह बुरी बात तो नही है लेकिन विज्ञ का प्रलय हागा तो प्रकृति का लय हागा । याने हमारी जीवनचर्या नही रहेगी । यह है एकचित्त और समान चित्त । समान चित्त यानी सबसामान्य कायक्रम, जिसमें सबसाधारण अण समान रहगा । भारत के लिए हम यहा सुझाव दे रहे हैं कि कोइ एसा कामन प्रोग्राम हा जिसमें मिनिमम एक्लिमेंट हा । और बातों में चाहे मुखलिफ राम हा लेकिन कतना एक प्राप्ताम बनाने के लिए हम एक हा जाय नही ता पाटियां नाहक टकराती है । "सलिए "यूनजम साधारण अण समान रह, ऐसा प्रोग्राम करना चाहिए ।

अन्योन्य बोध

'एकचित्त और समान चिन्त स भी भिन्न जा सह चित्त शब्द है बह बहुत जानकार है अच्छा है । उसमें समान चित्त का विरोध नही है लेकिन सहचित्त होना आवश्यक है । आप और हम बार-बार इकट्ठा हात हैं इस तरह सह चिन्तन की प्रक्रिया की जरूरत महसूस होनी चाहिए ।

एक-दूसरे के साथ सना-भाविरा करना चाहिए। सना-भाविरा
 मन्त्र-न्याय है। गीता में इसे नाम दिया है—सहचिन्तमेवम्
 अयोय बाणान का क्रिया होना चाहिए। मैं यह देख रहा हूँ कि—
 प्राप्त गिप्य बनते हैं। लेकिन कभी प्राप्त नहीं हो पाते हैं।
 आपको। आप मुझे बाध देने हैं और मैं आपका। मैं नहीं हूँ।
 कुरान गरीब में प्राप्त है। प्रमत्त हम गुरु बन्धु बन्धु—
 सलाह-भाविरा करने का काम करना चाहिए। मैं नहीं हूँ।
 उमन अनेकविध कार्यक्रम बनता है। मैं नहीं हूँ।
 आप पूरी तरह से जानते हैं और मैं आपका। मैं नहीं हूँ।
 अयोय अरिवास

आज दुनिया में अयोय विश्वास का अर्थ है—
 पत्थर समझने का वाग्वि नहा की जगह। कुछ हर हर—
 कुछ भाग का नहीं जानते इसलिए अज्ञान लागू है। मैं नहीं हूँ।
 जानते हैं और एक-दूसरे पर बतल हेतु का अर्थ है—
 सा बैठते हैं। यू० एन० आ० में धामने-धामने देखते हैं।
 के लिए बैठते हैं। लेकिन अयोय विश्वास नया—
 हेतु से बोनता है, उसके अर्थ का अर्थ क्या है। मैं नहीं हूँ।
 बीस अर्थ निकालते हैं और हेतु का आरोपण करते हैं। मैं नहीं हूँ।
 बनता है और उमसे विश्वास अर्थिक करने का अर्थ है—
 समझ लेते हैं। जिस-सम्मेलन टन गया। दोनों कहते हैं कि—
 नहीं हुआ। दोनों एक-दूसरे पर आरोप करते हैं कि—
 घटना हुई। दोनों एक-दूसरे व हा पर आरोप कर रहे हैं।
 गलतफहमी का अर्थ

इस तरह सारी दुनिया में अज्ञान अर्थिक है। यही अर्थ है—
 चाहे वह कार्पेस हो या धामन हा—
 हा। वहाँ भी परस्पर अर्थिक—
 जानता और उसका हम—

गलतफहमी। घाडा-सा जा समय में आया उसमें ज्यादा अज्ञान लाग
 निया और अनुमान से ज्यादा गलतफहमी हो गयी। इस तरह आशा के
 जरिये समय का न बचाव गलतफहमी ज्यादा बढ़ती है।

समय बरबाद क्यों होता है ?

अभी इन लोगों ने सुनाया कि आधम में दो बार इकट्ठा होना
 चाहिए। मैं इस पर जोर देता हूँ कि कार्यकर्ताओं का एकत्र होना ही
 चाहिए चाहे उनका समय बरबाद ही क्या न हो। समय बरबाद क्यों
 होता है ? एकत्र होने से समय बरबाद नहीं होता। जिस समय मन और
 चित्त में विचार आया वह समय बरबाद हुआ। निर्विकार चित्त है और
 परस्पर निर्माण हो रहा है, उसमें समय जाता नहीं होता। इसलिए बार
 बार एकत्र आने की कोशिश करना चाहिए।

स्वच्छ मन हाकर प्रार्थना

एक दफा मैंने एक विनायक पढ़ी—मिगनरिया के काम के सम्बन्ध
 में। इंग्लैंड में मिगनरी आये और हिन्दुस्तान की अनेक जगहों में उन्होंने
 आइजिल का अनुभव किया। वे बलवत्ता में रहते थे परिवार के साथ
 एकत्र रहते थे। उनका खाना-पीना सब साध होना था। उन्होंने अपना
 एक कमरा बनाया। रविवार में रविवार के दिन सामूहिक प्रार्थना का
 रिवाज है। इसमें वे बोध दिया है जब कभी आप सामूहिक प्रार्थना में
 जाय अपना दिमाग साफ कर लीजिये। जिनके साथ आप प्रार्थना में
 बैठेंगे उनके प्रति मन में दूरी भाव न रहे। तभी प्रभु आपकी प्रार्थना
 सुनेगा और तभी प्रार्थना का प्रयोजन परिणाम आता है। उन लोगों ने तब
 किया कि रविवार के दिन प्रार्थना के लिए जाना है, तो रविवार को एकत्र
 बैठेंगे और एक-दूसरे के लिए मन में जो संकल्प आने होंगे जो वाइ
 दारा हमी, वे सब साधकर रख देंगे। जैसे गंगा पर कपड़ा धोने
 के लिए जाते हैं वे भी मनोमल धोने के लिए एक साथ बैठेंगे और फिर
 स्वच्छ मन हाकर रविवार का प्रार्थना करेंगे। तो ज्यादा-से-ज्यादा एक

'चित्त को धो ल

समान चित्त में एक कौमन प्राप्ति की गुंजाइश है, लेकिन सह चित्त न हा तो काम में जोश नहा प्रायेण। एक दूसरे के लिए मन में अविश्राम हो तो एक-दूसरे का टालने की कोशिश होती है। फिर उसके लिए कार्य-कर्ता को दूसरी जगह पर भेजते हैं। जैसे औरगजेव करता था। एक सारंगर के साथ नहा जमा तो उनका असम भ भेज दिया। आपस में एक-दूसरे के हतु के लिए गलतफहमा न हो, इसलिए कभी-कभी बिना काम के भा मिले और अपने अपने मन में एक-दूसरे के लिए जो दावा है वह साफ कर दें मन को धो लें। हर सप्ताह इस तरह मिलते रहें, झूठा होते रहें। इस हफ्ता का मन इस रूप में खत्म करें। नहा तो वही मेल चित्त पर रहेगा और एक-एक हफ्ते में साफ नहा हागा तो जग मिट्टी का पत्थर बनेगा।

प्राथना के लिए तैयारी

यहां आश्रम बनने जा रहा है। इसलिए यह विचार मने रमा। परस्पर सह चित्त नहीं हागा तो काम नहीं बनेगा। ईसा ने जो प्रार्थना का तरीका बतलाया वह बहुत ही अच्छा है। जैसे हम रमाई की तैयारी विय त्रिना खाने के लिए नहीं बैठते हैं वैसे प्रार्थना के लिए भी तैयारी करनी चाहिए। प्राथना के लिए तैयारी का मतलब यह नहीं कि तबला पेरी तानपूरा लाया जाय। बल्कि प्रार्थना के लिए साफ अच्छा, धोया हुआ चित्त ले जाना चाहिए। गंदा चित्त धाने का काम परमेश्वर को हम न दें। चित्त साफ करने का काम, धाने का काम हमारा ही होगा। इस तरह हम साफ चित्त लेकर प्रार्थना के लिए जायें तभी प्रार्थना का लाभ मिलेगा।

इंदौर

८८ ६०

—प्रार्थना प्रवचन

तुलसी-पुण्यस्मरणा

दो शक्तियाँ

आप और हम यहाँ विनम्र भाव से और भक्तिभाव से महानुभाव तुलसी दास का स्मरण करने बैठे हैं। हिन्दुस्तान पर और दुनिया पर भगवान् की कृपा रही है कि उगने वाच-वाच में राह लिखाने के लिए भूले और भुंके हुए तागा का धर्मपथ पर लाने के लिए महापुरुष की भेजा। ऐसे अनेक महापुरुषों के नाम दुनिया में लावप्रिय हैं। यद्यपि इस वक्त दुनिया में Materialism का यान भौतिकता का बोलवाला है, फिर भी दुनिया के अन्त पर आज भी अमर है, महापुरुषों के बचनों का और उनके जीवन की स्मृति का। यह अमर बचनेवाला हा है घटनेवाला नहा है। जैसे-जैसे भारी ताकत भौतिक शक्तियाँ मनुष्य के हाथ में अधिकाधिक उपलब्ध हुई हैं वैसे वैसे उठनी ही तीव्र आश्चर्यकता मालूम हो रही है आध्यात्मिकता का। आध्यात्मिकता और विज्ञान-शक्ति दोनों मनुष्य-जीवन के लिए आज की स्थिति में बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। जैसे मोटर में रफ्तार की एक मशीन होती है जिससे रफ्तार बढ़ाया या घटायी जा सकती है और मात्र को विज्ञान के लिए और एक यंत्र होता है, जिसमें विज्ञान का बोध होता रहता है। दाना में न एक हा यंत्र हा तो मोटर काम नहा कर सकती। उसी तरह हमारे मन शरीर में भी भगवान् ने दो यंत्र जाड़े हैं। एक को प्राण-शक्ति कहते हैं और दूसरे को बुद्धि-शक्ति। प्राण-शक्ति से हम तरह-तरह के काम करत हैं हमारे काम का बग मिलना है। अगर प्राण शक्ति और मनजार रहा तो हम चत नहा भक्त दौड़ नहीं सकते। तरह-तरह के काम करने में ताकत अपूर्ण पड़ेगा। इसलिए प्राण-शक्ति शान्त हो ..

बुद्धि शक्ति शीघ्र हो ता क्या काम करना चाहिए सूझेगा तब। ये दा
साधन देह-यंत्र के लिए हैं। देह भा भगवान् का पदा बिया हुआ एर यत्र
है अन्तुत यत्र है। यत्र में दो शक्तियाँ—गतिवधक और दिशा-शक्ति
है। एसी दो शक्तियाँ इस दे० में भी है।

विज्ञान-शक्ति

जब मान्त्र के लिए दा यत्र गहरी होते ह, वैस ही समाज धारणा व
निए दो सत्ता को जबरन रही है रहेगी रहती है। एक है—साइन्स या
विज्ञान। जब धरति की खाज नही हुई था, तब रखाई बनाने का पान
नहा था। तब पचनेन्द्रिय कमजोर था दांत दांत पडत थे, घुराफ का
इतजाम नहा था। अब भाप का शक्ति की नयी खोज हुई है। पेट्रोल की
शक्ति का खाज हुई है। दिजलो की शक्ति की खाज हुई है और मान
अणुशक्ति का भी उपयोग मनुष्य के जीवन में बहुत होगा। जीवन का
बाह्य रूप हा यत्र जायगा। अब यह साउडस्पानर है। जब नही था तत्र
इतने लोग था एहेस करना बहुत मुश्किल था बहुत चिन्ता पडता
था। साख-साख लोग हाते थे, तो वित्तना ही चिन्ताओ, काम नहा हो
सकता था। महात्मा मोतम बुद्ध को ३० ३५ साल को पद-यात्रा में जितने
धाता नही मिले हगे उतने धाता मुक्त ६ साल को पद-यात्रा में मिले।
इसमें १ महात्मा बुद्ध की कोइ कमा था न भरा कोई गुण है। यह
साइन्स या गुण है। लेकिन पाँच-पचास लोग ऐस हां मुन रावते थ। उनका
आध्यात्मिक अमर ज्यादा होगा था। ज्यादा लाग हा ता असर भी ज्यादा
ने यह जरुरी नहा है लेकिन अनेक लोगो का सुनाने की यह सहूलियत
साइन्स के कारण मिली है। यह मेरा चरमा न हो तो मैं दूर का नही
देख सकता हूँ और चलना मुश्किल होता है। चरम ने आँखा
को गवजीवन लिया है। ऐसा मिसालें में दोहराऊगा नहा।
दा भी साल पढ़ने जीवा का जो स्वरूप था यह आज नहा रहा। भविष्य
में तो अणुशक्ति का उपयोग गाँव-गाँव में हागा। अणुशक्ति विनेशित
हाली। विज्ञानी अभा उतनी विनेशित नही हा रही है लेकिन अणुशक्ति

गाय-गाय में विकेंद्रित होगी। उस हानत में रखाई या कान धात्र जिना
 का म हो रहा है उममे बुद्ध धामात इण म हो पाया। यहाँ (इन्दौर
 में) १ तारीख से सफाई-मसाह प्रारम्भ हो रहा है। उममें तरह-तरह के
 भाषारों को लेकर मत-मूत्र इत्यादि का सफाई होगा। सोचन २५ वर्षों
 बाद ऐसे झोजार या यन्त्र भावोंगे कि मनुष्य को हाथ से कोई काम करने का
 जरूरत नहीं रहेगी। साद भा यात्रिक हग स हागा सफाई भा यात्रिक
 रंग स हागा। सब कुछ भागतान होगा। धात्र इम भगा-भुक्ति को धान करत
 है—बहु स्वयमेव हा जायगी। भंगी को जरूरत हा नहीं रह जायगा। ये
 सारा सारे विज्ञान में हो रही है और धात्र भी होगी। विज्ञान का प्रक्ति
 मनुष्य के जीवन को बनाती है। उय जीवन का रफ्तार गति बढ़ाती है। म
 धात्र का एव ताकत है जो बहुत व्यापक स्वरूप में प्रकट हा रही है।

आध्यात्मिक शक्ति

रफ्तार का यह शक्ति जितने जार स बढ़ेगी उतना ही जोरदार शिवा
 शिवानेवाला यन्त्र हाना चाहिए वह उतना ही दम हाना चाहिए। बैनगागा
 को धीरे से माड सप्त है। बैनगाडो धीरे धारे जायगा, लेकिन माटर का,
 २०० मील की रफ्तार की भाटर का पीरत माडने के लिए मंत्र नहीं
 रहेगा, ता माटर टकरायगी। रेलवे का इंजन तना स दौड़ रहा है उय
 रोकना है, माडना है वहाँ यन्त्र नहीं होगा तो इंजन गिर जायगा। व-
 शक्ति जितनी जोरदार—उतनी ही जोरदार शिवा शिवानेवाली शक्ति हाना
 चाहिए। जितना जोरदार सांस हागा उतना ही जोरदार आध्यात्मिक
 विचार होना चाहिए। अध्यात्म शिवा दिवायेगा, सादस रफ्तार घनायेगा
 वेग बढ़ायेगा।

धम शिवा शिवा सांस बढ़ना ही रहेगा। विज्ञान-शक्ति इम जनान
 में उत्तरात्तर बढ़ रही है। जहाँ तक में समझ है सादस न यन्त्र
 १० गागा में इतनी प्रगति का है कि पहले के १२०० साल में नहा का।
 जहाँ सांस इतना जोरदार बढ़ा है, वहाँ शिवा शिवानेवाले यय की धयन
 जरूरत है। अध्यात्म की जरूरत जितनी धात्र है उतना

यो । बहुत से लोग कहते हैं कि यह साइन्स का जमाना है, इसमें अध्यात्म की क्या खलेगी ? उसकी क्या जल्दवृत्ति है ? मेडिनि में पूछना चाहता हूँ कि जब साइन्स का जमाना नहो था तब अध्यात्म को कौन पूछता था ? उन समय तो परलोक की बात मोचल थी । लोगों को समझाया जाता था कि अच्छा काम करो तो मरने के बाद स्वर्ग मिलेगा, नहो तो नरक मिलेगा । इस तरह मरने की बात समझाकर लोगों को बिग्री तरह समाज पर रक्ना पन्ना था । यह भा बना सकते थे कि गलत काम कराने, तो यही के महा गलत पत्र पाभोग । आज यह भी यता सचने हैं । आज एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर हमला करेगा तो फौरन दोनों राष्ट्र खतम हो जायेंगे । ऐसा ताकतें जिन्हाल ने मनुष्य के हाथ में दी हैं कि गुस्सा out of state है । शोम क्रोध, द्वेष या व्यक्ति-व्यक्ति के मन में भले चले, उमल नुरमान नही । लेकिन कौर्मा-नौमा के बीच गुस्सा, क्रोध, शोम चलेगा तो मरने के बाद नरक नही—यहा के यही खतम हो जायेंगे । ऐसा प्रयत्न पत्र निम्ना सकते हैं । पुराने जमाने में अध्यात्म को पूछना कौन था ।

तुलसी और शकर

तुलसीदासजी की बात शनाऊ । वे पहले बागी में एक घाट पर रहते थे । वहाँ लोगों ने उनको इतना सनाया कि वे दूसरे घाट पर भाग गये पचगगा से मणिकगिका घाट पर । वहाँ भी लोगों ने उनको बहुत सनाया अन्ग अन्ग पथा के लोगों ने बहुत सनाया । वहाँ से भी भागे दूसरे घाट पर गये । अखिर बहुत सताया तो सब छोडकर जग्री बागी का अखिरी हिस्सा है—दूना-फूटा घाट था, वहाँ भस्मी घाट पर रहे । वहाँ चेत से रहे । वहाँ ज्वाला बस्ती नहीं थी । भान उसके दरिण में सिद्ध विश्वविद्यालय बना है और कुछ बस्ती है । लेकिन उस जमाने में बस्ती नहीं थी । इस तरह उन्हें बहुत तग किया गया । लेकिन आज उनका नाम लेकर भारत से भक्ति से प्यार से मुक जाने हैं । यही हाल कबीर ज्ञानेश्वर नानक, नामदेव का हुआ । अब मैं कितने नाम सूँ । शकराचार्य इनने मन्गन थे लेकिन उनका भी क्या हाल था, उनका जमाने में । उजान

अपनी माँ का वचन लिया था कि एक बार मिनने झाड़गा। सयामी हाने के बाद भा ऐसा वचन लिया था। सयाम की इजाजत लेकर व गये थे और कुछ वर्षों के बाद वहाँ वापस आये तो माँ की मृत्यु का समय था। उस समय उन्होंने माँ के लिए धीकृष्ण का स्तान बनाया। वडा प्रसिद्ध है कृष्णाष्टकम्। वड माँ से बुझाया, माँ को इस्वर का दान हुआ और माना गर गया। अब सवाल आया कि माता का दाह-संस्कार कबे किया जाय ? क्योंकि शकटाचार्य ने ब्रह्मचर्य से ही सयाम लेने का महापातक किया था। याने बीच में गृहस्थाश्रम टालने का महापातक उम जमाने के लागे की शकल था कि अगर सयाम लेना ही है, तो ब्रह्मचर्य म गृहस्थाश्रम उमके आगे वानप्रस्थाश्रम और बाद में मयाम लेना चाहिए। ब्रह्मचर्य से सयाम लेना 'बलिकार्य' है। बलिकार्य माने निषय। वह काय शकटाचार्य ने किया था। इसलिए उनका सामाजिक बन्धकार किया गया। उनकी जाति का नाम नम्बूद्रि था। ऊचा-से ऊचा जाति म स नम्बूद्रि एक जाति था। उम जाति का एक भा मनुष्य माँ का लाग उठाने के लिए नहा आया। अब वहाँ से लाग को उठाकर श्मशान से जाना और वहा दहन करना उनके लिए एक समस्या हो गया इसलिए शकटाचार्य ने तद्वार म माँ की लाग के तीन टुकड़े किये। अब आन देखिये ममान अपने हठ में कहीं तक बड सक्ता है और चुपचाप महापुण्य कहीं तक सहन कर लेते है इसका एक चित्र आपके सामने खटा हाता है। एक-एक टुकडा लेकर शकटाचार्य ने माँ का दहन किया। एक-एक टुकडा अलग अलग जलाया। इसके बाद शकटाचार्य इनने महान् शा गये कि नम्बूद्रि जाति में यह विधि ही है कि मरने के बाद लाग श्मशान में ले जाते है ता लाग पर तीन बाल निगान किये जाते है। शकटाचार्य को माँ की लाग के टुकड़े करने पड़े—उसके स्मरण के लिए उनके आन्तर के लिए यह किया जाता है। इतना आन्तर आत्र उनके बार में वहाँ है। पर जब वे जिन्या थे तब आदर का सवाल नहा था। मरने के बाद दाना आन्तर हुआ।

विज्ञान अध्यात्म विद्या की तरफ शीघ्र रहा ॥

साराण पुराने जमाने में अध्यात्मिक विद्या का तब मिर पर उगान के ऐमा मानने का कोई कारण नहीं है। मन्त्रमा गौतम ब्रह्म का वस्तु करने की इच्छा रखनेवाला मनुष्य निकला था। भगवान् ब्रह्म पर निगुणात्मा ने आक्रमण किया था वह जागिर है। इगणिए आज का मानने की बाद जल्द नहीं है कि पुराने जमाने में अध्यात्म-विद्या की कुर ज्याग था। वल्लि मममता चणिए कि आज दुनिया म किण हिन्दुस्तान म ही नहीं जितनी उमकी कुर ॥ उतनी पट्टी काग नगी थी। साइन्स हा धीरे धीरे स्वयमेव अध्यात्म विद्या की धार दीडा जा रग ॥, वता जा रहा है। और सारी दुनिया में चतन भरा है, एसी गका मान्य का हो रही है। साइन्स बडा उन्न होता है। किसी चीज का फसला आग्रहपूर्वक नहीं देना। साइन्स निरोधरवाणी की तरफ नहीं बावता। साइन्स बटना है कि श्वर गाय होग, सायन नहा हागा। अभी तर हमारी ध्या में श्वका निश्चय नहीं हुआ है। साइन्स न कभी आस्तिक और न कभी नास्तिक। जिन हम जा बहत हैं यह जड नहीं बकि मुक्त चेतन गायो हुआ चेतन है। एव मुक्त चेतन है दूगरा जाग्रत चेतन है। मान नीजिय कोई गणितन साया है। साने पर उसरा ज्ञान क्षतम नहा हुआ। वह ज्ञान मुक्त है। जागने पर प्रकट होगा। उमी तरफ यह सम्भा ॥। उममें गरगिह भरा है। आगको कहाना मानूम है। प्रह्लाद ने सम्भे पर ज्ञान मागे ता चतन-स्वरूप प्रवण। साइन्स अभी सात मार रहा है सम्भे पर और उसे आभास हा रहा है कि शायद उस सम्भ में मे चतन्य निकलेगा। सारी दुनिया चेतनमय हा मक्ती है एसी गका उसे है। पटन गका ही हागी है, उसके बाण खान होती है और उमक बाण प्राप्ति हाती है। साइन्स भी धीरे धीरे आगे बढकर अध्यात्म के साथ मित जायगा और दोना एतन हो जायगे ऐसा दिन नजदीक आ रग है।

अध्यात्म को मँभालें

आज अध्यात्म की उन्नत है, क्यकि मान्य का बहुत भारी तावत

मनुष्य के हाथ में आ गयी है। मानव का वग बढ़ रहा है। वह मनुष्य
 दिग्ग में जायगा ता नृमगत योग, इसी विज मनुष्य को होना
 चाहिए। धार मानव न हाइने। जिसमें न मह अच-रिचा विजना
 अध्यात्म विद्या निवनी उम भारतवाय मध्वृति को गैमार्गे तो धार नुनिय
 का बचानेवाये ङगे और धारकी नुनिया को बचाने का भाष्य प्राप्त होगा।
 लेकिन धार अध्यात्म को गैमार्गे। वह बहुत बड़ी विरासत है। उम धार
 मर्मात् तो मागी दुनिया का दाभ हागा। नुनिया सामान्वित होने व लिए
 सान पाने के लिए भारत का धार प्च रहा है। जिनना हम पश्चिम का
 तरफ दान है न्यव सा-स से प्रभावित हाकर उाना ही व भारत का
 धार दान है। राजनतिक धार्थिक और सामाजिक ममने नुनिया का वग
 वर रह है। गालिग बाद अध्यात्मिक उजरीत्र तरवार भारत उद
 निकालेगा दग दृष्टि म अध्यात्मिक हाकर नुनिया के लाग भारत की तरफ
 प्चत है। नुनिया व लाग हमारे पास धार है। गाय हा बाद राष्ट्र होगा
 जिसक लाग न धार्ये क्ष। व हमार पास रहते है देवत हैं और धरन दग
 में जाकर बहते है कि भारत में नया हा आविषार हा रहा है। क्या हा
 रहा है ? दान प्रेम म मांगा जा रहा है और प्रेम से निया जा रहा है।
 एक अनीव वान सगनी है उनका। लाग मुभ्य पूछते है कि धारने कितना
 काम किया ? मे कहता हूँ कि ६ लाख एकड़ जमीन बंग है ज्याग ता
 नटा हुमा। लेकिन वान है कि उचका दितुम्मान का लाग हुमा है—हमारे
 दगों का क्या पापना हुमा है ? अमरिका और योरप का क्या लाभ हुमा
 है ? लेकिन वही क लाग प्रभावित हाते है क्यकि मणल हल करने का
 कुजा गय में आ रहा है और यह ऐसी कुजी है कि इसम दुनिया व मसने
 हल हो सकत है। इसलिय व मीग धारत है कि हमें गय मिने और गालि
 स ममने हा करने की कुजी हाय सगे, ऐसा के मोचते है। धार नुनिया
 आदि आदि वर रहा है और दुनिया में न्य वच धारति को बहुत ध्यान
 है। नसलिए दुनिया व कुन नैगों में अध्यात्म का तरफ धार जिनना
 भुक्तान है उनना पहले कभी नही था। इसलिय गलतफुटी न ~ ~ ~ ~

आत्म बड़ रहा है तरह-तरह की मशीनें बन रही हैं, तो अध्यात्म की या चलेगी ? एक लाख लोगों ने हमें दान दिया । हम ममभक्ते हैं कि उनमें प्रवाहगतिन दान हुए होंगे लेकिन जमीन का दुकड़ा, जो बहुत प्यारा गता है वह भा एकाध लाख ने दिया हा ता भा अध्यात्म गति उममें है । आज भी मैं आपसे पूछना चाहता हूँ हिन्दीभाषा स और मराठीभाषा स, तुलसी रामायण और ज्ञानेश्वरी की बराबरी की कौन कितना छपती है ? बलाये, है काइ दूसरा नाम ? छपाई का मगाने आयी है—यह सङ्कलित है । सबडों नयी-नयी कितने कितनी जा रही है तो जान का प्रचार खूब गीत्रता से होना चाहिए । लेकिन नहा हा रहा है । पहले मुग्ग यत्र नही था, तो पाठ-भेद रहने से गन्त प्रतियां भी फलनी था गन्त प्रचार और प्रचार भी होना था । आज ता हमने प्रिण्टिंग प्रेम निकाना है—यह सङ्कलित है । सङ्कलित होने पर भा १०० साली मे हिन्दुस्तान की १५ भाषाभा म म जानता है ऐमा कोई नया ग्रन्थ निर्माण नही हुआ, जा निर कुरन ग्रन्थ माह्व, तुलसी रामायण या ज्ञानेश्वरी का बराबरा खगठ में करे । अगर मनुष्य का मन अध्यात्म का दृष्टि म परान्त हुआ हागा, ता इन ग्रन्था की आज कतनी खपत क्या होती है ? दूसरी क्या नही खपता ? इसका कारण क्या है ? लाखों की तागद में धार्मिक कितने बिर जाती है । आज बाइबिल कुरान शरीफ पम्पपद से ग्रन्थ जितने छपने हैं उननी काइ कितना भारत में खपती नहा दुनिया में भा नहा खपता । अत सम भजा चाहिए कि अध्यात्म गति जोरदार है । मरा पत्र-व्यवहार हिन्दुस्तान के हर प्रांत से चलता है । उगमें कितने ही पत्र ऐसे आध्यात्मिक धाने हैं भागदान चाहनेवाक—तात्र भाय से, सवेदनामुक्त, त्याग करने की तल्प रजा दिखानेवाके, इस तालीम से उत्रे हुए कर्तव्य के विद्याधिया के पत्र । भारत की यह जाप्रति मे जानता हूँ । मैं जितना भारत को जानता हूँ, उतना और कोई नही जानता—यह मेरा assessment है फसना है । भारत म अध्यात्म-गति खूब जोर स जाय रही है ।

तुलसी रामायण की विशेषता

रार पढ़ कि तुलसीगसजा के जमाने का अयेगा आज अध्यात्म की

ज्याग जखरत है । एसनिए तुलसी रामायण पहले करती थी उसने ज्याग काम धाज करेगी । पुराने ग्रथ का थोडा परिष्कार करने की जरूरत हाती है । मलिनता छापी है ता धोना पडता है थोडा सजाधन जरूरी हाता है । बाभीकि रामायण का भी तुलसीदास ने अनुबा नही किया मसाधन ही किया । दाना की तुलना करा, ता भाखूम होगा कि तुलसी रामायण बाभीकि रामायण का न तजुमा है न सभेय वह सजाधन ही है और वह हिम्मत के साथ किया है अपने बाप की विरासत ममभरर । बाप क मकान में खिडकी नही है ता अपनी दृष्टि से उतनी खिडकी बाा ली । बाभीकि-रामायण में अपना दृष्टि से तुलसीदासजी ने जहाँ जरूरत माखूम हुई वहाँ सजाधन किया । बस हमें भी तुलसी रामायण का सजाधन करना होगा । उसम तुलसीदासजी के प्रति धारर कम नहा होगा । सजाधित तुलसी रामायण पुराने जमाने में ज्याग काम करेगी । वह पढ़ने उत्तर हिन्दुस्तान तक सीमित था श्व बट दक्षिण में भी पलेगा ।

जेल में मेरे साथ भारलन कुमारणा थे । वे मेरे पास हिंदी सीखने के लिए आये । उनकी मानुभाषा तमिन थी । उने के भूल गये थे । अरेजी में उनका कारोबार बनता था । मैंने उन्हें हिंदी सिखाने के लिए तुलसी रामायण दी । पहले ही व्याख्यान में उनका कहा कि बाबदिल और शेकस्पियर इकट्ठा करेंगे, तो बनेगा तुलसीदास । तो वे एक्दम चौकता हा गये और कहने लगे ' एक वाक्य में तुल सार आपने बता लिया कि तुलसी रामायण क्या जादू करता है और लोक-मानस पर उसका रतना प्रभावक्यों है इसका पता मुझे धाज चला ! आज बाबदिल का प्रभाव खून है । उसकी भाषा अखन मधुर और सरल है । शेकस्पियर तो महान् कवि हा गया । वह अद्वितीय साहित्यिक था । दोना तुलसीदास में है थं जब मैं कहता हूँ तो इससे बकर तुलसी रामायण का कोई बखान नहा हा सकता । एक जमाने में मैंने कहा था कि तुलसी-महोत्सव का ठीका साहित्यिका का हो द्ये में पमद नहा करता । वह उनका ही हक नहा है उनका भी है । साहित्यिक तुलसी-महोत्सव करते है वह तरह-तरह का

कविता करते हैं, ध्यान करते हैं—जैसे कवि-सम्मेलन में होता है। लेकिन मे कहना चाहता हूँ कि तुलसीदासजी मिराँ साहित्यिक नहीं थे वे लिखते नहीं लिखे हात, तो धाम आता था साधन नहीं और जो हैसियत तुलसी रामायण को प्रतिष्ठित है वह न होगी।

श्रद्धानन्द का श्रद्धा

एक विस्मय मुनाऊ। स्वामी श्रद्धानन्दजी ने धरना धरिण किया है उनका नाम है 'कल्याण-मार्ग का पथिक'। स्वामी श्रद्धानन्द भाय समाज का पद्धति में पले हुए थे। भाय समाज में बहुत गुणा के साधनाय धर्म-धर्म है या ग्रह है, जो भा कदिय—उस साधकियों में हान है कर्म-निरता में हात है अथ प्रामाण्यता हाता है ऐसा उगमें ना हाता है स्वामी दयानन्द ने प्रामाण्य प्रथा का एक सूची बनायी है और न पन्नेवाले श्रद्धो की सूची में उन्हाते तुलसी रामायण का नाम लिखा है। वे बहुत बड़े मुयारत थे और मुयारत के ख्याल से ही श्रद्धा का दलत थे। मोटा कमी ली तो उगमें तुलसी रामायण का नाम लिखा। अब तुलसीदास का नाम बडा है, स्वामी दयानन्द भी महान्, तुलसीदास भी महान् और भाय और हय भी ऐसे महान् कि जो दाना का हजम करते हैं। एक बेराश्टी घो है। हिन्दुस्तान में एक बेराश्टी गा है। उस परम्परा में स्वामी श्रद्धानन्द ध्यान है। उन्होंने अपना कहना लिखी है। उनमें अपने पिता के बारे में एक जगह लिखा है कि पिताजी न्यायाधीन थे। उनसे पाय चारों के मुकाम आते थे। त्रिन पर चारी का धारण आता था, उनसे वे कहते थे कि तुलसी रामायण को हाथ में लेकर कहो कि तुमने चोरी की है या नहीं? वह उग्य हाथ में तुलसी रामायण लेकर कता था कि 'जी हाँ मैंने चोरी की है।' और एक श्रद्धा का नाम स्वामी दयानन्द ने न पढ़नेवाले श्रद्धो की सूची में रखा। श्रद्धानन्दजी की राय बेसी नहीं थी।

तुलसी पत्तियों के प्रतिनिधि

प्रथा में कुछ बातें देखी जाती हैं जिनकी भाय जहरत न समझते

हा। उनमें मुवाक का गुजाइय हाथी है। लेकिन उनका हंग अग्रमाण्डल न भायें। हम उनका परिष्कार कर सनन ह उन्हें परिष्कृत कर सका ह। तुलसी रामायण में यह सूची है। महात्मा गांधी का बात, अत्यन्त गरावा के साथ नवा त्रिण एकत्रण हा गया था। व अग्रण का दक्षिण-नारायण के प्रतिनिधि मानन थे और व थे। दक्षिण वी दुनिया का बात नके हृदय में उठना था। उगी तरह से तुलसीगणम पतिना व प्रतिनिधि थे सिर्फ अरिना के नहा। पानियों में गिरामणि मै हैं— इस तरह अग्रने को वे पतिना के प्रतिनिधि मानन थे। कनियुग का वर्णन उठाने किया जो जनमे कलिकाव करसा। करतब बापस भेष मराना ॥ जो करान कनियुग में विषम कनियुग में जनमे है त्रिनव आवरण ता कौर के समान हैं और भय है हम व समान। 'घलत कुप य बड़ मग छाड़ —के' के समाग का छाँडर नुनय पर चल रह है, पुमायें पर चल रहे हैं। 'बपट बलेखर कलिमत भाड़ि'—बपट की मूनि है, कनेखर कलिमत स भरे हुए हैं। बघव भगत कहाइ राम के'—व राम के भगत कहनाल है—नाक मिथ्या। 'किकर कवन कोह काम व —पाने कंचन के का' व माने मोघ के और माह व धाम है। यह मारा धगन कलियुग के पतिना का पापा पामर जाया का है। और वा में क्या निखते हैं 'तिन मह रेख प्रथम जग भोरी—तेन लागे म मरा नाम पहना है। वाका के नाम पीछे। कनियुग के दामिना का वर्णन हम भा करते हैं लेकिन हम कहत है 'तुम दागी तुम दोषी हा।' दूसरे के दोषा का निरान इस जमाने में जिनना होता है उतना पाने नहा होना था। किसी भी अवसर का पना सालिये दूसरे के दापा का बनावर दाप न हाता निखावर रुचिपूर्वक वर्णन करते हैं। लेकिन तुलसीगणम ने जा धम की धजा उठानेवाले थे अपने को पतिना का प्रतिनिधि माना और अपना धिक्कार किया है और इसलिए वे भुक्त गये। मार समाज का उरधान करने व लिए सब प्रकार के अवकार का छाड़कर वे भुक्त गय मार एगी भापा निखा। 'बिन्दु गिरामणि' हाकर

ऐसी भाषा लिखी—जागबलाक—कोई राहूत करेया सख्युत जानने
 क्या ? क्या 'भाषा-लय लिखना चाहिए। अब सांगो को व्याकरण
 मिराना है कि धर्म मिसाना है ? जिन धर्मों का सांग उच्चारण भी नहा
 कर सकन, उनके लिए उहाने सरन भाषा लिखा और ये कहते हैं कि बहुत
 बड़े प्रयास का प्रमाण लेकर मैं लिख रहा हूँ। धरम न धरम न काम रबि'
 धर्म नहीं कहते, 'धरम कहत है अथ नहीं कत, धरम कत है, निर्वाण
 नहा कहत, 'निरवान' कहत हैं।

युवाकर तोडकर धाम समाज समझ सक' वनी भाषा लिखा। धाम
 नहा निखेण धामरम निखेण। इतनी नम्रता थी और ऐसे भुक्त न्य,
 समाज को ऊपर उठाने के लिए 'गो माँ कर्णो को उठाने के लिए भुक्ती
 है। पत्तियों के प्रतिनिधि बनकर, उनके हृदय के साथ एकत्र हो गये।
 उहाने कोई काव्य नहीं लिखा। अन्तर का भावना लिखा। उहाने कहा
 कि ऊपर ऊपर से मैं देखता हूँ लेकिन भगवान् के सामने मैं अपने का दागी
 पाता हूँ। यह वृत्ति अन्तयाम में धाडा भी दाप हो वा उग बहा करक
 दखने का है। सामान्य पत्तिया के साथ अत्यन्त एकत्र हो गये। इसीलिए
 सारा हिन्दुस्तान उनके नाम से गद्गद हाता है। महात्मा बुद्ध के वा
 हिन्दुस्तान में इतना महान् कोई हुआ नहीं। तुलसीदास के समान इतना
 बग कोई हुआ नह—विलकुल धाम लोगो के साथ एकरूप होनेवाला
 अत्यन्त क्षमाशील परम नम्र अन्तर से ही अपने को नीच-से-नीच मानने
 वाला, अन्कार के दौर पर नहा पर अपने को पापी समझनेवाला। राम
 नाम की महिमा बणन करते हैं, राम-नाम से पत्थर तर गये बट तर गया,
 बह तर गया। ऐसे उदाहरण अनेक दिये और आखिर में धाम

नाम राम की कल्पतरु कलि कल्याण निधामु।

ओ सुमिरत भयो माँग लें तुपसी तुलसीवासु ॥

जिस नाम के स्मरण से, माँग से ही मुक्तता पदा होता है। रामजी के
 अत्यन्त पापा में से भक्त बनाया। इस तरह का वर्णन किया—राम-नाम
 की महिमा बणन की अपने स्थानुभव की।

आम जनता के लिए धर्म ग्रन्थ

तुलसीदास ने भारत के बचाने का काम किया। पत्राग राजा महा राजाओं ने प्रयत्न करके भी जितना मन बचाया राम-नाम का मन ने भी जितना मन बचाया उनका तुलसीदास के मन ग्रन्थ ने बचाया। हमारे सब ग्रन्थ मस्त्रन में हैं - गीता रामायण भागवत महाभारत। वह प्राचीन में लामे और एक धर्म-ग्रन्थ आम जनता के लिए किया। धर्म-ग्रन्थ में जितना नीति-शास्त्र सत्सुखों या बुराओं का एक भय नस्त्रान का भय भगवान् का भक्ति का भय विधि-निषेध का भय इत्यादि मारा सम्मिलित होता है, सब धर्म-ग्रन्थ बनता है। यह सब सब अर्थों का ग्रन्थ मन्ता हुआ धर्म सत्त्वान का भाव्य से नही होता। ब्रह्मसूत्र अथवा तत्त्वज्ञान का ग्रन्थ है, लेकिन वह धर्म-ग्रन्थ नहीं है मन्ता है। गाथा और कथा जितना ही मन्ता है, उनका धर्म-ग्रन्थ नहीं बन सकता। लेकिन इन सबका रसायन बनकर सावनाम्य और सावप्रिय की तरकीब जहाँ हो सकेगा वहाँ धर्म-ग्रन्थ बनता है। ऐसा धर्म-ग्रन्थ तुलसीदासजी ने किया। यह नहीं कि हिन्दुस्तान उसके पहले अन्ने किनास नहीं था पुस्तकवाना नही था। हिन्दुस्तान १० मन्त्र सात म अन्त्र किनास है धर्म-ग्रन्थवाला है। वे म वेकर धर्म-ग्रन्थ लिखे लेकिन आम सागा की भाषा मन्त्र नहीं रही लिखी आयी। तो उनका भाषा में धर्म-ग्रन्थ नहीं रहा। वह पैदा किया। यह उनका विशेषता है। उसे जरा इधर-उधर साफ करने की जरूरत है।

ममह की श्रुति

उस तरह मन्ता गाधी ने जो कि तुलसीदास के परममन्त्र य रामनाम के भक्त थे तुलसीदास रामायण के भक्त थे ध्यान लिखाया— ब्रह्म गन्धार गुरु पग नारी। ये सब साधन के अधिकारी जसी उक्ति का तरह ध्यान लिखाया। ऐसी बातें मन्त्र नहीं मानने हैं। हम भक्ति का भय लेते हैं—म तरह का भय हम नहीं लेते हैं—एसा महात्मा गाधी ने कहा। यह ठीक है लेकिन तुलसीदास रामायण के बारे में सोचते हुए जरा साधन का फायदा तुलसीदास की श्रुति चाहिए। आज माय विधान का तत्त्व है

'मुजरिम का संग्रह का लाभ देना चाहिए। तुलसीदास महान् थे, उन्होंने हमारे बचपन के लिए किया है साहित्य पर हमारा ध्यान है, उन विषय में गणों पर मोचना चाहिए कि तुलसीदास को संग्रह का फायदा मिले। यह कानून कौन बना रहा है? कौन बाल रहा है यह? गवरा के रचना रावण के बड़ा कुम्भकर्ण के बचन क्या रामायण को? मैं तो जड़ समुद्र बाल रहा हूँ। समुद्र ने रामजी को रासना नहीं दिया था, जो समुद्र के किनारे बैंगर रामजी ने तपस्या का उपाग विषय किम पर भी राम ने रासना नहीं किया ता रामजी से धनु उग्रया। फिर समुद्र घबराया और पबगर कर दो तगा 'हम मूरख हैं हम नहीं समझते हैं, हमें क्षमा न। है। इसलिए 'ढांच गेंवार सूद पानु मारी। ये सब साधन के अधिकारी कहर धाना गिनती समुद्र गेंवार में कर रहा है। हम गेंवार हैं नाशयन हैं ताइन के अधिकारी हैं हमें माग दिलाइय। यह तुलसीदासजी को उक्ति नटा है का जड़ जलधि की है। इसलिए तुलसीदास का संग्रह का फायदा देना हागा। ऐसी धोख उठिया होगी उसमें संग्रह का फायदा हम दते हैं, सा तुलसीदास निर्णय साबित होंगे। किम पर भा एग बचा भिना है जिहू छोड़ना होगा।

जमाया किसका ?

आप बन्दी शक्ति से मुक्त रह रहे हैं। हमारा जिन तुलसीदास को भक्ति में भरा है। हमने तुलसी रामायण का पाठ कई बार किया है। पाठ के लिए नहा जिनता के लिए मनन के लिए किया है। एकाया भी है। वह पीछे हमारे दिता को छूनी है और आपने यह मोका हमको दिया है, पवित्र पुष्य स्मृति को अढाजलि प्रणाम का इसी वडा उपकार मानते हैं।

किया। हम गण में बह
या उतना उहूँ ।
समय घबरेर
बंवर

ने मित्रता है। उन महान् राजा के राज्य में तुलसीजी लगे हुए। लेकिन तुलसीजी ने उस वक्त की जनता का जो ध्यान किया है उसमें उन्होंने अपना कुछ प्रकृत किया है समाज गगन गिर रहा है सब नाम घनाम बुद्धि हो गये हैं। साधु का उद्योग नहीं हो रहा है, परस्पर मेल जान संस्कार नगै। नाम गुना नगै है। हम तरह तुलसीजी ने समाज की पतितायस्था का वर्णन किया है। क्या कारण है कि तुलसीजी का ऐसा ध्यान धक्कर जैसे बड़े राजा का प्रजा का हा ? इसलिए मैं कहता हूँ कि राजा-महाराजा शिवामन या सरकार बरगा का क्या करोगी ? भोक्ति अन्तजाम अक्षय बरगो लखिन आध्यात्मिक विकास करोगी ? नदी बर सरना। मन्थुगा का नहा बना स्वता। जवाहरालाभा का सरकार है। मैं मानता हूँ कि सरकार का धर्म में जवाहरालाभा की गिनती आने का तुलसीजी करेगा। व महान् राज्यका उत्तम विचारक है प्रजा जीवन के बार में जिनके हृदय में सीगा है। ऐस महान् के हाथ में १२ मान में लोकी बागदोर है। किन्ता उद्वान हुआ है देश का ? रामजी का राज्य ध्यान माना जाता है। उसमें प्रजा का हानत क्या था। मानाजा रावण के घर में सीगा, तब एव लिये हुआ है तिस पर भी रामजी का प्रजा में माताजी के बार में उनका अस्थि पर गवा लानेवाणी चबा हाती थी। रामजी की प्रजा में सीगा के चारिष्य पर गवा बहुत अनीय धान उगना है। माना याने परम ध्यान पतिप्रता और पतिप्रता का। उद्योग धक्कर धारणा नहा हा सकता। लखिन उस पर गवा करनवाने रामजी का प्रजा में धे इसके माने क्या है ? साराज समझने का उद्वान है कि बंबल राजा या राजमता जनता का उद्वान नहीं कर सकता है। राजमता धारिता कर सकता ता गौनम बुद्ध के हाथ में राम्य या उमने क्या लोका ? क्या बह वेवकूप या ? आज हम चाहते हैं कि हम इनके हाथ जा उछा सा यज्ञ साचता है। लखिन अनेक हानत क्या करत ह ? क्या धन जान है। एक मंगान के पुत्रे धन जात है। धारिता राम्य में पतिप्रता हा और जनता के उद्वान के निता क्या किया, ता कहने है, धर

उभय बनाया, उधर पुन बनाया। लेकिन राज दृश्य को स्फूर्ति देने के लिए नागा की मुक्ति करने के लिए उनका उत्थान के लिए क्या काम किया? क्या नागा में परस्पर सहयोग हुआ? यह सवाल है कि घोडा मुग बना था नाग धार्मिक मुधार हुआ, लेकिन नतिक उत्थान नहीं हुआ। राजमता के हानि के नतिक उत्थान नामुमकिन है। अखबर उस के साथ में सबसे अच्छी तरह से इतजाम होने के बाद ही तुलसीनामों ने समाज अवस्था का जो वर्णन किया है प्रजा का जो वर्णन किया है वह बताता है कि समाज गिरा हुआ था। उमर हमका सबसे सेना पालिका। तुलसीनामों समाज के लिए मागलिक थे अखबर नहीं तो सकता था। इसलिए अखबर के जमाने में तुलसीनाम हो गये यह गलत निष्ठा है। वास्तुतः इतकि अखबर महान् था—मरा सलाम है अखबर का स्मृति का—लेकिन जमाना अखबर का नही था, तुलसीनाम का था। आज के इतिहासकार ऐसा नहीं लिखते हैं। तरह-तथा सदा में काफ मगलु थे विद्यारथ्य और उधर सामन्त पञ्चाय में काम करत थे। लेकिन आज के इतिहासकार राजाओं के नाम लिखत है और लिखत है कि पञ्चाने राजा हुए पञ्चाने राजा हुए। यही तक है कि पण्डित मेहरू ने दुनिया का इतिहास लिखा है—बल्कि अच्छा तरह से लिखा है—लेकिन उममें वावर के नाम पर पाँच-छम पत्र है और तुलसीनाम के बारे में दो चार शब्दों में ही लिखा है। मे कोई टाका नहीं कर रहा हूँ। यह एक वृत्ति है। ऊपर-ऊपर में हम देखते हैं। शीघ्रता है कि अखबर का जमाना था, लेकिन अखबर का अन्त समाज पर था? समाज पर अन्त तुलसीनाम का था। ऐसे कितने ही राजा हाने प्रजा उनको भूल गयी है। लेकिन आज भी शबौर नानक नामनेय का अन्त छोपा के दिन पर है। पञ्चाय में गया था तो नानक का नाम सुनना था। कश्मीर में गया था तो वहाँ एक महान् आभयानी का नाम मैंने सुना। कश्मीर का यह राजा प्रेष्ठ नाम मुझे पहचाने मागुम नग था। जब सम्प्रदाय की एक यागिनी हा गयी। इत वन रहती थी। कश्मीर में नभ रत्ना मामला बोल रहा है। यह

तो छद्म-छद्म महान धर्म रत्ना है। उस स्त्री का नाम था रत्ना। भाज
भा बामौर व हिन्दू और मुसलमान जा हिन्दू धर्म से हा मुसलमान बने
हैं वे रत्ना व गाने गाने हैं। वे कहत हैं कि बामौर को दा हा नाम
मातूम हैं—एक अन्ता और दूसरा सल्ला। दूसर राजा का नाम मातूम
नहा। लेकिन इन तिनो इतिहास म राजा व नाम रहत हैं। राजाका का
मातूम था कि हम जिनो महा रहनेवाले हैं याने हमार नाम नहा रहनेवाले
है। अन्ति ए इतिहास म बच्चा ग रहवान है।

दिन्ता न ४० मीन दूर पर भवो का बगाने का काम में करता था।
उम वक्त एव मन्जिर में लडा हावर में बात रहा था। या हा अक्षर
बादशाह की मियात दी। मुसलमाना का समा थी। मुझे सहज लगा कि
जरा पृच्छ ता कि अक्षर बादशाह का जानने हा ? रत्ना में भाये हुए लाग
ने बताया कि अक्षर राजा कीन था उन्हें मातूम नहा। बाबजू इस
कि बादशाह म अक्षर और नन्दिया में गगा यहाँ सब आदर है। लेकिन
वहाँ व मुसलमान नग जानन थे कि अक्षर राजा कीन था। व अक्षर
का जानन थे। मैने पूछा कि क्या अक्षर का नाम नग सुना ? ता याने
सुना है अन्ता हा अक्षर—अन्ता हो अक्षर। अक्षर बादशाह सतम।
अन्ता भाग में अक्षर का अर्थ जाना है सबन बदा। उम सतने बड़े
अन्ता का व जानन थे लेकिन अक्षर बादशाह को वे लोग नहा जाते
थे। अन्तुस्तान में हिन्दू लाग एक ही राजा का जानते हैं—राजा राम।
लाग का अन्ता की नामारला मातूम है। पञ्च में ८ माह में पूमा।
वहाँ लाग व मुँह पर एक हा नाम सुना—गुरु नानक का। मीर
तुलसीदास महावीर महात्मा बुद्ध, ज्ञानदेव नामदेव पुराण गहर,
रामानुज—यंग है पावन नामावना—यहा तारक है। ऐसे महान् का नाम लेने
व तिन आने मुझे बुनाया द्यने तिम में आत्को धमवाद देना है।

गलत मूल्यांकन

दोयम दर्जे की सेवाएँ

हम मूल्य परिवर्तन चाहते हैं। मूल्य-परिवर्तन की न सोचकर आज समाज में जा मूल्य कायम माने गये हैं। उनके आधार पर तो सवा होजा है यह समाज की मजदूरी जरूर है लेकिन हम उन गौण मानते हैं। वैसी मजदूरी से समाज चलता है वैसी सेवाएँ न हों तो समाज का विच्छेद हो जायगा। लेकिन बसी सेवाएँ का हम अपने विचार के निहाय से दायम दर्जे की मानते हैं।

हम मूल्य बदलना चाहते हैं।

हम कुछ मूल्य को बदलना चाहते हैं। मिसाल के तौर पर, चोरी नहीं होनी चाहिए। क्या हम इस मूल्य का महा मानते ? यह मूल्य हमका माय है, लेकिन चार का दण्ड कसे दिया जाय ? दण्ड से चार का सुधार होगा चाहिए न कि उसे मजा मिले। यह हम बदलना चाहेंगे। लेकिन विनोद परिस्थिति में चोरी होगी एसा हम नहीं कहेंगे। हम कहेंगे कि चोरी गलत है।

चाही गलत, सगल भी गलत

आज हम एक आपूर्व के बगीचे में गये थे। वहाँ के पीछे वैद्यजी ने मुझे दिखाये। एक-एक पीछा बड़ा आत्मत्वयुक्ति से लगाया गया था। उनकी बान मुनकर और पीछा लेखकर आनन्द हाता था। उनमें एक पीछा विनोद विरम का था। वह पीछा लिखकर उन्होंने कहा कि इसका अपहरण का डर रहता है। उठाने चोरी करने न इतना न करके अपहरण गलत का

कसा विलक्षण लगेगा ? सग्रह के बारे में जिनका सबसे ज्यादा सीधे मत है और जो लेबलिग करने के सवसे ज्यादा प्रमी है, वे कम्युनिस्ट भी ता य न्ना मानेंगे। उनमें पूछा जाय तो व भी इससे ज्यादा ही मर्यादा कहेंगे। पर मनु ने ऐसा कहा। अर्थात् सतो ने या ऋषि-मुनियों ने यह कहा होता तो उनको मना वा या ऋषियों का अपना मान लेन और जचना ता मानते नहा ता नगी। लेकिन मनु कोई मत नहा था। मनु तो उस जमाने का Law Giver था। अर्थात् यह सामाजिक कानून था। मतलब यन् दि उसल ज्यादा सग्रह हो तो सरकार उसका जल्द कर सकती है। या फिर कभी-कभी डाकू भी सृज लेन है। मान लाजिब, किमाके पाम ज्यादा सग्रह है और डाकू ने उस सूर्यरिया और करावा म दौन लिया।

गेम डाकू होने है। अभी चम्बन क्षेत्र स में आया हूँ। वहाँ जो डाकू हुए उनमें ऐस भी हुए जिन्होंने गरीबों को नहा लूटा क्रिया पर वना-त्कार नही किया धनवाना स लूटकर करावा म बाँटा या मन्दिर बनवाया, धर्मशास्त्र बनवायो। एक गाँव म एक भाई बताने थे कि देखो, यह मन्दिर मानसिंह डाकू ने बनवाया था। ऐस गाँव की भी जनता म एक इजत होनी है क्योंकि जनता के दिल म एक हृद स ज्यादा सग्रह के विरुद्ध एक अभिप्राय शूदा है लेकिन वह अन्दर अन्दर हाता है। हम चाहत है कि एव एसा जागृक लाकमन होना चाहिये कि हमसे ज्यादा सग्रह पाप है। भारतकन सारिय (Ceiling) की बात चलती है। उसका अर्थ यह है कि एक नया मूल्य ममाज के सामने आया है।

भूदान से नये मूल्यों की स्थापना

मेने कई बार कहा है कि भूदान ने एक नये मूल्य का स्थापना की है। आज मे ८९ साल पटा किमी १०० एकर के मादिक स पूछने कि आक पाम किननी जमीन है, ता वह १०० की जगह ५०० एकर जमीन बनाना और उनमें अपनी इज्जत गमभना। लेकिन आज स्थिति यह है कि १०० एकर का मादिक २५ एकर ही बनायगा। ज्यादा जमान

रखता वह गुनाह मानने लगा है। इस पर मैं सोच रहा हूँ कि मूल्य क्या गया है। अब 'दाग' जमीन बहना भूषण नहीं माना जाता। 'उमम credit' नहीं, 'discredit' ही है ऐसा माना जाता है। ऐसा एक मूल्य परिवर्तन घनात्र म हुआ है। धारी नहीं करनी चाहिए यह लक्षाणा मूल्य आज तक चरना था। लेकिन अब ऐसे मूल्य के दाग पड़ने सामन घाने चाहिए।

एकामी मूल्य नहीं, पूरा नीति

दूसरा मिसाल। पत्नी पति के प्रति बफादार रूप से एक मूल्य पाने से समाज में मान्य है। पति की पति होना चाहिए यह माना गया है। शोषण के पीछे पति के रूप में एक उदाहरण का छात्र एक ही पति पाना चाहिए। दा पति नहीं है। हा मकन यह मान्यता रही है। लेकिन पति की दा पतियाँ हा सबनी है। श्री रामजी का एक ही पत्नी था और वह भच्छी बान मात गया। लेकिन अरथ का तान पतियाँ था। वह बहुत बजा बान नग मानी गयी। कृतेवाने जन्म कहन है कि अरथ का तान पतियाँ था इसी कारण वह मय शुभा ऐसा रामायण में दिताया गया है। लेकिन आज कल्पतात्व का टाफ नहीं मानत। सरकार नोकरा के लिए एक ही पत्नी हाना जन्म माना गया है। मुसलमानों के लिए अदरना ऐसा कानून है कि एक भात्री के चार से ज्यादा पतियाँ नहीं हाना चाहिए। लेकिन एक पत्नी के चार से ज्यादा पति नहीं हाने चाहिए ऐसा नहीं कहा जाता। एक ही पति हाना चाहिए यह मूल्य का एक पदरू है। उनका दूसरा पदरू अभी लागू नहीं हुआ है। समाज ने उनका चार से धमी तन माका नहीं है। हमने मानो है कि पुराने मूल्य, जा एकागी मूल्य हैं हम उनका दूसरा पदरू सामने लाकर Whole ethic समाज में लाना है। यह हमारा मूल्य-परिवर्तन का एक अग्र है।

किन्ना भी स्थिति में अनुपय हनन नहीं किया जा सकता

दूसरा काम हम यह करना है कि कुछ अधर्म श्रुति या पाप को हमने समाज रक्षा के नाम से समाज मान्य किया है उनको हटाना है। यह

हमारे देश में और यूरोप में भी है। एक नाम है War Babies यानी युद्ध बच्चे। युद्ध के समय राजरा का अपने परिवार से अलग, बरखा लाने दूर रहना पड़ता है। वह राष्ट्र के रक्षण के लिए भेजा जाता है। उमरा जैसा पत्राचार जाता है उसी प्रकार लड़कियाँ भी व्यभिचार के लिए दी जाती हैं। उन लड़कियों का मतलब होती है। समाज ऐसी सन्तानों का दिया की दृष्टि से देखता है। तो एक तो राष्ट्र-रक्षण के नाम से हमने हत्या को माय रखा। किन्ता भी धर्म का दृष्टि से हिंसा पाप है फिर वह धर्म नाम का ही मूला का हा बौद्ध का जन हा या हिन्दू हो। हिंसा का पाप माना गया है लेकिन राष्ट्र-वचाव के लिए द्दिगा कर सकते ह, ऐसा माना गया। उसे क्षात्रधर्म माना गया और उगका गौरव दिया गया। क्षात्र भी कोई क्षात्रधर्म का अभाव कहने का तैयार नहा है। जहाँ राष्ट्र के वचाव की बात आया वहाँ हिंसा का धर्म माना। यानी धर्म की दृष्टि में जा धर्म है उमका भी राष्ट्र-रक्षण के लिए धर्म माना। अब यह बदलना चाहिए। हम इस मूल्य को स्थापित करना चाहते हैं कि किसी भी धर्म में मनुष्य-हानि नहीं किया जा सकता। या तो यह कोई नयी बात नया है। या तो युद्ध ने भी क्या है और ईसा ने भी क्या है। हम कोई नयी बात नहा कहते हैं। लेकिन इस मूल्य को हम समाज-माय कराना चाहते हैं।

समान रक्षा के लिए विपरीत मूल्य

एक तीसरी मिमान लीजिये। पुलिस Approver बनाती है। पंचम आत्मिया ने मिनकर डाका डाका खून किया। उनमें से किसी एक का पुत्रित Approver बनानी है। उसमें पुलिस कहता है कि अगर तुम इनका भक्षण करोगे तो तुमका माफी मिलेगा। जा आत्मि नडाको करता है उमका माफी मिलनी है और दूसरे को गुनहगार मानकर नडा दी जाती है। अब बाकी लाग और यह Approver दाना समाज के गुनहगार थे डाका और खून में शरीक थे लेकिन एक का मन गुनाह माफ और दूसरे जो उतने हा गुनहगार थे उनका सजा !

प्रेरणा प्रवाह

हमार देश में और यूरोप में भी है। एक नाम है War Babies यानी युद्ध-बालान। युद्ध के समय साजरा का अपने परिवारों से अलग, वरनों तक दूर रहना पड़ता है। वह राष्ट्र के रक्षण के लिए सेवा करता है। उसका जन्म शरण से जानी है उसी प्रकार लड़कियाँ भी व्यभिचार के लिए दी जाती हैं। उन लड़कियों का सन्तान होनी है। समाज ऐसी सन्तानों का दया की दृष्टि से देखता है। ता एक ता राष्ट्र-भरक्षण के नाम से हमने हत्या को माय रखा। किन्ता भी धर्म का दृष्टि से हिंसा पाप है फिर वह धर्म दसा का हा भूमा का हा यौद्ध हा जन हो या हिन्दू हा। हिंसा को पाप माना गया है, लेकिन राष्ट्र-वचाव के लिए हिंसा कर सतत है, ऐसा माना गया। उसे क्षात्रधर्म माना गया और उसका गारव किया गया। आज भी कोई क्षात्रधर्म का अमान्य कहने का तैयार नहा है। जहाँ राष्ट्र के वचाव की बात आयी वहाँ हिंसा का धर्म माना। यानी धर्म की दृष्टि से जो अधर्म है उसका भी राष्ट्र रक्षण के लिए धर्म माना। धर्म यह बनना चाहिए। हम इस मूल्य को स्थापित करना चाहते हैं कि किसी भी स्थिति में मनुष्य-हत्या नहीं किया जा सकता। या ता यह कोई नयी बात नहा है। यन् ता बुद्ध ने भी कहा है और ईसा ने भी कहा है। हम यन् नहीं बात नहीं कहते हैं। लेकिन इस मूल्य को हम समाज-मान्य बनाना चाहते हैं।

समान रक्षा के लिए विपरीत मूल्य

एक तीसरा मित्रान लीजिये। पुत्रिम Approver बनाया है। पंचम आत्मिया ने मिलकर डाका टाका खून किया। उनमें से किसी एक को पुत्रिम Approver बनायी है। उगम पुत्रिम कहती है कि अगर तुम मरना भगवान् बनाने ता तुमका भारी मिलेगी। जा आदमी नडाफोड करना है उसको भारी मिलती है और दूसरो को गुनहगार मानकर सजा दी जाती है। अब बाकी लाग और यन् Approver बना समाज के गुनहगार थे डाका और खून में शरीफ थे लेकिन एक का गव गुनाह माफ और दूसर को जतने धरना

उन्होंने ग्राम रक्षक बन बनाया और उसके हाथ में राइफल दी। ग्राम में म किमाको गुस्ता घा गया तो ? ता गोती चलेगी और बल्ल हा जायगा। उनका अनावा उहाने Informer का राइफल दी। Informer उनको डाकुआ का जानकारी दना है। जानकारी दना है ता उस दर भा रहता है इसलिए उसका भी राइफल द दा। ता चार जमात राइफलवाला हुई—गुलिस डाकु मूखबिर और ग्राम रक्षक दत। बाता लोम क्षेत्रारे ता घा गये। इन चारा में म किमाको भी गुस्ता घा गया कि उन बेचारा की मुसीबत। मैने कहा कि हमने दर ही दर बन्ना है, निभयना नहीं घाना। यह कोई अच्छा लक्षण नना *। उा सम्बन्ध में कवा कहना पाय यह है कि आप ऐसा कहत हैं, ता उससे गुनिम का Moral टूटता है। राष्ट्रपति ने ता मेर काम के चार में अभिनन्दन किया। पर दूसरो ने कहा कि बाता का काम या तो अच्छा है, लेकिन उसम गुनिम का Moral टूटता है। और जा राष्ट्रपति की मर्सा है वह मो टूटती है। और समाज में आज जा Established Values न, उनका धक्का पहुचना है। हम इन गलत मूल्या का, अधर्मा को तोडना चाहते है। वह हमारे मूख्य-परिवर्तन का दूसरा प्रकार है।

गुणा का बेटवारा भयंकर

तीसर आज व्यक्ति-धर्म और समाज धर्म म फरक किया जाता है। व्यक्ति के लिए जा गुण ठीक यह समाज क लिए अठीक माना जाता है। यह ने गुणा का बेटवारा किया जाना है, वह भयंकर है।

सत्य अपरिवर्तनीय मूल्य

फिर उसमें भी कुछ घेडेनस किये जाने हैं। एक अणुवत आदालत चल रहा है। अहिंसा सत्य अस्तय, महाशय असग्रह—ये जा पांच वन है उनका एर हद तक हम पानन करेंगे। ऐसी प्रतिष्ठा की गयी, ता अणुवत का पानन हुआ। खाने की चीजा में मिलावट नहा करेंगे या म्वा में मिलावट नही करेंगे ऐसा अणुवत लिया। याने खाने की चीज में या दवा में मिलावट नहा करेंगे लेकिन और चीजा में मिलावट करेंगे।

माना कि आत्मा ने अणुत्रय द्वारा एक मयात्म मान ला ता वह कर्म-व कर्म अच्छाद की तरफ आगे बढ़ सकता है। और वना क बारे में तो यह समझ म आ सकता है। लेकिन सत्य के बारे में कहा जाय कि मैं मय का अणुत्रय पालन करूँगा—मत्य एक हूँ तक बाँरूँगा—ता वह समझ में नहीं आता। मत्य ता आपकी बुनियात है। वह आपका Right Angle है। उसमें भी थोडा फरक मान लिया जाय ८० अथवा ८५ का कोण हो या ८५° अथवा ९० का कोण हा ता भी उसका Right Angle मानेंगे ऐसा कहा, तो आपका कुल-ना-बुन व्यवहार टूट जायगा। हाँ यन्ती म असत्य का व्यवहार हो तो वह माफ किया जा सकता है। बाकी क नियमा में 'यूनाधिक पालन हा सकता है लेकिन जहा तक सत्य का ठालुक है उसको Absolute Value मानकर हा उसका आचरण करना चाहिए। उसके बारे में निरपेक्ष नीति मानकर ही चरना हागा। सत्य का आत्म पालन और थोडा नहीं यह कोई माना नहीं रखता। किसी मनुष्य के बारे में कहा जाय कि वह आधा जिन्दा है और आधा मरा हुआ है, ता क्या समझ जाय ? या ता कहिये कि व मरा हुआ है या फिर जिन्दा है। आधा मरा हुआ या आधा जिन्दा क कोई मानी ही नहीं है। सत्य पूरा वस्तु है। लटका छाटा है इसलिए वह आठ आना या बारह आना सत्य बालेगा ऐसा नहीं है वह सत्य बानेगा यानी पूरा मत्य बालेगा। सत्य पूरा वस्तु है अपरिवर्तनीय मूल्य है उसकी स्थापना हमें करना है। वह आज स्थापित नहीं ह। पान के अभाव म कुछ ऐसा बातें हाती है, जा कि सत्य नहीं हैं। पर वह असत्य भी नहीं, जैसे पुराने Astronomers अपने यच्चा स कहते थे कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य उसक चर चक्कर काटता है। हकीकत म यह वान गलत थी लेकिन वह ननिक असत्य नहीं है। मैं एक चीज मनी जानता हूँ और श्माके कारण कुछ गलत या मिथ्या बोनता हूँ तो वह ननिक असत्य नहीं है। वह पान के अभाव में है। जस-जम दिनान फलेगा वैस वैसे शान बढ़ेगा और सत्य धारे धीरे प्रकाशित हागा। जानकारा के

समाज में बढी गयी गलत बात नतिक असत्य नहीं है। लेकिन जा
बन्ता है कि सत्य का एक हृदय तक पालन बरूगा, वह गलत है नतिक
असत्य है। सत्य हमें पूर्ण होता है और उसका एक गौण और एक
प्रधान रूप नहीं होता। उसका तो एक ही रूप होता है।

असत्य एक बुनियादी पाप

हमने कुछ घटनाओं का पाप माना और उन पापों का असत्य स
बका पाप माना ज्योत महत्त्व दिया है। जस किसीने व्यभिचार दिया।
उह उसका छिपाने की कारिण करता है क्योंकि हमने व्यभिचार का
छिपाने का पाप में बहुत बड़ा पाप माना है। इसलिए वह उम छिपाना
है। लेकिन माना, किसीने व्यभिचार दिया और छिपाया नहीं और वह
दिया कि मुझमें ऐसा ऐसा हा गया ता हमन उस पाप की मात्रा कुछ
कम हो गयी। लेकिन समाज ने व्यभिचार की असत्य से भी बड़ा मा
दिया है इसलिए वह उसका वितकुत्र माफ नहीं करता। लेकिन अगर
वह छिपा करता ता उसका इज्जत या उतनी हानि न पहुँचनी। ता,
हमें यह स्थापित करना है कि असत्य एक बुनियादी पाप है। व्यभिचार
का छिपाना व्यभिचार में बड़ा पाप है ऐसा माना चाहिए। लेकिन
हमने मृत्यों का गन्त दर्ज बनाये हैं और उनमें दूसरे मृत्यों की सत्य में
बनकर ज्योत महत्त्व दे दिया है। उनका कारण पाप छिपत है। मुझ
बाद बीमारी हुई ता क्या मैं उम छिपाऊंगा? पेट दुस्तता है, क्योंकि
"याग खा लिया था। उसको जाहिर कर देने का बजाय मैं उसको छिपाना
तो नुक्तान उगता हूँ। सबका मनो न उन्हें पर डॉक्टर से तो कहता
"हागा। बहूँगा तो ही इलाज होगा। यह जाहिर बात है कि बीमारी
निनग का कुछ नियमों को ताडने में हा धायी होगी। मनुष्य अपने राग
का जाहिर कर देना है ता समाज उसका पूणा नहीं करता दया का नजर
में दखना है और उसका इलाज भी होता है। समाज की हमदर्दी नहीं
"मन्विण रोग प्रकट किया जाता है। लेकिन जिन रोगों का बारे में पूणा
होता है उनका छिपाने का कारिण की जाती है जसे कि leprosy—

कुछ रोग । कई लोग उमका आरम्भ में छिपाते हैं क्योंकि समाज में उमका प्रति घृणा है । समाज उमका बर्णित करेगा इसका उमे डर रहता है । लेकिन जब यह रोग बहुत बढ़ जाता है तब जाकर प्रकट करने हैं । आरम्भ में बड़ा निया जाता, सा उमका पीरत बन्नाज हा रहता था और यह गायन अच्छा भा हो सकता था । साधारण रोग के बार में घृणा नग होता द्रमनिक उनरो प्रका किया जाता है । उयी प्रकार कुछ पापो क बार म भी समाज में बढ़त घृणा हाता है और समाज उमका मान नग करता, इसलिये उनका छिपाने की वृत्ति है । इन प्रकार असत्य का अन्वगण हाता है । मात्र समाज म पापा का जा अवन हुआ है वह मान रहा है । अगर यह स्थापित हा जाय कि सबग का दुर्गण असत्य है ता समाज म पाप का छिपाने की प्रवृत्ति घटेगा और जन राग प्रका विध जात है श्रेय पाप भा जाहिर विध आयेगे और उनका हलाक ना हो लेगा । तो, हमें इन मानने में भा मूल्य-परिचय करना है ।

इसरी

—पञ्चाथ वापकर्ता निधिर के

६८-६०

शब्दों का खेल

अन्तरात्मा बहिरात्मा में शब्दरूप, ध्वनिरूप होती है

जब वाइ कवि जन-हृदय के साथ घुल मिल जाता है तो वह लोको
 के हृदय में द्विती हुई भावना को बाहर लाता है। जो भावनाएँ लागे के
 मन में गुम हैं सुम हैं छिपी हैं उनको बाहर लाने का शक्ति करने पर उन
 गाना में लागे को अपने अन्तर्भावा का दान होता है आत्म-दान का
 आनन्द होता है। मनुष्य की आत्मा भावगत होती है। गीता में
 आत्मा है आत्मभावस्थ। भगवान् भारत्य है जो मनुष्य का अन्तर्भाव
 है जिसके अन्दर आत्मा व्याप्तिरूप में जत रही है प्राण द रण है।
 मनुष्य जो मामूली पाजें धोचना है हम विना राजमरी की तरह-तरह
 का बात भगद, गातियों विना आनन्द प्रमोद करना है आनन्द और
 भोग विनास की बातें करता है उनमें उसरी आत्मा प्रकट नहा होती।
 मनुष्य का ऊपर का हिस्सा प्रतिबिम्बित होता है। लेकिन जहाँ अन्तर्भाव
 वाणी में प्रकट हुआ जैसे क्वार, तुलसादास, तानक, टैगोर, चतय अदि
 की वाणी में हुआ उस तरह लोको हृदय की आत्म-ध्वनि बाहर लाते हैं,
 तो उनमें लागे को आत्म-भावात्कार का अनुभव होता है। आत्म भाव
 का दान होता है। जो भाव उनके हृदय में थे वेविन व्यक्त नहीं कर
 सकने थे वे व्यक्त हो गये। अन्तरात्मा बहिरात्मा म नारूप लेकर
 ध्वनिरूप में गाने लगी हो गयी।

हम पल-पल यात्रा करते हा रहते हैं। तब हमें कभी-कभी
 दुःखायनजी के गीत याद आने हैं। ऊपर घने काल हा धूसलाधार और
 कर्षा हा रही हो, ऐम समय पर हमें दुःखायनजी के गीतों की याद आती है।

मन्दी गत न पड, ऐ मसाफिर मन्दी गत न पड और सामने वाले जाने मयानत्र बाण दाखते है जन्म लकिन 'काले बाबल हिम्मत से न घड'-ये दा गळ मुनरर वितना उल्माह भर आता है । एमकी वजह यदा है कि वह गळ अन्तरात्मा को बाह्य रूप देता है और तब वह तोवमानस में प्रवेश करता है ।

भुदान अन्तरात्मा में भरी करुणा बाहर लाता है

मैं कहना यह चाहता हूँ कि भूदान आन्दोलन में जो अन्त तत्त्व है जिस एक भिन्नमगा कायक्रम समझकर पहले से आज तक चल् लोग बरण करने में धयता महसूस करते है वह अन्त तत्त्व और उसका कायक्रम प्रतिभावान् कविया को उल्माह देता है । कई कविया को सर्वोत्प्य के कायक्रम ने इस तरह उल्माहित किया है । भारत में ऐसी रुचि दूमरे किसी कायक्रम के बारे में लोगो को हुइ हो ऐसा मैंने नहीं देखा । नौ साल से मैं घूम रहा हूँ लेकिन ऐसा अन्तजा मुझे नहीं मगा । हिन्दुस्तान के लाग एये भिन्नमगा कायक्रम नहीं समझते है । वे समझते है कि हमारी अन्त रात्मा में जो करुणा भरी है उसे बाहर लाने का यह कायक्रम है ।

जिस भूमि से शब्द निकला उस भूमि से हृदय जुडा रहे

जो चीज जिस भूमि में निकनी है उसे समझने के लिए उस भूमि से हृदय जुडा रहना चाहिए । वह शब्द किस हवा से, किस भूमि से निकला है उसे समझना चाहिए । मुझे कई भाषाओ का अम्याग है हिन्दुस्तान की और बाहर की भाषाओ का भी । लेकिन दस हजार साल पहले की भाषाओ में सिवा मरुतन के और कोई दूसरा भाषा हो, तो मैं नन् जानता । इतनी पुरानी दूसरी कई भाषा नहीं है । मरुतन का प्राचीनतम ग्रन्थ अश्वेद है । उसके पहले एनोक में जो मन्त्र है उसमें जो गळ है व जन्म के तसे आज भी हिन्दी मराठी बंगला और गुजराती में इस्तेमाल किये जाने है । पहला ही मन्त्र है—'अग्निमीले

होतार रत्नघातमम । उगमें पहना

प्रति। वह इन सब भाषाओं में चलता है। अंग्रेज पुगटिस स्व, वगैरे
 जहाँ जहाँ वे लगे इन भाषाओं में चलते हैं। ऐसा कोई भाषा नहीं है, जिसमें
 ग्रीक और लतिन के शब्द जहाँ जहाँ इन्हें मान लिये जाते हैं। लेकिन
 हमारी भाषा में हाथ है। बरौब पचास प्रतिशत शब्द ऐसे हैं जिनमें
 भारतीय विचार शक्ति का प्रक्रिया

हमारा और काइ कारण लगे यही है कि हिन्दुस्तान में जो विचार
 शक्तियाँ हूँ उनमें अपनी एक स्वतंत्र प्रक्रिया थी। वह यह कि पुराना
 शब्द ता कायम रहे उसमें नये भर दें याने नये-नये शब्दों की उत पर
 नये चदान जाय। पुराने शब्दों की तावत और नये शब्दों का मधुरता,
 दोनों मिलकर एक नया ही विचार हिन्दुस्तान को मिलता गया। शब्द
 पुराने कायम रहने लगे और नये-नये शब्दों की प्रेरणा जन-समाज को
 मिलती गयी। यह अद्वितीय प्रक्रिया थी और वही प्रक्रिया ने हिन्दुस्तान
 को बना रखा। यह बहुत समझने की बात है कि हिन्दुस्तान की भूमि
 में क्या बीज पड़ी है, जिसके आधार से गांधीजी जैसे पुष्प पदा हुए और
 इसके आगे भी अनेक पैल होंगे। यहाँ की जमीन में जो तावत पड़ी है
 इन समझने की जरूरत है।

दुनिया के कुछ देशों के लोग का अपना-अपना धर्ममाना होता है।
 लेकिन हिन्दुस्तान का लोग भारत के लिए क्या बोलते हैं वह ध्यान देने
 लायक बात है। कुलभ भारत के जन्म। जैसे इंग्लैण्ड, जापान और रूस में
 भी लोग बोलेंगे कि इंग्लैण्ड जापान रूस में जन्म लेना बड़ी धर्मता की बात
 है। लेकिन हिन्दुस्तान के लोग आगे क्या बोलते हैं? 'मानुषी तत्र
 कुलभम' याने मनुष्य का जन्म लेना बहुत ही दुर्लभ बात है। मतलब यह
 कि हिन्दुस्तान में कीड़े-मकोड़े का जन्म मिला तो भी दुर्लभ है और
 मनुष्य का जन्म मिला तो 'योग धर्म' है। इसके माने यह है कि इन
 भूमि की अमर्य सत्तुष्पा की कारण रण का स्पर्ण हुआ है। उसने याने
 उन कारण-स्पर्ण में गहरी व जान-अन्तु भी धर्म है।

यहाँ विचार लगे प्रक्रिया था। 'ते जो नये समझते वे यहाँ म

नियते हुए गुरु का धर्म भा नहीं समझते और उसी गहराई भा समझते नहीं है। इस तरह यहाँ के शब्दों का सन्निधन करता है।

रण छाड़कर क्यों भाग रहे हो ?

एक भाइ बोन उठे कि हम सन्ध्याम बगर कुछ नहीं मानते हैं। मैंने कहा ' फिर क्या मानते हो ? भाग मानते हो ? ' शिष्टुम्नान का सबसे श्रेष्ठ विचार सन्ध्याम है उसका गौरव गाँवा और गाँव गा रहे हैं। एसा कामना गल है। लेकिन क्योंकि कुछ लोगो ने सन्ध्याम का उपयोग किया सन्ध्याम काप उगे बुर सागा क हाथ में सौं होंगे ? सन्ध्याम मठनव य है कि आप रण छाड़कर भाग गये और गन्ध भी छाड़कर भाग गये। यह गन्ध आपका है। सन्ध्याम उनका गन्ध नहीं है जिन्होंने सन्ध्याम का उपयोग किया और सन्ध्याम का कामा पन्नतर दुनिया का टणा। आपने बहुत गन्ध उनका हाथ में देकर भागना शुरू किया ता सन्ध्याम का ही सन्ध्याम किया। आपका आपका जो मरम मजबूत साग थी उसका छाड़कर आप भाग गये। फिर रण छाड़कर नया भाग तापें शम्भ अन्ध सब छाड़कर भाग गये और शत्रु क हाथ में शस्त्र सौं लिये।

शब्द को समझ लीजिये

एक कहता है हम दया करणगा नहीं मानते। दया क माने ना समझते हा ' ता बोलते है ही पिरी और मर्मा। मैंने कहा वहाँ कण्ठा और वहाँ य मर्मा और पिरी। कण्ठा का धर्म यह है कि जनी करने की प्रेरणा है। उस शब्द का निष्ठा करने के पहलु परा समझ तात्रिय। इस तरह हमारे यहाँ जा अत्यन्त पवित्र गल है, उसकी निन्दा पश्चिम के शब्द यहाँ लाकर करते हा लेकिन पश्चिम के विचार पश्चिम के गल पर आधार रखन है। यहाँ के गल यहाँ के विचार पर आधार रखन है। मैं कहना चाहता हूँ कि करुणा शब्द का तजुमा करनेवाला गल दुनिया की किसी भाषा मे नहीं है। वह यहाँ का विचार है। मर्मा और भाइफनेम इन गल न भी वह धर्म नहीं धारयेगा। वह इस भूमि का शब्द है और इस भूमि क गल द साध, यहाँ भावना जन्म है

निना नहा करनी चाहिए। दूसरे वीन से गन्ध लाभाने, जिनके आधार पर यहाँ की जनता को खड़ा कर सकन हा ?

दान यानी विभाजन

इस तरह जब हमने दान कहा तो उसे भिन्नमगा वायव्य कहा गया। यज्ञस्तपस्तथा दानम्। यन दान तप इस तरह भगवद्गीता गजना कर रहा है। दान का अर्थ सिर्फ 'देना' नहीं है। देना तो एक अर्थ हुआ। दा का अर्थ विवाहक दु कट हाता है। दूसरा अर्थ विभाजन भी हाता है। दान सविभाग गकरावाय ने कहा है। दान यानी सम्यक् तप से विभाजन। दा पातु का अर्थ देना भी होता है और विभाजन भी हाता है। देने क जरिये विभाजन कल के जरिये भी और कानून क जरिये भा विभाजन हो सकना है। लेकिन देने की प्रक्रिया के जरिये विभाजन इतना पूरा अर्थ दान गन्ध म प्रकट हाता है। यह अर्थ केवल गकरावाय ने नये सिर से लगाया ऐसा नहीं है। प्राचीनो ने भी किया है। गौतम बुद्ध का भापा में दान की बहुत बड़ी महिमा है। धम्मपत्त का एक श्लोक है य सविभाग भगवो अण्णवथी। जिस गौतम बुद्ध ने समविभाग कहा उस दान का अत्यन्त महिमा है। यह गन्ध बोद्ध-भावित्य में आया। पचीस सौ साल से चला आता है वह अर्थ। याने दान का अर्थ सम्यक् विभाजन। भगवो याने भगवान् बुद्ध—भगवान् बुद्ध ने जिसे सविभाजन नाम दिया था वह।

यह सारी प्रक्रिया जा नहीं जानत है क ऊपर ऊपर का अर्थ देखते है और समझते हैं कि यहाँ पश्चिम में जा चना है पिटी एण्ड मर्सी एण्ड आम्स गिबिंग और भिन्नमगा—ये सारी चीजें यहाँ से लाने है और उसका आरा पण यहाँ के राजा पर करत है और समझत नहीं कि यहाँ की भूमि क राजे का क्या अर्थ होना है।

शब्द ही अन्तर्निबन्ध

वर, मुझे सो इन राजा ने अपना बल मिरतना है कि मेरे बल को काइ घण्टिन नहा कर सतता, जय तप ये शब्द मेरे पास है। सुकाराम ने भी

क्या था 'माया' धरों धन, गणघोष रत्नों गणघोष गणधे जलन
 क० । गणधे धामुच्या जीवाधे जावन । गणधे जीवन की जा धन
 मृष्टि है, वह गण की है । गणधे हमार रत्न है धोर गण हा हमारे गण
 है । हमस बन्दर बाई गन नहीं हा मवा धोर गण बन्दर बाई गण
 नद हा सक्त—तुकाराम बह रदा है । तो वह जा तुकाराम बह रदा है
 वा जा गण है प्राचा बाल स धात्र तब गण वा जा धरुण धारा
 बणा धाया है, वह बण हा मनारम मृष्टि है । हमारी सय भायाधे म
 व गण पुल मिन गये है ।

अहिंसक प्रान्ति की प्रक्रिया

यह सारा जा मृष्टि धन दण की है वह अहिंसक प्रान्ति वा प्रक्रिया
 है । पुराने सार ताडो पुनन विचारों का सञ्चिन करा उनकी जगह नये
 सार साधा, धरने मही का भूमि में एव नयी सञ्चि-मृष्टि पैग करा ता
 वह विचार-बाज यनी गहराह में नहा जाता उसम स वृण पैग नहा हाता
 धोर उन वृण म सावन नहा धानी । उनक बजाय धगर एव धोर ले
 गिया जाय जसा कि धाजकल साग प्रवांग करने जा रहे है बांग पर गने
 की बनम लगाने वा प्रया । हमस बांग वा ताकत धोर गन वा मधुरता
 गनों मिनैगा । क्या नाम गिया जाय उन ? बांग पर कलम है गने वा
 ता वह गण हागा । गले वा रम धोर बांस वा ताकत उसमें हागी । यह
 कपि-शात्र म कलम की जा प्रक्रिया खलती है कनी प्रक्रिया हिन्दुस्तान म
 गणों पर हुई है । हम तरह की प्रक्रिया म हिन्दुस्तान वा सारा सार
 सम्भार बना है । यह हम सम्भना है । इससे हमें बहुत ताकत मिलता है ।
 ससृजन के शब्द धौलत हैं

मैने कहा था संस्कृत के गण धानत है । दूसरी भाषा के सञ्चि धानत
 नहा है । व बेचारे मूक है । धोना उनको मालूम नहीं । ये बोलत है ।
 हस्त याने हाथ याना हैमानेवाला । धरे तुम काम करो, ता हैना ।
 धगर काम नहा करागे, तो तुम्हें राना पड़ेगा । सारा मृष्टि में जा हास्य
 है वह सारा हास्य हम हस्त में निहित है । हैसती है दुनिया म धगर हम

काम करते हैं। लक्ष्मी पदा हानती है तो सारी मृष्टि हसता है। एक-एक गल्ल बोल रहा है आपसे नाथ। 'मम प्रकार 'हैण' कुछ बोलता है ? 'हैण' याने हाथ। वह हाथ कुछ नहा बोलता। नदी याने जो निना करती है। गंगा ग-ग-ग आवाज करता है। इस तरह बोलनेवाले गल्ल जहाँ हैं, वे आपको नया दृष्टि देते हैं। वन् दृष्टि उधन् वे गल्ल नहा दौ।

शब्दा का भाषा

हमने गीता का तजुमा मराना म किया है। सानी मिमाल देता हूँ। गीता म आया है 'गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा।' मैं मृष्टि म प्रवां करव भूता को धारण करता हूँ। उसका मने तजुमा विमा आकषण वनें मूले धारास्वे धरीतमे।' अगर मैं लिखना कि 'पृथ्वारूपे धरीतमे तो भी अर्थ निकलना। लेकिन धारास्वे कना, तो जो अर्थ निपत्ति हुई वह पृथ्वीरूप में नहीं जाती। धारास्वे धारण करता हूँ। पृथ्वी का नाम इसलिए धरा है कि वह धारण करती है। पृथ्वा कव कल्लाती है ? जब वह पला हुई हो। गुर्वी यां जज हम उसका भार ध्यान म ने तव वह गुर्वी कहलायेगी। इस तरह एक हा पृथ्वी क जो दग-पांच नाम होन है वह ध्यव का परिग्रह नहा है। इग्लिन म 'वाटर' कहते हैं दूसरा शब्द नहीं। नदिन का हाइड्रो बगरह हाता हागा। लेकिन हमार यर्न उक्क नीर, जल है यत निगलिए यना ? यह कोई परिग्रह नहा बनाया है। एक एव शब्द की और देखने की एक एव दृष्टि है। उम उम दृष्टि स देवने हुए वह गन् प्रचलिन होता है। इसनिए हर गन् जानदार प्राणान् जोरन्तार है और बोलता है। एस बोलनेवाले गन् की भाषा हम न समझे और उसरा अग्रेजी में तजुमा करवे उसके आघार म उस पर प्रार करल जाय तो उसका यह अर्थ होगा कि हम अपने देव की ताजत का जिनकुल ही समभन नहा है।

इ-बीर

—प्रायना प्रवचन

गायत्री-मंत्र

‘ननी मूक्त’

गायत्री-मंत्र एक वैदिक प्रायना है। वैदिक धर्म में त्रिनेत्रात्मक हिन्दू धर्म कहते हैं यह गायत्रीमंत्र है। वं प्रायना सबन लिए है सबवा ध्यान में रखकर रची गयी है। जैसे ईसाय्या में Lords prayer हाती है, या इमनाम में ध्यानानिग' पारगियों म अवेम् वाहु गिरवा में एर भोंहार ग्यानि है उमी वाणि में यह गायत्री है। ऋग्वेद व नीगरे मण्डन में यह है। ऋग्वेद के दस मण्डन है। तीसरा मण्डन मुख्यत विवामित्र का है। यह गायत्री-मंत्र व ऋषि भी व हा है। उनका ननी मूक्त—ननी के गाय मवा—बहुत प्रसिद्ध है। सत्त्वज और व्यास के सगम के गाय विवामित्र का वाडानाप हुआ था। उसका स्वतंत्र मूक्त वे में है।

गायत्री सावित्री भी है

गायत्री-मंत्र के ऋषि विवामित्र है और छन्द गायत्री है। इन छन्द के अक्षर चौबीस अक्षर होते है। छन्द पर स इमना नाम गायत्री है। वावा यह सावित्री है यानी मविताय की स्तुति है इसलिए सावित्री पर उसका छन्द गायत्री होने से उसे गायत्री मंत्र बना गया है। गायत्री के चौबीस अक्षर है। ये मनुष्य की आयु के चौभाग वर्ष के प्रतिनिधि माने गये है। एक-एक अक्षर एक-एक मात्र के लिए माना गया। प्रथम चौबीस वर्ष का ब्रह्मचर्यायम माना गया था। अतएव यह ब्रह्मचर्य का भी मंत्र माना जाता है। प्रथम चौबीस वर्ष ब्रह्मचर्य का पाठन जाना है उसके बाद ब्रह्मचर्य का पाठन, गृहस्थ की मर्यादा में गृहस्थ व लिए होता है। फिर वानप्रस्थायम और सन्यास में, इसकी पूणता हाती है। यह गायत्री-मंत्र

सिर्फ ब्रह्मचर्याश्रम में पढ़नेवाले विद्यार्थियों के लिए ही नहीं है, सबके लिए है। उम्रके चौबीस अक्षरों का चौबीस वर्ष के प्रतिनिधि मानकर ब्रह्मचर्य का विशेष ध्यान किया गया है। इस मात्र का छन्द गायत्री त्रिपदा है। अक्षर सार छन्द दो या चार चरणा के हात हैं लेकिन यह तीन चरणा का है और त्रिपदा बहुत अच्छी बैठती है। दो पाँचवाली चीज मनुष्य है, चार पाँचवाली चीज जानवर है तीन पाँचवाला टाइमिकिल होनी है, बाकी पाँच जानवर हा तो मालूम नहा। त्रिपदा, त्रिपाद बहुत अच्छी बैठती है। चार पाँचवाला चीज भी जरा कमजोर पड़ती है। पर त्रिपदा मजबूत बैठती है।

चद सार भगवान् का नाम है

वेद-सार भगवान् का नाम है। भगवान् का कोई स्वतंत्र नाम होना चाहिए ऐसा अपेक्षा मत्तों की होती है। यद्यपि विष्णु-सहस्रनाम में भगवान् के एक हजार नाम हैं साध्या-उपासना में चौबीस नाम वाले जान हैं और वैसे भगवान् के सा अनेक नाम होने हैं। रामानुज ने बहुत बड़ा विचार रखा। उन्होंने कहा कि दुनिया के जितने शब्द हैं उन सबका अर्थ भगवान् है। हर शब्द के दो अर्थ होने हैं। एक वाह्य अर्थ होता है और दूसरा आंतरिक। हर शब्द का आंतरिक अर्थ भगवान् है। इस दृष्टि से गणनाय भगवान् के नाम हैं। वस्तुतः वद नाम रहित है। लेकिन चिन्तन के लिए नाम लिये जाते हैं। अपने देव में भगवान् का नाम लिया गया है। राम-नाम का चिन्ता चला रहा है, सगुण परमेश्वर के लिए। उमीदों निर्गुण मानकर अक्षर नानक आदि ने प्रयोग किया है। राम मूलतः सगुण होने हुए भा सगुण और निर्गुण के प्रतिनिधि हो चुके हैं, लेकिन इस नाम के अलावा जो सर्वतमात्र नाम वैदिक धर्म में चला वह है ॐ। ॐ वेदा का सार माना गया, जैसे रामायण का सार राम-नाम है।

ॐ भगवान् नाम

ॐ के तीनों उर्ग मिलकर एक मात्रा मानी गयी है इसलिए गायत्री त्रिपदा है। गायत्री-अक्षर का एक-अक्षर चरणा, ॐ की एक-अक्षर मात्रा है।

मंत्र गायत्री-मंत्र अक्षर का चिह्न है उदा माना जाता है। फिर भा गायना में गुरु में 'ॐ भूर्भुव स्व' इस तरह भगवान् का नाम-स्मरण करके मंत्र गाया जाता है। ॐ ता परमात्मा का नाम है, जा अपने हृदय में अन्तरात्मा के रूप में है और त्रिविधा म विश्वात्मा के रूप में है। उसके पूर्व 'भूर्भुव स्व' य तीन भाग है।

भूर्भुव स्व

पृथ्वी अन्तरिक्ष स्वर्ग त्रिधा की जा मानने सृष्टि सदा है, उनमें स्वर्ग मान ऊपर का हिस्सा। जहाँ बहुत सारे नक्षत्र और तारे घूमते हैं यह है स्वर्ग। ये तीन हिस्से अज्ञान के हैं जो अपने चित्त में भा है। भू माने गरीब गेह अन्तरिक्ष के लिए भुव सत्त्व त्रिया। उनका अर्थ प्राण है। और स्वर्ग के लिए स्वर्ग त्रिया उग्रवा अर्थ मन है। देह प्राण और मन ये अन्तरात्मा के तीन अर्थ हैं और सृष्टि में पृथ्वी अन्तरिक्ष और स्वर्ग ये तीन भाग हैं। इस तरह चित्त और अज्ञान दाना की तरह ध्यान कर 'ॐ भूर्भुव स्व' दाका अर्थ मुख्यतः देह प्राण और मन ही लेना चाहिए। जहाँ अन्तरात्मा का चिन्तन करते वहाँ देह प्राण, मन यदा अर्थ लेना चाहिए। यह उग्र मन वा गुरुप्रातः है।

व्यक्तिगत और सामूहिक प्रार्थना

पिथो योन प्रचोदयान यह वरदान मंत्र है। भगवान् हमारी बुद्धि का प्रेरणा दे। मुख्य प्रायना का जो भाग है जिसे हम मंत्र कहते हैं वह अन्तही ही है। उसमें ध्यान करने लायक चीज यह है कि अपने लिए जो मंत्र है उसमें सत्रण लिए वह मंत्र गुरु प्रायना का है। यद्यपि गायत्री मंत्र अज्ञान में गाया जाता है, तबपि अज्ञान में बैठे-बैठे अपने में सबका मानकर जो वह प्रायना करेगा। इसमें सामूहिक और व्यक्तिगत प्रायना का अर्थ है। व्यक्तिगत प्रायना में मनुष्य अपने लिए सोचता है और ईश्वर के साथ अपना नाता जोड़ता है। सामूहिक प्रायना में सबके लिए साचता अर्थ मन्त्र मन्त्र, भाव, कर्तव्य माने समाज के साथ अपना नाता जोड़ता है और

उनके जरिये परमेश्वर के साथ सम्बन्ध जाड़ता है। दाना प्रायनाएँ एक दूसरे को पूरक हैं। सामूहिक प्रार्थना में भी एकाग्रता कई वाता पर निर्भर करनी है। एक साथ एक समय सब बैठते हैं तो पूर्णता का अनुभव आता है। एकाग्रता के लिए सबका सहयोग चाहिए और कई प्रकार का संयोग बनना चाहिए। संयोग अगर नहीं बनने, तो प्रायना में एकाग्रता रखना जरा मुश्किल होता है। इसका अभ्यास करना होगा। पर एतान्त में एकाग्रता की सहूलियत है बशर्त कि चित्त चारों तरफ जाने न लग। बहुधा ऐसा होता है कि जब समुदाय में सबके सहयोग से अनुकूलता होती है वैसे एकाग्रता में एकाग्रता से अनुकूलता होती है और जब समुदाय में सबके प्रयत्न में एकाग्रता होती है वैसे व्यक्तिगत प्रायना में चित्त पर बाह्य अनुकूलता होने के कारण चित्त का चारों तरफ दौटना या निरा में डूब जाना सम्भव होता है। इसलिए दाना और खतरा होना है। अतः दोनों में इसका खयाल रखना पड़ना है। एकाग्रता में भी समूह का खयाल रखने ही प्रार्थना का ठाँव के शुद्ध उत्तम में आ सकता है। ऐसी प्रायना में हमारी बुद्धि का प्रेरणा दे इस तरह एक-एक आत्मी व्यक्तिगत तौर पर अलग अलग बैठकर प्रायना करता है। उनमें सामूहिक और व्यक्तिगत दाना प्रार्थनाओं का याग होता है। भगवान् के पास बैठकर अपने लिए कुछ माँगा तो हममें हम आत्मा की अभ्यापकता मान लेते हैं और भगवान् के पास बैठकर सबके लिए माँगे, तो आत्मा की व्यापकता का ठीक खयाल होता है। इसलिए यह विद्वय माना जायगा कि एतान्त में बैठकर भी समूह के लिए प्रार्थना का गयी। यह इसकी विशेषता है।

बुद्धि का मार्ग-दर्शन मानना चाहिए

दूसरी विशेषता इसमें यह है कि बुद्धि की याचना की गयी है। दूसरी भाँ याचना की जाती है, लेकिन सिर्फ बुद्धि का प्रेरणा दे, ऐसा इसमें बटा है। अनुप्य के लिए मार्गात्मिक के रूप में आध्यात्मिक चीज बुद्धि ही है। उत्तरे नाने मन इंद्रिय मानसिक भाँ आता है। शुद्ध हमें उपलब्ध देता है, तो उन समझने के लिए भी बुद्धि चाहिए। गिप्य नहीं समझ सका या गतव

दर उनसे बरसे हैं, तो वह आपकी बरेगा माने वह तेज आपकी प्राप्त होगा। क्या की निम्ना आपकी है। माने आप पर वह प्राप्त हुआ करता। आप बरए करते है तो वह प्राप्त होता है। इसलिए यदि मैं आपकी निम्नेशारी बरए करने की होती है, नैस शोच्यु का पर निखर हस्तिनी ने बरए किया। उन्ने निम्ना कि आपके बरए की नेगा ने करना बरएी हैं। पर निखर उसने बरए किया। उन्ने बरए ने किया होता, तो भवान् शोच्यु उस पर अनुग्रह करनेवाले नों से। जली तरह हम उन तेज का बरए करते है, तभी वह तेज आपका बन करता है। उलका काज है मत-दहन। धार हमें बरए नहीं करता है, हम मन-दहन नहीं बरए है और फिर भी वह दहन करेगा, तो हम हर पत्नी कीर हर्षे बरए करना नरी मनेगा। जैसे बरएामनी यगा वह रही है पर हम उलका उन्नेशारी करते है, लेकिन प्रति कष्टणा से और प्रम से पन प्रम बर-भर में जाते सदेगी, तो लोग हर जायेंगे और घर छोड़कर चले बरेंगे। इसलिए पर भवान् नरी करता। उसी तरह भवान् का तेज पर पहुँचने तो हम हर जायेंगे, हमारा काम नग होगा। वे भवान् नरी करते। इसलिए भवान् ने कहा, तुम बरए करो तो हम आपने। निम्ने शरीर में बरए करो, जने प्रम में हम जायेंगे। जिनकी भावना होने, उनके प्रमम मना में हम रही जायेंगे, कम माफा में भी नरी बरेंगे। इसलिए परेभम् कहा है। उलका भयं है, बरणीय प्रम।

२३ तम्

२३ तम् । तम् का मतलब है—उंचा, प्रतिष्ठ, हमस हूर। सुनाकर का उलका हो रहा है। उस वक्त गान्धो-भग बाता जाया है। कुन्ने बर २३ तम्-भयं बरसकने है। जने बक्त की पावनी नरी है, केक पर-दहन का तेज उलका है। यानी उलका बरए करता है। का जने है कि यानी कुन्ने की किरणें जाती हैं यानी एक क्षण में मना अनुपनी का संप्रद होगा है। पर एक तेज है दहन करनेवाला। का बर २३ तम् है। का उन्ने उलका है और हम नरी होते।

का है। राजस बुद्धि हा ता मनुष्य को गढे भ ते जापगी। इसलिए बुद्धि सात्विक होनेी चाणिए और सात्विक बुद्धि की प्रार्थना का गया है। पहले भगवान् क बगन का श्रम है। हाग इसका ध्यान करन हैं ऐमा वाकर श्राया ३— धामन् । हम सन ध्यान करन हैं। अनेते ध्याा कर रह है, ऐमा दीनेगा। तेकिन म सन ध्यान करते है यह उममें ३। किस चीज का हम ध्यान करन हैं ? ध्यान के निर ध्यानगम्य वस्तु चाणिए। इसलिए मविता का नाम लिया।

मरिता प्रेरणा देनेवाला

मरिता मर देवता का वाकर है। वेने में शब्दरूप देवता माने गये है। मरिता यान् स्थूनमूर्ति सूर्य जिमका नामन उल्य हो रहा है, जा सामने मरन है। लेकिन मरिता एक मर है और देवता का रूप शब्द ही श्रिता है, ऐमा मरकार कहन है। मरिता का अर्थ है प्रेरणा देनेवाला। प्रेरणा देनेवाले भगवान् म प्रेरणा देने की मांग का गयो है। प्रेरणा देनेवाले स प्रेरणा की मांग करन है। भगवान् क ता अनेक गुण हैं। अगर दया का गुण चाहने हैं तो दयागु भगवान् की प्रायना करेंगे— रहमानुरहीम भगवान् की प्रायना करेंगे। प्रेम चाहिए ता प्रेममय भगवान् स प्रेम मांगत हैं। जिम गुण का प्राप्ति करनी है उन गुण की परमेश्वर स प्रायना करन है। परमात्मा के अनन्त गुण हैं मकिन ध्यान के निर विनेप गुण का ही ध्यान हो सकता है। किस गुण का ध्यान हागा / उमका जिम गुण की चाह है। भक्ति का ध्यान हा मरता है तो गुण प्राप्ति भक्ति का स्वरूप हागा। नानक ने जपुजी में भक्ति का न गन का घनाहा बताया है— विनु गुण कोने भगवि न होई । गुण प्राप्ति विने विना भक्ति नहीं हाती। सद्गुणों की प्राप्ति ही भगवान् का भक्ति का रूप है। दयालु भगवान् की भक्ति करतेकरते हमें दया प्राय न हो, ता हमने भगवान् का भक्ति हायिन नहा की। जिम भगवान् का हम ध्यान करन हैं वद् गुण हमें प्राय करना चाणिए, इसलिए उम गुणवान् भावान् का हम ध्यान करन है। भक्ति का स्वरूप गुण प्राप्ति है। इना क ने से भक्ति के विषय म गनवरुमी नहा हा सकती।

अगर उमे बरत है, तो वह आपको वरेगा यानि वह तेज आपकी प्राप्त होगा। कर्ता की भूमिका आपकी है। यानि आप पर वह आवरण नहीं करता। आप वरण बरत है तो वह प्राप्त होता है। इसलिए भक्ति म भा भक्त की जिम्मेदारी वरण करने की होती है, जैसे ध्योदृष्ट्य को पत्र लिखकर दक्षिणायी ने वरण किया। उसने लिखा कि आपके वरण की सेवा मैं करना चाहती हूँ। पत्र लिखकर उसने वरण किया। उमने वरण न किया होता ता भगवान् ध्योदृष्ट्य उस पर अनुग्रह करनेवाले नहीं थे। उसी तरह हम उस तेज का वरण बरत है तभी वह तेज अपना काय करता है। उमका काय है मल-दहन। अगर हम वरण नहीं करता है, हम मल-दहन नहीं चाहत है और फिर भी वह दहन करेगा, तो हम डर जायेंगे और हमें वह अच्छा नहीं लगेगा। जैसे कछुआमयी गगा बट रही है और हम उसका उपयोग करते है लेकिन अति कठना से और प्रेम से गगा यदि घर घर में जाने लगगी तो लोग डर जायेंगे और घर छोड़कर भाग जायेंगे। इसलिए वह आवरण नहीं करती। उसी तरह भगवान् का तेज हम पर पहुँचेगा तो हम डर जायेंगे हमारा काम नहीं होगा। वे आवरण नहा करत। इसलिए भगवान् ने कहा, तुम वरण करा तो हम आयेंगे। जिनने भक्त म वरण करो उतने भक्त में हम आयेंगे। जितनी आकाशा होगा उसमे ज्यादा मात्रा में हम नहीं आयेंगे कम मात्रा में भी नहा आयेंगे। इसलिए 'वरेष्यम्' कहा है। उसका अर्थ है वरणीय प्रभु।

ॐ तत्

ॐ तत् । तत् का मतलब है—उच्चा, प्रलित हमसे दूर। सूर्यनारायण का उच्च हा रत्ना है। उम वक्त गायत्री मंत्र बोला जाता है। दूसरे वक्त भी गायत्री-मंत्र कह सकन है। उमे वक्त की पात्रन्दी नहीं है, लेकिन अथमर सूर्य का तेज उग रहा है। वहा उसका वरण करता है। आप जानत है कि जरा सूर्य का किरणें आता है वहाँ एक क्षण में सारा जन्तुओं का संहार होता है। वह पाहल तेज है, दहन करनेवाला। वह मल का दहन करता है। वर सामने उग रहा है और हम यहाँ खड़े है।

ॐ तत सवितुवरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि ।' देव गण का अर्थ है देने के लिए बैठा है । हम वरण करें व देने के लिए तैयार हैं । व देव है स्तम्भित वज्रम नहीं है । आत्ममण्डली नहा है हमला नही करन लेकिन आप वरना चाहें ता वरिये । व चाहेंगे कि आप उनका वरण करें । अपनी तरफ म वे देने बैठे हैं तो हमें स्वाभाविक स्फूर्ति हानी है और हम मागत है । उनकी तरफ म हमारा वरण हा चुका है तो हम भी माँग करें । केवन हम पर माँग करने का छात्र है ऐसा नहा । वे कहते हैं कि वे बैठे हैं उत्सुकता स देने व लिए बैठ है और कहते हैं ले ला । अब हम कहगे दीजिये ता देंगे । नही तो नही देंगे । जस बाजार म हम जाने है, तो दूकान में जाना पडना है लेकिन पेरीवाला घर घर पहुचता है । काई तल नेकर आता है ता घर तक पहुच जाता है । पर बर भी आत्ममण नहीं करगा । आपका पूज लेगा । अगर आपका चाहिए ता देगा नहा ता चना जायगा है । लेकिन वह आपके दरवाजे पर जाना है । वैसे प्रभु देव है देने के लिए तैयार है और राह दखत है । अगर आप चाहते है तो वरण करें—ऐसी तैयारी स भगवान् मडे ह । भगवान् सून्यनारायण आपका दरवाजा अगर खुला होगा ता अन्दर आयेंगे । आप जितना खोंगे उनगा व अन्दर आयेंगे । घक्का देकर अन्दर नही आयेंगे । वे दाहर खडे हैं । बहुत है खोलो और ले ला । आपकी सेवा म उपस्थित हैं । जब चाहें तब व खडे हैं । कुछ दान सूर्योदय व वात् आप घटे व वात् उठन है बुद्ध लाग जल्नी उठन है । उस त्ति अण्णासाहव मुना रहे थे कोणी शीघ्र जागणारे कोणी हलू जागणार । इस तरह वाद जदी उठता है कोइ दर स लेकिन जागते है जरूर क्योकि भगवान् बैठे ह । कोई जल्नी जागेगा वात् चार बजे, काई छत्र बजे काई सूर्योदय के वात्, काई आठ बजे—भले ही देर करें लेकिन उठते ही है । भगवान् स्वय खडे हैं ता हरणक जाग जाता है । इस तरह तत् में अलिप्तता दिव्याया है । वन्सवर्यने मिटन का वरण किया है 'Thy soul like a star that dwelt apart'—तरा मन तारिका व समान सबसे उचा रहा है ।

हम लोग तारिका की उपमा नहीं दन है सूर्यनारायण की देते हैं। व अलिप्त तो हैं लेकिन व्यापक है। इसलिये जानन्व ने कहा है 'भातु शिव पहा, निमल निराले।'—मानुर्विव सामने है वह निमल है और निराला याने सबसे अलग है निलिप्त है। तो मविता को बरन की जिम्मेवारा आप पर है। उसका तेज दाहक है इसलिये मल का दहन अवश्य होगा, यह बताया है। देव यानी देने के लिये तैयार बेटे हैं। धीमहि याने हम सब मिलकर ध्यान करते हैं। चाहे कोई अवेगा बैग है लेकिन अपने में मज्जा मानकर प्राथना करता है। प्राथना म बुद्धि का प्रेरणा की प्राथना की गया है।

मिट्टी का पशुपति

मूय को भगवान् का प्रतीक माना गया है। इसीलिये निराकारवान् हमसा इनके खिलाफ बालत है। कुरानगराफ निराकारवान् है लेकिन उनमें भी परमेश्वर का चेहरा और परमेश्वर का हाथ ये दो शय थाये है। हम सब जा काय करत हैं वह भगवान् के चहर व दान के लिए। भगवान् का हाथ हमारे पीछे मन्द के लिए आता है। जहा भगवान् का हाथ और चेहरा कहा वहाँ साकारता का भान हुआ। लेकिन मनुष्य की याणी है बानने के लिए इसलिये शुद्ध न-शुद्ध प्रयोग करने पन्ते हैं। प्रयोग करन से उनका मतलब यही नहीं है कि प्रभु साकार हैं। व कहने है कि प्रभु निराकार हैं। जहाँ बोलने के लिए जरा दिखाई होती है वहाँ वह न हा इसलिये मैं जरा फल समझा दूँ। सगुण एक बात है और साकार दूसरी। सगुण निराकार ही होता है और साकार भी। जहाँ गुण है और आकार है वहाँ सगुण साकार होता है। जहाँ गुण है और आकार नहा है वहाँ सगुण निराकार और जहाँ गुण भी नहीं और आकार भी नहीं वहाँ निगुण निराकार होता है। यन् जा साक्षात् सृष्टि नामने खड़ी है वह सगुण साकार है और हम जा परमेश्वर मानते हैं वह सगुण निराकार है। जस ईसा और नानक के प्रभु सगुण निराकार थे। आकार उनमें नहीं था। परमेश्वर में गुण तो भरे हैं। शकर और मयूर का प्रभु निगुण निराकार था। जहाँ आकार नहा और गुण भा

नहीं ऐसी कल्पना करना मुचित है। शरर व तस्वज्ञान में धीर बवीर के
 तस्वज्ञान में भी कराव-बरीव दिगुण परमधर है। यह द्विगुणान में
 प्रचलित है। वेद गणुण मात्र भी प्रचलित है। जहाँ सूर्य का प्रतीक
 माना यहाँ इश्वर व एव चिद्रमात्र का हम उपासना कर रहे हैं। हम
 उपासना का कुरान विषय करना है। ता तसज्जु विगणमनि व सा
 तिल कमरि वसज्जु तिरसाहिल्ली लसज्जुप्र इनकुम्पुम इयवायी
 ताऽऽब्रून अर्पान् तुम सूर्य धीर वाद्र का उपासना मत करो। उगने कामने
 मिपण मत करा। अज्ञाह का मिपण करा। जिउने मूय धीर चन्द्र का
 पण किया है जाकी भक्ति करा इमान करो। इस तरह स्पष्टरूपेण
 निषेध किया है। वैदिक धर्म ने कहा एक सत विप्रा बहुधा वदन्ति।
 स्य परमधर है। व एव ही है। यह निराकार है इसमें सब नहा
 वेविन उसका बन्धुधा याने बहुविधरूपेण वर्गन किया जाता है। ता अग्नि के
 रूप में मूय के रूप में वायु के रूप में या अनेक रूपों में उपासना उपा
 सना करत हैं धीर उसका ध्यान करत हैं। यदुत सागा का रूप पर आधेन
 है कि मिथ्या वस्तु का आधार लेकर आप उपासना करते हैं। आप
 परमात्मा का कल्पना मूय म करत हैं। यानी आप वाक्यात्मिक उपासना
 करत हैं। इसका उत्तर यही है सूर्य परमात्मा ही है। परमधर उ भिन्न
 का वस्तु नहा है। उसमें ये हमने प्रार्थना व विण एव वस्तु धुन ली ता
 गनन काम नहीं हुआ। अगर ऐसा होना कि परमात्मा मूर्ति के बाहर बही
 होता तो मान सबन ध कि मूर्ति म मे चीज लेकर परमात्मा का आरोपण
 मिथ्या आरोपण होता है। लेकिन जैसे तुषाराम ने कहा बेसा मातीचा
 पणपति। परि मातीची काप महती? निशपूजा निवासी पावे। हम
 मूर्तिना का विग बनाकर उसकी पूजा करत हैं। यह मिट्टी की पूजा नहा
 है। यह निव है धीर उमाकी हम पूजा करत है। माती मातीमाजी
 समावे। याने विन का विग बनाकर विन की पूजा करत है, उमा
 प्रिसर्जन करत है तो विन का निव की पूजा पट्टैवता है धीर व मिट्टी
 मिट्टी में मिन जाता है। याने भगवान् का आराधण उस पर हमने किया।

सत्य, प्रेम, कर्तव्य

वैराग्य और अनुराग का परस्पर स्थान

आज लोग यहाँ एक अच्छा प्रेरणा से एक अच्छा काम कर रहे हैं। यहाँ (शोभाभवन में) आने पर हमने यहाँ रहे हुए चित्र देखे। उनमें राम और कृष्ण का चित्र है। कृष्ण की भाव-सीता है और राम-जाम व सुन्दरी रानापण के पक्ष हैं। गीता का कृष्ण दत्त है और गङ्गा नगवान् की एक तमबाह है। इस तरह सब राम और कृष्ण का धारण एक ही किया यह बहुत अच्छा काम धारण किया है। लेकिन क्या ध्येय धारण नही। यह काम हमारे पूजक कर चुके हैं। श्री और हर यानी विष्णु और शिव में बर्णन नही है। इन सम्बन्ध विचार का हमारे पूर्वजा ने बहुत अनुभव के बाद सोच लिया है। यहाँ विष्णु के उपासक वैष्णव थे। वे प्रेम प्रधान थे अनुराग प्रधान थे। और सब थे शिव भक्त जो वैराग्य प्रधान थे। वैराग्य और अनुराग में पहले तो सम्बन्ध बना मानो उपासना एक-दूसरे का मित्रता जा रही है। ऐसा भास भक्तजना का हुआ जो अन्तर एकागी चिन्तन ही किया करते हैं। इतिहास काफी बदलता चली। आखिर इन राम और वैष्णव का सम्बन्ध का दान हुआ अन्तः उनके ध्यान में आया। एक सिन्हाडा है भगवान् का लिए अनुराग और दूसरा मित्रता है ममार का लिए वैराग्य। दाना का विराय नही है सुखता। श्रेता एक ही बन्धु के दो पहलू हैं। संसार का लिए अगर वैराग्य नही होगा तो ईश्वर का अनुराग अशुभ है। ईश्वर के लिए अगर अनुराग नही रहा तो ममार के प्रति रुचि रहेगी ही और वैराग्य नही आयेगा। इतिहास ममार-वैराग्य और परमेश्वर-अनुराग से परस्पर पापक बन्धु है विराधी नही। इन दाना

ठीक यही हाना है, जब हम मर जाते हैं। अन्तरात्मा परमात्मा में विदा हो जाती है। देह की मिट्टी ब्रह्माण्ड की मिट्टी में लाने हो जाना है। उसी तरह हम सूपनारायण की प्रवाह मानकर पूजा करते हैं, उपामना करते हैं तो गलत काम करते हैं ऐसा ठीक माना जाएगा। वह काम गान विराधी नहीं है। लेकिन सूर्य की तरफ की दृष्टि सीमित रही और सूर्य का अभाव में परमात्मा का अभाव होगा, ऐसा माना। जहाँ सूर्य का उदय हुआ, वहाँ परमात्मा का उदय माना। जहाँ सूर्य ऊपर चडा, वहाँ परमात्मा भी ऊपर चडे और जहाँ सूर्य का अस्त हुआ वहाँ परमात्मा का अस्त हुआ—वे समाप्त हो गये रात में अंधेरा पडा तो परमेश्वर क्षाम हुआ गया। इस तरह के चित्र खींचा के सामने खड़े करेंगे, तो भयानक घात होगी। इसलिए ये जो निपट करनेवाले कुरानवाने या अन्य निराकारवाण्ड हैं उनका भी हम पर उपकार है।

इन्हीं

—पञ्चाय के कामकर्ताओं से

बना। भाग्यनकार ने कृष्ण के वार में यह गगन बहा कि कृष्ण की जयन्ती
 निकल रही है। बहा कि कृष्ण-नाला का बगीचा बर रहा है। मयाग पलते
 राम वर्णित घोर कृष्ण-नाला का बाग था। राम घोर कृष्ण दातों का
 मनचय नगे हुआ था। अब भी राम-वर्णित के भग्न घोर दूगर के कृष्ण
 मयाग उतासा। एत मयाग में रहता है मयागदा का मयागदा का
 वर्णित बरौकात नाडि-वरायण धार दूगर मस्त मय जिताना मयाग
 मयाग है, जिय धानम-वर्णित ने 'गुटि' नाम दिया। मयाग विरह मयाग
 मयाग मयाग गुटि। इम विराय का भाग हुआ। राम के उतासा
 का वर्णित दस्तना है तो मुमसागदरा म दगिये। तुनसागदरा का भक्ति
 मयागदरा एव मयाग के नागर है। उतासा का भी भक्ति-वर्णित ऐसा
 म दिया, जिसे मयाग-वर्णित का भाग होता है। धारका मयाग
 मयाग आओशाना 'उन्-मयाग' मयाग न गीब गिरनेवाया मयाग
 है—मयाग से उतर आओशाना उन्-मयाग मयाग भक्ति दस्तना हो तो
 मयाग में दस्तना वर्णित। मयाग के पदों में धारको 'उन्-मयाग' भक्ति
 दस्तना है। राम घोर प्रेम का दस्तना में धारमयाग में विराय प्रभात
 दस्तना था। राम मयाग मयाग कि मयाग के मयाग प्रेम का विराय दस्तना
 मयाग है। दस्तना का मयागदरा हा मयाग है। राम घोर कृष्ण का मुनि दस्तना।
 घोर दस्तना जात है कि दस्तना मयाग के नाम भा दस्तना है राम-कृष्ण।
 दस्तना राम घोर कृष्ण मयाग। उन्-मयाग घोर घोर दस्तना 'दस्तना'
 दस्तना दस्तना है राम घोर कृष्ण का दस्तनादरा राम-कृष्ण दस्तना। यह
 राम-कृष्ण मयागदरा हा मयाग का दस्तना जात है। यह राम-कृष्ण दस्तना
 दस्तना दस्तना है। घोर यह दस्तना दस्तना है कि राम मयाग घोर कृष्ण
 मयाग का दस्तना दस्तना है घोर दस्तना मयागदरा दस्तना मयाग है।
 दस्तना दस्तना यह मयागदरा जो दस्तना यह का दस्तना दस्तना है। मयाग
 दस्तना दस्तना दस्तना दस्तना है। यह दस्तना दस्तना। दस्तना-दस्तना का दस्तना
 का घोर राम-कृष्ण का दस्तना का दस्तना दस्तना दस्तना घोर दस्तना का दस्तना
 का दस्तना दस्तना। दस्तना दस्तना दस्तना दस्तना है। दस्तना दस्तना में दस्तना
 दस्तना दस्तना दस्तना है।

का समन्वय हा सफलता है और करना ही चाहिए। तभी पूर्ण दर्शन होगा। इसका खयाल हमारे पूजता का आ गया था। यही तब कि 'हरि-हर' नाम की भा एक मूर्ति उठोने बना ला। हरि हर की मूर्ति माना जिसमे हरि और हर दानो जुट जात है। यह काम हमने पहले ही कर रखा था। आपने उमे यहाँ स्वीकार किया है यह अच्छी बात है।

मर्यादा और प्रेम का समन्वय

राम और कृष्ण को आपने इकट्ठा किया, यह भी बहुत अच्छी बात है। लेकिन इसका भी अर्थ हम आपको नहीं है। इसका अर्थ भी पूजता को है। रामचन्द्र सत्यावतार हुए। हमने उनका सत्यनिष्ठा का प्रतीक माना था और सब प्रकार की धर्म मर्यादा का स्वयं व्याख्यान करने तागो के नामने रखना यह उनके जीवन का सार था। पश्चान् भगवान् कृष्ण आये, जो प्रेम-मूर्ति थे और जिन्होंने मन्त्र प्रेम प्रवाहित किया। प्रेम के प्रवाह में मर्यादा टूट जाती है ता काइ हर्ज नहीं। प्रेम के अभाव में जा मर्यादा टूट जाती है के अर्थ है। लेकिन प्रेम के कारण, भक्ति की मन्ता के कारण जा मर्यादा टूट जाता है, उनका टूटना गलत नहीं अनुकूल ही है। इस तरह जब हम समन्वय करत हैं ता यह समझ में आता है। समन्वय नहीं करते हैं तो दाना में विरोध पैदा होता है। एक तो सत्यनिष्ठ नीति नियमों का हट आग्रहा धर्म-परायण, मयादा-मन्त्र और दूसरा उच्छ्रित मन्त्र मर्यादा को तोड़नेवाला और प्रतिज्ञाओं का भी परिस्थिति के अनुकूल अर्थ करनेवाला। एक प्रतिज्ञा परायण उसके अन्तर अन्तर में अत्यन्त निष्ठा रखनेवाला भावार्थ के साथ अन्याय का भी पालन करनेवाला। और दूसरा अन्याय का एक आर स्वयं भावाथ प्रदान करनेवाला में विरोध-का प्रदान हाता है। रामचन्द्र का चरित्र, आजकल तो उम हम 'राम-लीला' भी कहते हैं लेकिन यह पीछे से बना हुआ गान है। पहले तो रामस्य चरित्र महत्। चान्नाकि ने जब रामायण लिखी, तो कहा कि मैं राम चरित्र लिखता हूँ। चरित्र जिम अंग्रेजी में Life कहत है यानी जीवना। रामजी की जायना में लिख रहा हूँ, ऐसा वाल्मीकि ने

मानना हाठी है और सिंह में जो पराक्रम भावना हाठी है उनका योग होना है। सिंहों की पराक्रम-शक्ति और भेडा की समूह-शक्ति—इकट्ठा रहने की शक्ति ये जहाँ एकत्र हा जाती है वहाँ अहिंसा पनपती है। हम पराक्रमी हैं और फिर भी एकत्र काम करत हैं। दुबल लाग एकत्र हा जाते हैं—क्योंकि वे दुबल हो हैं। पराक्रमी लाग एकत्र नहा हात। अपने पराक्रम के घमण्ड में काम करत रहत हैं। पराक्रम भी हा और एतना की आवश्यकता महसूस करके सबके साथ मिल जुलकर काम करत हा, तब ता अहिंसा बनती है। इसलिए अहिंसा का एक महत्त चित्र बनाने के विचार से तीन सिंहा का एकत्र किया। दरअमल वे चार सिंह हैं। बैसे फाटी में तान दोखत है तीन आर व लेकिन वे हैं चार। चार शिशाओं म चार सिंह इकट्ठा हा रह हैं ऐसा उसने एक चित्र खीचा। अब अगोक का जा सिंह का सपना था वह मिट्ट नहा हुआ उस जमाने में, विज्ञान-शक्ति व अभाव म। उन दिना व्यापक प्रचार जन्मा हो ही नही सकता था। हम नौ साल स भारत में घूम रह हैं। बुद्ध भगवान् कोई पैंतास साल घूमे लेकिन हमारी बात दुनिया जानता है। बुद्ध भगवान् का तो तीन सौ साल बाद जब अगोक हुआ तब लोगो ने जाना। तब तक ता बुद्ध भगवान् का लागो ने जाना ना। इशामसीह को किसने जाना था? सौ-सवा सौ साल व बाद—सण्ट पान के बाद—बुद्ध खानकारी हुई थी। फिर पने वे धीरे धीरे और आज वे दुनिया में व्याप्त हैं। उस जमाने में जब ईसा प्लेस्टाइन में घूमत थे तब तो उसी क्षेत्र में उनकी जानकारां थी। आज ज्ञान प्रचार व बहुत बड़े माधन हमारे हाथ में हैं। इसलिए कहता हूँ कि एक मौका भारत को मिला है—अहिंसा का सिद्धि करके दुनिया का प्रेम-सन्देश देने का और प्रेम व रास्त से मामले हल करने की राह खिलाने का। ऐसा मौका, जा पहले कभी मिला नही था। अब हम दृष्टि स इस स्वराज्य का उपयोग करना चाहिए, न कि उसका सत्ता व टुकड़े इन बाँट लें। अराज्य तरह हम समझें कि अपना अपना स्वाय साधने व लिए एक मौका

अपुत्र अपसर

लेकिन आपने जो दो काम किये, उनके अलावा हिन्दुस्तान की सम्पत्ता की रक्षा व लिए और विनय-ध्याना जो हिन्दुस्तान का नाय है जिसे करने का मौका अभी आया है, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, उग लिहाज से और नया नाय करने का जल्द है। एक मौका हमको मिला है जो पहले न मिलता था। स्वराज्य प्राप्ति के बाद जो मौका हमको मिला है, उसका हमारे पार्लियामेन्टवाले सत्ता बोटन का मौका समझते हैं। लेकिन वे समझते नहीं। दरअसल आज मौका ऐसा मिला है, जैसा कि दस हजार वर्ष पहले मिला था। इतने वर्षों के बीच सारे भारत में एक राज्य अभी हुआ नहीं था। जो आज भी भारत का एक हिस्सा अलग हो गया है—पाकिस्तान के नाम से। अशोक के जमाने में भी हिन्दुस्तान का एक हिस्सा पाण्ड्य, खैल खान ऐसे तीन राजाओं के हाथ में था और अशोक के राज्य में शामिल नहीं था। आज वह दक्षिणी हिस्सा तो भारत में शामिल है लेकिन उत्तर का एक हिस्सा पाकिस्तान के नाम से चला गया है। फिर भी भारत का जितना हिस्सा एक राज्य में आया है उनका पहले कभी नहीं आया था। दूसरे विज्ञान का हमको आज जो लाभ मिला है, वह अशोक के जमाने में नहीं मिला था।

अशोक का सपना

अशोक ने क्या किया ? तान मिहा का एकत्र किया। तान सिंह एकत्र करके अपना एक अलग Symbol बनाया। अतः यह क्या पागलपन उगने किया ? आपने कभी सुना कि मिह बट्टा रहते हैं ? बवरी, नेड बगरह अपनी एक सस्था बनाकर रहते हैं, मिह नहीं रहते। वे भये-भयेसे रहते हैं। चाहे उनका साथ अपना परिवार भले हो, मिहनी हो बच्चे भी हो, लेकिन एक मिह दूसरे मिह के साथ मिल जुलकर रह और तीन मिह भाई भाई की तरह एकत्र हाने, यह असम्भव है। लेकिन ऐसा असम्भव चित्र अशोक ने बनाया। यह मुझने के लिए कि अहिंसा तत्र बनती है, जब भेदा में जो समुदाय

भावना होती है और सिंह में जो पराक्रम भावना होती है उनका याग होता है। मिर्छों की पराक्रम शक्ति और भेड़ा की समूह-शक्ति—इकट्ठा रहने की शक्ति, ये जहाँ एकत्र हो जाती हैं वहाँ अहिंसा पनपता है। हम पराक्रमी हैं और फिर भी एकत्र काम करते हैं। दुबल लोग एकत्र हो जाते हैं—क्योंकि वे दुबल ही हैं। पराक्रमी लोग एकत्र नहीं होते। अपने पराक्रम के घमण्ड में काम करने रहते हैं। पराक्रम भी हा और एवता का आवश्यकता महसूस करके सबके साथ मिल-जुलकर काम करते हैं, तब तो अहिंसा बनती है। इसलिए अहिंसा का एक सफल चित्र बनाने के विचार से तीन मिर्छों का एकत्र किया। दरअसल वे चार सिंह हैं। बस पाटा में तीन दोखत हैं तीन धार के लकिन वे हे चार। चारों दिशाओं में चार सिंह इकट्ठा हो रहे हैं ऐसा उसने एक चित्र खींचा। भद्र अशोक का जो सिंह का सपना था वह सिद्ध नहीं हुआ, उस जमाने में, विज्ञान-शक्ति का अभाव था। उन दिनों व्यापक प्रचार जन्मा ही नहीं सकता था। हम तो माल से भारत में घूम रहे हैं। बुद्ध भगवान् बाद पैंतीस माल घूम लेकिन हमारा बाग दुनिया जानती है। बुद्ध भगवान् का तो तीन सौ साल बाद जब अशोक हुआ तब लोगों ने जाना। तब तब तो बुद्ध भगवान् का लोग ने जाना न था। इगामसाह का किसने जाना था? सौ-सवा सौ साल के बाद—मेरे पान के बाद—बुद्ध जानकारी हुई थी। फिर पाने के धीरे-धीरे और आज के दुनिया में व्याप्त है। उस जमाने में जब ईसा प्लेस्टाइन में घूमते थे तब तो उसी क्षेत्र में उनकी जानकारी थी। आज पान प्रचार के बाद बड़े साधन हमारे हाथ में हैं। इसलिए कहता हूँ कि एक मौका भारत का मिला है—अहिंसा को सिद्ध करने दुनिया का प्रेम-सन्देश देने का और प्रेम के रास्ते से भगले हुए करने की राह खिलाने का। ऐसा मौका, जो पहले कभी मिला नहीं था। अब इस दृष्टि से इस स्वराज्य का उपयोग करना चाहिए न कि उसका मत्ता के टुकड़े हम बाँट लें। असी तरह हम समयों के अपना अपना स्वाध्याय साधने के लिए एक मौका

मिला है। ऐसा हमें नहा समझना चाहिए। मार यह कि हिन्दुस्तान के सामने जो बग़म मौजूद उपस्थित है और हिन्दुस्तान का अहिंसा का जो मिशन पूरा करना है उसके लिए आपने यहाँ इतना जो समन्वय साधा, उसमें एक बग़म आने जाकर और एक समन्वय साधने का ज़रूरत है। वह यह कि भगवान गौतम बुद्ध का भी यहाँ स्थान देना चाहिए। हरि हर का आपने इकट्ठा करके बहुत अच्छा किया। राम कृष्ण का साथ रखा या बहुत अच्छा किया। हरि हर इकट्ठा करने में आपने अनुराग और बराबरी को एकत्र किया। राम-कृष्ण को इकट्ठा करके आपने सय प्रार प्रेम को इकट्ठा किया। दाना पाम बड़े अच्छे किये। अतः सत्य प्रेम के साथ बहुरा का जाह देना चाहिए।

सत्य प्रेम के साथ करुणा को जोड़ो

गौतम बुद्ध का रूप में हिन्दुस्तान में करुणा अवतीर्ण हुई थी। आज दुनिया स्वीकार करती है कि कारुण्य अवतार शाक्यमुनि की बुल दुनिया का ज़रूरत है। उन गौतम बुद्ध का हमको समझना चाहिए मानना चाहिए, कबूल करना चाहिए। इतनी शकल हममें होनी चाहिए। समझने का ज़रूरत है कि गौतम बुद्ध हिन्दू थे और हिन्दी थे। उन्होंने किसी नये धर्म की स्थापना का विचार नहीं किया था। जैसे कबीर ने एक मुबार पेश किया वैसे उन्होंने हिन्दू धर्म में एक मुधारमात्र पेश किया था। उसके बाद धीरे धीरे उसका पय बना। एक प्रचार बना—पय बना यह बात की बात है। लेकिन व ती एक उपासना के तौर पर अहिंसा का प्रचार करते थे और दीक्षा देन थे। ऐसे गुरु होत थे, जैसे हिन्दुस्तान में कई गुरु हाल है। उनसे अन्तर अन्तर कई गुरु होने हैं। और ये गुरु अपने अपने विचार की दीक्षा उन गिप्या को देते हैं जो दीक्षा लेने का तैयार होते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि वे उस धर्म के बाहर चले आने हैं। गौतम बुद्ध हिन्दू ही जाते थे, हिन्दू ही मरे थे और हिन्दी थे। य धर्म हम भूखी नहा चाहिए और उनका फिर से रिक्तेम करना चाहिए। आजकल लक्ष रिक्तेमेशन करने हैं। परती जमीन का हम रिक्तेम करते

ह। जसा तरह गौतम बुद्ध का रिश्तेम करना चाहिए और कहना चाहिए, 'तुम पर दुनिया का अधिकार है। चान जापान का है इसमें कोई शक नहीं। लेकिन हिन्दुस्तान का भी है। हिन्दुस्तान का बुद्ध अधिक ही है। एक विचारक का नाम तो सारी दुनिया का मान्य उनका सम्बन्ध है। परन्तु उनका जन्म भारत भूमि में हुआ था। इस कारण उनके नाम का माय का उनका वासनाएँ यहाँ भारत में काम करती थी उनका लाभ भारत का क्या मिल सकता है और मित्रता चाहिए। अतएव राम और कृष्ण का माय बुद्ध का जान लिया जाय यह अच्छा रहेगा। लेकिन यह विचित्र बात काय हम कर रहे हैं ऐसा नहीं। यह काम भी एक तरह से हमारा पूज्य ने कर ही रखा है। क्योंकि राम को एक अन्ततः कृष्ण को उमक का और बुद्ध को सामरा अन्ततः मान ही रखा है।

बुद्धावतार

आजकल हम जितने धार्मिक काय करत हैं हिन्दू जितने धार्मिक कार्य करत हैं वह सबक सब 'बुद्धावतारे' वैशम्बत मन्वन्तर। आज वैश्वत मन्वन्तर में हम धर्म-काय कर रहे हैं, नमन को उत्तर दिया म काय कर रहे हैं। जो दक्षिण में हैं वे नमनाया दक्षिणे तीरे बहुत हैं। हमारा धर्म-काय यहाँ से चलता है वह स्थान दिखाना पता है। नमनाया का माय सम्बन्ध जानकर पता नमो के उत्तर में फनी नमी के दक्षिण में काम कर रहे हैं ऐसा जानना पडता है। सत्य करना पता है जब कि नम बाद धर्म-काय करते हैं। और किम बाल म हम काय कर रहे हैं ? तो जानना पडना है 'वैश्वत मन्वन्तरे'। इस समय वैश्वत मन्वन्तर चन रहा है। मानवाँ मनु वैश्वत। चौह मनु है। छह मनु ही गय, मानवाँ चन रहा है। मान और हाँ। कुछ मिलाकर लगभग चार सौ बगल मान हा जाते हैं। जो पुराण का इतिहास है वह मान मन्वन्तर का काय जाना दा करान मान का। वीराणिका ने ध्यान जाया कि पूजा का बने दा सौ करान मान हा गय। और मुझे कहल हूँ मुना हाता है कि यह एक इतिहास है कि वानिव भा माने हैं कि पूज्यो को नमति

का करीब दो सौ करोड़ साल हुए हैं। पुराण के अनुसार पृथ्वी का रहने में और दो सौ करोड़ वर्ष लगेंगे। दो सौ करोड़ साल में पृथ्वी सत्य होगा यह अभी विज्ञान बोल नहीं रहा है। वह इतना ही बोलता कि पृथ्वी का बने हुए दो सौ करोड़ साल हो गये। अब हिन्दुओं की कल्पना यह है कि पृथ्वी को बने दो सौ करोड़ साल हो गये हैं, करीब दो सौ करोड़ साल पृथ्वी और रहेगी। और हमें वास्तव में पृथ्वी का प्रलय होगा, ऐसा उलाने माना है। चौदह मन्वन्तर मान लिये और उसमें में सातवाँ मन्वन्तर उस समय चल रहा है। इसलिए इस मन्वन्तर में हम यह धर्म-निरूपण कर रहे हैं ऐसा कहा जाता है। किस विचार के मातहत हम धर्म-निरूपण कर रहे हैं? जहाँ हम कहते हैं मधु-मेघ-मधु के माफन करते हैं भारत सेवक समाज के माफन करते हैं उसी तरह धर्म-निरूपण में किस विचार के मातहत काम करते हैं, यह बताना पड़ता है। ता बनाया जाता है बुद्धावतार। हिन्दुओं के धर्म-निरूपण हम जा भी धर्म-निरूपण कर रहे हैं धर्म का काम ही दान का काम ही लोग क्या बोलते हैं? बुद्धावतार। बुद्ध के अवतार में हम काम कर रहे हैं। याने बुद्धावतार अभी चल रहा है। उनका मानतहत हम काम कर रहे हैं। तो यह बात भी हमारे पूर्वजों ने समझ ली थी और काफी कष्टमय का वाद समझ ला थी। जैसे त्रि-हर की कष्टमय निरूपण थी धर्म और वैष्णवों की धर्म में समन्वय हुआ जैसे राम-कृष्ण की कष्टमय हुई था वाद में समन्वय हुआ जैसे ही बौद्ध विचार की और वैष्णव विचार की कष्टमय हुई थी और कुछ समन्वय कर लिया लेकिन पूरा समन्वय उनका नहीं हुआ। जगत् हरि-हर का पूरा समन्वय ही हुआ, राम कृष्ण का पूरा समन्वय ही हुआ जैसे वैष्णव और बौद्ध विचार का पूरा समन्वय नहीं हुआ। कुछ किया। गौतम बुद्ध का अवतार समझार माफन कर लिया। और जा करता बाकी रहा है यह आप अगर कर देखें ह और गौतम बुद्ध की एक मूर्ति यहाँ खड़ी कर देने है और यह समन्वय भा जाता है ता सत्य प्रेम-कल्याण लाना का समागम होगा।

सब धर्मों का सार—सत्य प्रेम करुणा

हम प्रायना म अक्सर कहते हैं—भगवान् में प्रायना करते हैं। हमने खिन्न टाला है। पाँच-छह माल का बुद्ध। प्रायना म हम भगवान् से 'सत्य प्रेम और करुणा का माँग करते हैं। ये तीन अवतार एक क बान एक भारत में हुए। राम कृष्ण बुद्ध—सत्य प्रेम करुणा। और यही सत्य, प्रेम करुणा सब धर्मों का सार है। सिर्फ भारत का नहीं। सत्य निष्ठा उपनिषद् का विषय है जना का मत्पनिष्ठा ही प्रमाण है। करुणा का विचार इमनाम म और भक्ति-भाग में प्रधान होता है। रहमानुरहाम कहते हैं। प्रेम का विचार कुछ भक्ति-भागों में और इसाइयो में प्रधान है, अहा व God is Love कहते हैं। इस तरह सत्य प्रेम करुणा में दुनिया के सब धर्मों का सार आ जाता है। सत्य प्रेम करुणा कर्म में क्रिस्तियान के इतिहास का सार आता है। इस तरह भारतीय इतिहास का सार और दुनियाभर के सब धर्मों का सार भित्तर के तीन गुण बनते हैं—सत्य प्रेम और करुणा। भगवान् म तो अनन्त गुण हैं। तिस पर भी इन तीन गुणों का आवृत्ति हम करते हैं ताकि हमारा भक्त हो।

गीता का स्वाद

अब गीता के विषय में मैं कहूँ। यो तो ऐसा अचिन्त्य विषय लेकर बोल रहा हूँ कि धर्म वातुगा, ता भा मुझे पकान नही आवेगा। गीता बड़ा विचित्र ग्रन्थ है अचिन्त्य ग्रन्थ है। हर ग्रन्थ का एक बदन होता है। जैसे काइ भी फल दिवने बिना खिन्नता नही बुद्ध न बुद्ध दिवना होता है। बाहर की हवा का खराब असर उम पर न हो इसलिए अचार के लिए एक दिवना होता है। वैसे धर्म-ग्रन्थ पर एक दिवना हुआ करता है। जम बेले का दिवना उतारकर धर्म का माल लेते हैं वैसे ही धर्म पर का दिवना धर्म-ग्रन्थ पर का दिवना उतारना पता है और धर्म का माल पता है। गीता पर जा दिवना है यह बहुत बड़ भक्ति और सत्य है नारियन जैसा है। गीता ग्रन्थ नारियन के समान है। उसका उपर

लिखता ह्याता क्या बलि है। अगर बरसों का हाथ पर पाय तो क्या करेंगे ? उनका पता ही नहीं चलेगा कि अन्दर क्या है। जो उमका छालना आनेगा उस पता चलेगा कि अन्दर सार-गमन वस्तु भरती है। ऊपर का ही लेंगे तो क्या फिर पर पत्तोंके उसका ? क्या करेंगे व नारियल की दीवार ? अतः गाता का जो ऊपरी दिक्का है, उसमें युद्ध की गमन्या सदा कर दा है और आमने-सामने भाई भाई लड़ रहे हैं कुछ लगे रहे हैं और प्रजुन है, जो उठने से मात्र आरंभ है परवृत्त हो रहा है। आत्मा का अमरता दह का तुच्छता याग बुद्धि भक्ति ध्यानयाग, त्रिगुणातीत होने का वृत्ति और धेन-धेनन का पूजन कराना आदि पञ्चम धार्मिक उनका पीढ़ लगाकर मारा तत्त्वज्ञान कहकर भगवान् उसको युद्ध में प्रवृत्त कर रहे हैं। अतीत का दान है कि एक भौतिक युद्ध में और जहाँ भाई भाई लगे रहे हैं, ऐसे युद्ध में यह प्रत्येक प्रेरणा दे रहा है। इसलिए इन सब का ऊपर का दिक्का के कारण बहुत नाम बढ़कर गये। नारियल के अन्दर की चीज का आन जानने, यह तो पता नहीं नारियल का क्या समझ बैठेगा ? इसी तरह हुआ भी है। स्त्री तरह अनादिष्टा ने गीता का उपयोग किया। गीता के नाम ने महात्मा गांधी काम करने भी और स्त्री गीता के नाम से हयारे ने महात्मा गांधी पर गाथा बनाया थी। अभिमानी और प्रेमी दाना ही गीता के वाचक माने हैं। यह सारा इसलिए हाता है कि गाता के ऊपर का दिक्का बहुत मजबूत बहुत मजबूत है। उसे दूर करने में क्या परिश्रम होना है। जो उतारना नहीं जानता, वह दाना में लोडने लगता है। उसको दूसरा ही स्वाद आता है और कहता है कि गीता का ता 'यह' स्वाद है। ललित गीता का असली स्वाद तो ऊपर का दिक्का हाने पर ही आता है।

इति

गीता अध्याय में

एकचित्त, समानचित्त और सहचित्त

व्यक्तिगत, सामाजिक और आध्यात्मिक

'सहचित्त, एकचित्त और समानचित्त ये तीन परिभाषित शब्द हैं। एकचित्त' प्रत्यय का लक्षण है और ऐसा प्रत्यय सम्भव ही सकता है। समानचित्त समान-कायक्रम बनाने में मददगार हो सकता है पर 'सहचित्त' वह शब्द है जिसमें एक-दूसरे के सामने एक-दूसरे के तिन तिन बातें हैं। साधना में एकचित्त व्यक्तिगत है। हर मनुष्य को थोड़े समय के लिए प्रत्यावस्था में जाना चाहिए सात होना चाहिए—धरने में रहना। सब प्रकार के विचारों के मूल में जिस शक्ति से वे विचार निकलते हैं उसमें पहुँचने का मोटा मिलता है। निद्रा में घूमना आता है। जहाँ सबका एकचित्त होता है वहाँ सामाजिक प्रत्यय होता है। अगर किसी प्रयत्न में सबका एकचित्त बनना तो सबका मुक्ति मिलेगी। अगर किसी सामान्य काम में भौतिक दृष्टि से एकचित्त होगा तो प्रत्यय होगा। धार्मिक दृष्टि से एकचित्त होता तो मुक्ति मिलेगी। छाया प्रत्यय होगा। व्यक्तिगत तौर पर एकचित्त हम कर सकते हैं उसका एकाग्रचित्त कहते हैं। चित्त के धरने पर पहुँचें और कल्पनाएँ हैं। एक कल्पना का पकड़ने से उसमें जो शक्ति और शक्ति मिलती है उसमें समानचित्त बनने में मदद मिलती है। सामाजिक काम के लिए उनका बहुत उपयोग नहीं होगा। आध्यात्मिक काम के लिए व्यक्ति का सहचित्त की आवश्यकता है। उसमें पूरा तिन एक-दूसरे के सामने खाल सकता है। जैसे आपस में हम मिलते हुए खुले हुए बातें हैं जैसे ही इसमें होगा। जस मूर्ति खुली है, तन्मूर्ति हमारे सामने है जैसे ही हमारा तिन खुला होगा तो सहचित्त बनने में मदद होगी।

समारम सहचित्त दुर्लभ

सहचित्त के आध्यात्मिक लाभ भी है। मनुष्य अपने गुण-दोषों के साथ मृष्टि के सामने खुला है। यह मामूली बात नहीं है। इसी तरह साधक लोग कामन ग्राउंड पर आये और सहचित्त बनाये। उससे गुणा का सकलन होगा। गुणा का योग होगा और दोष निरसन के लिए मन्त्र हागे। जहाँ यह क्रिया नहीं होती वहाँ साधक-वर्ग का सहचित्त नहीं होता और वहाँ अभिप्राय अनग अलग देन के ऊपर ऊपर के स्तर के होन है। माके के स्तर में याने अन्तःकरण में वे नहीं पहुँचते। बाहरी दुनिया के साथ हा व हात है। चित्त में अनेक स्तर होते हैं। बिलकुल ऊपर के स्तर में ओपानियन यानी अभिप्राय होते हैं। अभिप्राय के लिए क्षीरार्थ पेश करत है। यभी-यभी के झलके हमें नहीं जँचती हैं तो कामन ग्राउंड नहीं रहता है। उससे सहचित्त बनने में मदद नहीं मिलती। लेकिन यह सारा चित्त के ऊपरी स्तर में होता है। यह सारी हलचल चित्त के ऊपर ऊपर के स्तर में होती हैं। अन्तःस्तर में जहाँ गूढतम भावना होती है वहाँ ये नहीं जाना। सहचित्त में मनुष्य जावन का गूढतम भावना को दूसरों के सामने मानता है। यही भोग संसार में दुर्लभ है परमार्थ में भी दुर्लभ है। समारम परिवार में माता पिता वहाँ क्यों तब साथ रहते हैं, पति-पत्नी भा जीवनभर साथ रहते हैं लेकिन उनका सहचित्त नहीं बन पाता। ऊपर ऊपर के स्तर में एवता होती है पर अन्दर के गूढभाव में एवता नहीं हो पाती। वहाँ सशय भा पडा है दावा भी पडी है। पता नहीं कि उसकी चित्त के क्या है—यस तरह उलट-मुलट गवाएँ मनुष्य करत है। प्रेम है इसलिए व्यवस्था एक बनती है लेकिन सहचित्त नहीं है। जमे पावता परमेश्वर एक है और चित्रधार ने अथनारानटेश्वर का चित्र बनाया है उसमें हम देखते हैं कि दावा पति-पत्नी एकरूप है उनका चित्त, हृदय एक ही है। बाकी के व्यवहार अनग अलग हैं। ऐसी मिसालें हजार में एकाध हो सकता है। इसलिए मैंने कहा कि समारम में सहचित्त दुर्लभ है।

चित्त के स्तर

कारणाधिक क्षेत्र में भी सहचित्त दुर्लभ है। क्योंकि सायक ऊपर ऊपर क स्तर में एक होने हैं। ऊपर ऊपर के क्षेत्र में अभिप्राय होना है और नीचे के क्षेत्र में विचार होना है। अभिप्राय और विचार अलग अलग है। साक्षात् उसी नीचे के स्तर में विचार हात है। उद्योग वाग बनना है। और व वाग चित्त के ऊपर छिन्नके में होने है। उसमें सायक रखे है। त्रिम मणि के परिणामस्वरूप चित्त में सहारे उठता है उसे विचार कहने है। विचार का स्तर ऊपर का है। उसके नीचे विचार का स्तर है। उद्योग नीचे नीचे भाव-स्तर है। उस स्तर पर भा सायक एक नया हात। वे विचार का सर्वा करते रहने है वायप्रम का सर्वा करत है। यह सायक ऊपर ऊपर के स्तर में हाता है। मैने अपना कहा कि नीचे के स्तर में भाव हात है लेकिन उसी नीचे नीचे एक स्तर है त्रिम अभाव कहत है। वही मनुष्य माना का भूमिका में धाता है। फिर विचार और विचार का भाव नही रहता। इसलिए भाव व चित्त। याने भाव नाम। उसका धर्म है धारणा। मैने उस अभाव वाक्यर भाव लागों में यह भावना पैदा की कि भावना धर्म में कुछ धर्म किया है लेकिन मरु मउमय य। है कि धर्म मनुष्य धारणा का भूमिका में धाता है। इसलिए मैने उस अभाव बना। भाव के स्तर पर सहचित्त अभी तदा हाता। सर्वा हागी। विचार धर्म में भा सहचित्त नहीं हाता। निर्विचार ता भाव ही है। उसमें हम नीचे पहुँचत है। परिणाम-स्वरूप मनुष्य का मूढ़ भावय अत्यन्त रह जाता है मानुष्य नहीं हाता। एतन्मत्ता धर्म-धर्म काय में मय हात है। एक मनुष्य एक मय या एक वैश्विद हाता है। उसमें दय-वीच धर्म है। व एक निम्नकर बाह्य वाक्यम का सर्वा करेंगे। निम्न-सुन्दर बाह्य मूढ़ विचार करेंगे लेकिन भाव का सर्वा नहीं करेंगे। यह बाह्य मूढ़ या हा रह जाता है। और जो मूढ़ रहता है उस मनुष्य धर्म भा कनाकम नही समझ पाता। धर्म धर्म व भाव का धर्म पहचानत नहीं है। या पहचानत है भा धर्म न। पर मूढ़ या धर्मक बाह्यो स धर्म बनता नही।

चाहते। एक व या दानान दरावने अगा बतबर रहता है। धार हाता यह है नि सम्पत्-दान नहा होता।

भाव प्रकाशन

जिसे हम ओपन बुक (खुला विचार) कहा है, वह हमारे लिए आपन तो है फिर भी वह पूरा खुलती नहीं है। कुछ ऐसा भाषा है नि वह मेरे लिए सम्भूता मुदित है इसलिए विचार है आपन है लेकिन अन्तर की भाषा नहा सम्भूता है। वस ही ओपन बुक जैसे रहनेवाले भाषा के अन्तर में कुछ भाव पड़े हैं थ मे नही सम्भू मरता है। भाव प्रकाशन की कागिण दुनिया म होता है, फिर भी भाव का पूरा प्रकाश हाता ही है यह नही मानना चाणिए। कइ गुसनाएँ लागी की रखती पडता है। कोई राजनैतिक होने हैं उनरे पास कुछ ऐसा गुसनाए रखी है, जिनकी पुनिया बाँध-बाँधकर ने अपने पास रखने हैं। लेकिन जा साथ होत है उनरे पास ऐसा ऐसी गुसनाएँ क्या होनी चाहिए ? उनका धारसी सम्पत् ऐसा होता चाणिए कि थ एक-दुमरे के पास अपना गुहा सालन है जीवन का गोपनीय अंग प्रकट करन है। अगर ऐसा हाता है ना उम भाव-प्रकाशन का मदद दिनेगी। वह बीज दूसरे के सामने प्रकट न कर सकन हो इसलिए पुडिया बाँधा है उम भी भूरता नहीं है। क्योंकि उसकी जिम्मेवारी हम पर है इसलिए या भी रखता है और दूसरे के सामने प्रकट भी नहीं करना है। एत हातल म भाव प्रकाशन पूरा होता होगा, फिर भी कही-बहा वह पूरा नहा हाता है। इसलिए जिनका भाव पूरा प्रकाशित हुआ हाता एसा मनुष्य दुनिया में अगर हा ता वह कुल दुनिया प्यारा हाता। गीता म आता है कि साथ जिन पर पूरा भरासा करते हैं और जिसके लिए किसान ना अरुचि नहा हाती और उस भी लागी के लिए अरुचि नहा है, वह लागी के साथ एबाध हो गया है। लोग और यह मनुष्य एवात्म हो गये हैं।

शुक्ल का सम्पूर्ण भाव गुला धा

भागवत में क्या है कि गुरुदेव नग्न धूमा करत थे। स्त्रियाँ उह

दयगी था, लेकिन उह विनी प्रकार ना सवाच नहा प्रतीन हाना था । जम बच्चा भूमता है वेन हा थ भूमन थ । कहा गया है कि एक जाह स्त्रियाँ स्नान कर रही थी । य सब पानी में थी, नमन था । उसी रात्रि स ब्यास भगवान् जा रह थ । व कपड़ पहने हुए थे, ता ना स्त्रिया का सवाच हुआ और गुनदव उम रास्त स गय ता सवाच नहा हुआ । भावार्थ यह कि गुनदव क सम्पूर्ण भाव स्त्रिया थ सामने खुने थ जस मामूम बच्चे हैं । उनका जो भा भाव हाता है, वह सबक सामन पूरा गुना हाता है । वसी ही स्थिति गुनदव की था ।

भावों की पुडिया न बोंवें

जिस मनुष्य का भाव एम तरह दुनिया क सामने खुता है वह जानपुखुं न होने क कारण चाह विश्वात्मा न बनता हा पर उमक मन में किसी प्रकार का सकोच नहा है । जो कुछ है, खुता है । वह ज्याग तो नहा है फिर भी जितना है उतना पूरा खुला है । उपनिषद् में कहाना है कि जस बालक का मन हाता है वेस हा जिमका निष्ठाप मत हाता है उमक लिए हरएक के मन में प्यार हाता है । अगर औरत न हा ता मनुष्य थापा होगा । कान काम न करन हा ता बहरा हागा । लेकिन इन सबक गिना मनुष्य का चलता है, प्राण क बिना नहा चरेगा । मन के दिना भी चलता है, जसे बालक । व अ-मन हात है । उनक पास मन हा नहा है । एमलिए बालक व्यवहार नहा जाना है ऐसा मानस-शास्त्र कहत है । मूमस्पर्श बच्चा क मन थोडा काम करत हाग फिर भी कुछ मित्राकर उनक पास मन नहीं है । वे मना रहित हात है । यह ठीक है या बेराक नहा वह मकउ लेकिन धानने की बात है । कहन है कि बाप म, जस-जम यातक भी उम्र वन्ता है, वैम-वैस मन उठता हागा । लेकिन जो कुछ उसक पास है, व खुता है । इमे ता प्रवागन मानना ही हागा । गाधीजा कहा करन थे कि अपने चित्त में पुडिया मउ बांधिय और उटाने दुनिया क सामने अपना सारा चित्त खालकर रना था । ऐसा उन्हाने बाशिग की । मैने दूसर-नासुरे एमे कद साबद दते है जो अपने चित्त में पनिया रखन ह ।

आरम खुद से हो

सहजित में हमारे मित्र व जो धनमान है, व साथिया के सामने घुन जायें भने ही साथी के न खुलें। आरम में यह होगा कि हमारे भाव उमक पास खुलत है इस कारण सम्भव है कि इमक भा खुलेंगे। उमके भाव मरे पास खुलेंगे तभी मेरे भाव उमक पास खुलेंगे ऐसा नही होना चाहिए। कुन सृष्टि के साथ हमारे भाव खुले हो तो बहुत बड़ी बान होगी। नेकिन कम स-बम अपने साथी के पास ता खुलने ही चाहिए। यह नटा बठना चाहिए कि मेरे मित्र का भाव ता मैं तब खो नूगा जब उसका खुलेगा और वह नटा खालता है ता मैं भी नटा खारंगा। जैसे डिम् प्राममिष्ट का बात हाती है कि पटल सामनेवाला टिस प्राममिष्ट रहेगा तभी हम बरेंगे। एस करार न मिल नहीं सुलता। आरम अपने से करना चाहिए। साधु-मुख्य अपने स ही आरम करते हैं और सृष्टि क सामने उनका भाव खुले रहन है। हमारे भाव कम-से-कम साथी के सामने ता खुलने ही चाहिए।

इंदौर

—कायकर्ता-वग मे

११ ८ '६०

अनग है। जहाँ धृष्टा होती है वहाँ अज्ञान पर जलन रखने की शोर बनें करने की शक्ति प्राप्त होना है। जहाँ अभी सेवा करने की शक्ति धृष्टा व साथ अज्ञानी है। सम्भव है कि वहाँ बुद्धि या रास्ता न हो या बुद्धि तो बलवान् जचनी न हो। बुद्धि यह निगम्य करती है कि रास्ता ठीक है या नहीं। परन्तु दोनों में विरोध नहीं है। दोनों परस्पर पूरक ही रहते हैं। लेकिन हा दोनों मारित्रक। अमुक मनुष्य में बुद्धि ज्यादा है और धृष्टा कम है अथवा धृष्टा ज्यादा है और बुद्धि कम है यह कहना ऐसा ही ठागा कि इन्द्र का बड तेज है लेकिन अश्व उतनी तेज नहीं है, कमजोर है। जैसे अश्व और अज्ञान के विषय अलग है वैसे धृष्टा और बुद्धि के विषय अलग अलग है या साथ है। लेकिन यह ध्यान में नही आता। ये लोग कहते हैं कि गहनवाला में धृष्टा ज्यादा होती है वे जगत् सोचेंगे नहीं तथा गहरा म बुद्धिमान् लाग ज्यादा हैं लेकिन वहाँ धृष्टा का कमो है। इसमें यह सूचित किया कि वे बुद्धिमान् हैं यानी वे हमेशा विरोध करने होंगे। ऐसा मान ही लिया। वास्तव में इन्द्र का कोई लक्षण नहीं है। दोनों जैसे बिलकुल भिन्न मात्र ही दोनों के भिन्न फलान् हैं।

प्राण-शक्ति और धृष्टा शक्ति

वचन में मेरे दादा चांद्रायण का व्रत करने थे। चंद्रमा राज दो-चार भाग मिनट घड़ी से ही उगता है। वने चंद्रमा रात में होता है और दिन में भी होता है। चौकीम घंटे हुआ करता है। लेकिन रात में दीखना है। उसकी काना जैसे-जैसे घटती थी वैसे वने मेरे दादा का खाना कम होता था। और वे एक ही दफा खाना खाने थे। एक और बात थी और वह कम-बोनी होता था जते चंद्र की कला घटती-बढ़ती थी। पूणिमा के राज के पंद्रह और खाने थे और अभावस्था के रोज नून। मान एक फटा ता पूरा होता था और उनका माना अनियमित होता था। लेकिन चंद्र के साथ नियमितता था। मनलव, चंद्रमा राज अपने उष्य का समय बल्लना था। आज शीत-सी शिथि है यह हम दादा के

है। मानवान् को याद करके हमारा जिन भर घाता है, तो ऐसी प्रार्थना का अप्यायित अमर होगा ही। लेकिन प्रार्थना यात्रवत् होगी तो उसका फल नष्ट होगा। इसलिए वे सारी धृढाएँ बुद्धि के साथ जुड़ सकती हैं। पर भई ने कहा कि प्रार्थना में ऐसा महामुष होता है कि हम यात्रवत् नीच बनते हैं। रोज सोचते हैं, बड़ी बातें हैं जिन एक ही गलत म हम रोज बात है, तो जिना प्रवधान व भाचन सजते हैं। बनी-कमी कल-सोच भी बन सजते हैं बने प्रार्थना में सारे-भात भी इलाक वाक सजते हैं। इसलिए प्रार्थना में रात निप नये-नये भजन होने चाहिए और अन्त फलप्र प्रार्थनाएँ होना चाहिए। और उसमें अगर समय हा सजते है तो अच्छा है। मैंने इसमें दलील थी। धर गृह दलील का विषय ग्य है। लेकिन जहाँ जहाँ घाता है, वहाँ मैं शान्त करता हूँ। राजमरा सने के प्रान्तेम्य भात वानत है तो खाता अच्छा लगता है लेकिन गला घाटेम्य रोज नर्त वान्त है। जो मुख्य घाटेम्य है व रोज टत है और दूसर घा टेम्य रोज वान्त है। मतलब दाल रोग कायम रहती है सरकारी चन्ना बनती है। इस तरह कुछ घाटेम्य रोज वान्त है और कुछ कायम रहते हैं। इन ही भजन म कुछ धार्मि ऐसी हों ना रात हम धार्मि और कुछ एगी हा तो निप बदलें।

जिन भागो पर हमारे धृढा हाता है, उनको बातों का हमारे चित्त पर धर हाता है। कुछ जग ऐन हात हैं जिनका धार्मि मानना मुश्किल हाता है। यह धृढा हम क्या हातें? धृढा बर्न-शक्ति है। अगर धृढा का धार्मि है तो बन धार्मि हात हाती है और गनत धृढा म धाम गनत हाता है। इसलिए धृढा होने की धार्मि और शक्तिव हाता चाहिए। बुद्धि हाता धार्मि ना हा जिना नष्टा भूमेग। मानव ने गृहस्थान विद्या है। हमने लिखा है कि गरुड धार्मि मिनट में धृढा मील दूर जाता है। धार्मि बहो, धार्मि व धार्मि हा तो जिना मायुष नहीं हाती। पर बह टाता हाता ना शान्त। यह धार्मि गरुड का टातने व निप का मानव है। हा वर उड़ मने मारना गह कर्त वेग रहता। मैं

किया, ऐसा नहीं कह सनत। उसकी एक अजीब श्रद्धा थी। यहाँ तक कि उमने अपने देग को सनाह दी—जा देग भांसाहारा था उस देग का सलाह दी—कि गो-भास खाना बन्द कर दा। यह गाय और बैल के प्रेम के लिए नहीं, किन क डब्ब बाहर से आने के इसलिए। कुछ क समय उस बन्द करना ही उमको ठीक लगा। यह सब श्रद्धा कराती है। मेरे दाग की श्रद्धा और हिटलर की श्रद्धा दोनों ज़दा हा हैं। अगर उसक साथ बुद्धि हा, ता यह गलत िगा में काम नहीं करेगी लेकिन बुद्धि हो और श्रद्धा न हा, ता काम नही बनेगा। इसलिए श्रद्धा एक स्वतंत्र गति है।

श्रद्धा और बुद्धि का मेल

जब मैं माध्यम में था तब सोचना था कि हम लोग प्रार्थना करते हैं और तजदीक के कमरे में एक रागा सा रहा हा ता हमारा जार-जार में प्रायना करना कहीं तक ठीक होगा ? मेरे दाग क मन में ऐसी बात नया आती थी इसलिए मुझ सोते हुए को के जगत के लेकिन मेरे मन में यह बात आती थी कि रोगी की निगा में खलल पहुचाना कहीं तक उचित है ? यह टाक है कि उसे तकलीफ तो होगी, लेकिन मुमकिन है कि इस प्रायना से उमका healing भी हो जायगा। माने बट उसक लिए अनुकूल भी हा, लेकिन मैं यह सोचना था कि गायर उमे तकलाफ हानी है, ता क्या करना चाहिए ? जा रैगनेलिस्ट बुद्धि है, बह ऐसा माचनी है फिर भी प्रायना में प्राध्यात्मिक धरा है हा। ता मैं सोचता हूँ कि तजदीक अगर बीमार है ता बह प्रायना की आवाज से उठेगा। मेरी प्रार्थना में श्रद्धा है, ता उम भी जाना हा चाहिए यह मैं नहा कह सकता। अगर प्रार्थना में उमरी ज़दा है तो उसका उमने मदद मिलेगी। अब हम पर दो मत हा सकते हैं। लेकिन श्रद्धा और यह विचार दाग भूत प्रार्थना में नहा हा सकते। हमें देखना है रोगी को तो हम यह कह सकते है कि दाग, मौन रखकर बैठें और मौन प्रायना करें। यह अगम्य नहीं है कि उम मौन प्रार्थना का भी अगर उस पर हो। श्रद्धा से अगर हम ऐसा प्रायना करतें हैं तो जरूर उमका असर होगा। मौन में बैठे हैं पूरा ध्यान लगा है तो अगर पन्ना

इसलिए 'याग जलानं ह बुद्धि वा । ध्यात्वा जनाउषेया है जिसके पास एक विचार और श्रद्धा है । 'स्मृतिश्च ध्यायन्' लिए वा 'तव' वाप नग होगी । नय नय विचार ध्याय अर्थात् 'यागे' और श्रद्धा ता ध्यायने पास है 'स्मृति' बुद्धि बनाने का कार्यक्रम याने ज्ञान यज्ञान वा कार्यक्रम ध्यायना सना हागा । 'या बुद्धि ध्यायक पास है वह बुद्धि स्वल्प में है, उसका ध्यायक हाना चाहिए । जिनके पास विचार और श्रद्धा दाना नहा है, उनका दाना क लिए कार्यक्रम बनाना चाहिए । वह बना हागा यह व दय लेंगे । श्रद्धा कमजोर है ता उस बढ़ाना हागा । प्राण-शक्ति मजबूत हाना चाहिए । विचार और चिन्तन बढ़े । विचार बनाने है ता चिन्तन बनाना चाहिए । दाना है बुद्धि है बुद्धि बनाना है । और बुद्धि ध्याय बढ़ाने भा है लेकिन सबसे मुख्य बात जावन-बुद्धि का है । जीवन बुद्धि हा नभा इन साना वा सग 'न्याय' हागा ।

प्राण शक्ति क्या है ?

जिसाने मवान पूरा है प्राण शक्ति यानी क्या ? क्या पचाना मवान है । 'गान्ध' में भी कहा है न साथ प्राण याने वायु नहा और प्राण याने त्रिया भा नहा । ता प्राण याने क्या ? एक शरीर का सत्त्व है । वैदिकीय परिभाषा में कन्व है कि दवा देने पर भा 'शरीर' म सत्त्व नहा रहा और जावन की रस्ती टूटना गया । ता सत्त्व का अर्थ यही प्राण ही हागा । चिन्तन वा प्रेरणा भी एक सत्त्व है और प्राण शक्ति ऐसी है कि वह मनुष्य म हर काम करानी है । मनुष्य बीमार पडा ता बुद्धि भी काम करने की प्रेरणा उसके पास नग है । याने उसमें प्राण कम है । ध्यान प्राण एक रस्ती शक्ति है जिसके आधार पर जीवन सडा है । मनुष्य मायूस हाता है । जीना नग चाहना है उसमें किमी चाज की इच्छा नही है, वह माग 'रस्ती' प्राण के साथ जुटने है । बहुरता में जावन जीने की इच्छा हाता है ता 'कम' साथ उसका प्राण भी पग है । प्राणायाम म शरीर की शुद्धि हाता है । शरीर निराग बनता है । उसमें बुद्धि मानसिक बुद्धि हानी है बुद्धि बौद्धिक बुद्धि भा होती है । उसमें जावन ऊचा बनाने की भा दान है । 'स्मृति' आरोग्य विद्या प्राप्त होता है । उमाह 'वायं ब्रह्मचर्य

काम शक्ति पडा है लेकिन बट शक्ति खीनी नहा है। मतलब, जिन मामूली काम नग शक्ती है जसलिए उग कर्म-शक्ति या उपवास नग है। जोग बन्ने क काम बुद्धि नहा है थडा भरा है। पर बट काम नग कर शक्ता। बसोकि उमक पाग बुद्धि नहा है। मशीन में शक्ति भरी पडा है, लेकिन बनानेवाला नग ता मजान भयनी जगह पर पडा है। इसलिये थडा है जो बुद्धि हना चाहिए। थडा म गान काम हागा, तो बुद्धि उग बचावेगा। इसलिये बुद्धि जम्नी है। अगर गिण बुद्धि है और थडा नग है ता काम नग पाग। मतलब बुद्धि के साथ थडा जरूरी है।

गुरु : वस्तु जीवन शुद्धि

तीसरी बात यह है कि थडा बुद्धि के साथ शुद्धि भी चाहिए। थडा शक्ति बढाने का कार्यक्रम और बुद्धि शक्ति बढाने का कार्यक्रम दोनों हा धार दाना को शुद्ध बनाने के लिए और एन कार्यक्रम होना चाहिए। इन लिए साधना हमारा त्रिविध होना है। उगमें म एन कर्म-शक्ति है दूसरा योग शक्ति है और तीसरी ज्ञान-शक्ति है। इन तरह आ शक्तियाँ जीवन म काम करती हैं ज्ञान शक्ति जमशक्ति और योग-शक्ति—तीना एन हा है। जोग बन्ने है इन तीनों के माग भलग-भलग है। वहा ज्ञान प्रधान हाता है वही भक्ति प्रधान हाती है और वही योग प्रधान हाता है लेकिन योग एक हा है। तीना की जरूरत है और तीनों शुद्ध होने चाहिए। याने थडा ज्ञान का शुद्धि हानी चाहिए। शुद्धि थडा के लिए भी जरूरी है और ज्ञान क लिए भी। अगर थडा न हो, तो शुद्धि कौन स्वीकार करेगा ? थडा से ही कबल थोड़े काम नहा करेगा। पर थडा के बिना बुद्धि और योग काम नहीं करते हैं। वे एमे ही पड़े रहेंगे। मतलब तीनों का ताता क जित्त हाता जरूरी है। तीनों बनने लिए जरूरी है इसलिए तीना को साथ ही अपनाना होगा और त्रिविध साधना करनी होगी। इनमें से जो नहीं है उमका और योग ध्यान दना चाहिए। थडा की बुनियाद आपने पास है ता ज्ञान क लिए आपसा कोजित्त करनी होगी ऐगा कार्यक्रम आपको बनाना पड़ेगा। थडा क बिना कोई कार्यक्रम योगा भा नहीं बत सकता।

प्रज्ञा-प्राप्ति

प्रज्ञा

मित्र-मित्र युगा में मित्र मित्र युगा की मनुष्य को चाह हाता है । कभी कभी का विशेष आवश्यकता मानूम होता है । मत्र माम्य का आवश्यकता मानूम हो रही है । कभी निभयता की कभी ज्ञान निष्टा की आवश्यकता मानूम होती है । इस तरह मित्र मित्र युगों में युगा का आवश्यकताएं अनग-प्रतण रहा और जिस जिस युग में जिन जिस युग की आवश्यकता थी उन युग की प्रेरणा मनुष्य को ज्याण-न-ज्याण था । लेकिन सत्रक मूत्र में बुनियात चान है, हर युग में और साक्षर दम युग में निर्णय-शक्ति की जिसका हमें सामारिक कामों में भी जहरत हाता है मत्र पारमार्थिक कामों में भी । गाता ने उन प्रजा नाम दिया है । उनका ध्य है जो कभी फल नहा होती, गद हा निर्णय श्रेणी है । ऐसा प्रजा जिस मनुष्य में स्थिर हाता है, उन गाता ने स्थिरप्रण नाम दिया है । यह गाता का अपना नाम दण्ड है ।

स्थिरप्रण व लक्षण की विशेषता म नाम से ही प्रारम्भ हाती है । मत्र, गाता योगी शक्ति नाम सवत्र चने है । मत्रा व लक्षण आपका बानवन में, कुरान में, भागवत में रामायण में मत्र तरह जगह-जगह मिलेगे लेकिन स्थिरप्रण व लक्षण से आपका गीता की पाठ ध्यायेगा याने गाता ने शुद्ध ही मया बनाया है । नवान कल्पना रखना हाता है सा नया दण्ड बनाने है । यद्यपि स्थिरप्रण एक शक्ति पुत्र्य का वर्णन है जो लागे के सामने रखा । तो भी विशेष पुरुष व लक्षण मानकर नया नाम रखना पडा, यही स उसकी विशयता गुण हाता है । क्योंकि प्रजा

प्राप्त होता है। ब्रह्मचर्य के बिना प्राण-शक्ति नष्ट होती। देह की स्वच्छता नहीं रहती तो प्राण कुण्ठित होते। ब्रह्मचर्य गंभीर की शुद्धि और ध्यायमान यह मारा उत्साह बनानेवाला है और प्राण के लिए पापक हाता है। बन हा में पत्त कि संगीत से फसल याने उत्पादन बड़ा है। अब यह मानने का जा करता है। मुनने में अच्छा लगता है। गंभीर से फसल बढ़ती है तो मन का आनन्द होता है आश्चर्य भी होता है, उत्साह भी बढ़ता है, लेकिन वह संगीत अच्छा होना चाहिए। मानोग्यनम संगीत बना तो उसमें अच्छा मौन रहता है। उससे प्राण-शक्ति जाग जाती है। प्राण याने क्या ? क्या वह दृश्य है ? उसकी व्याख्या करना मुश्किल है। यह जरूर है कि जीवन के लिए वह एक अत्यावश्यक चीज है। धडा, धार्य स्मृति यह सारी चीजें साथ के लिए आवश्यक है। बीज के साथ प्राण-शक्ति का अधिक संबंध रहना है।

इंदौर

—जायकर्ता का में

१२ = '६०

मुग्धकार कमजोर नहीं बना कुम्भेश्वर कमजोर पड़त है। यह परमेश्वर की कृपा हा है कि कुम्भेश्वर का सब हाता है और मुग्धकार दूरत है। ना में बड़ा भाव शुभा है कि मनुष्य साम्नावस्था में पहुँच जाता है। यह सब गहरा विषय है इतिहास मात्र सब ध्या करा हैं।

सरकार का स्मृति

मनुष्य में दूसरी एक विनयाल शक्ति है। वह स्वकार के कारण बना है। जब कारण संस्कार पूरकत्व वापस करा है। जिस सब संस्कार हुआ—सिद्धा वापस का धर्म का या ध्वनि का जो संस्कार हुआ—यह स्मरण-शक्ति के कारण ताजा होता है। मनुष्य के सामने बहुत बड़ा उमर्या है, स्मृति पर धारू रखता। जो बाज विषय में बैठा गया उन निराश्रयता—पूषता—यह समर्या है। मस्तिष्क जिज्ञासा हम भूलन का वागिण्य बन्द है, उनका बन्द पड़ा जाता है। इसलिए साधना में स्मरण बलिष्ठ कार्य जो भीने अनुभव में लेना बन्द है स्मृति का कारण। बाई क्षामास धारण करने गुना हुआ बुरा धर्म मानने में आता है। ध्वजन के संस्कार बन्द नीत्र हाते है। वे बन्द करने हाते हैं। यहाँ इन्तोर में मैं देखा है कि बड़े बड़े इन्तदार, चित्र हाते है। उनका बच्चा के मन पर गहरा धमर हाता हाता। बच्चे के चित्त पर अगल इन चित्रों का संस्कार जम जाय, हा टा हाटनेवाला शक्ति बच्चे को नीत्र लेनेवाता है ? इसलिए संस्कार में जो शक्ति है वह बहुत बनी है। भगवान् ने क्या मेने याग बड़ा था और उनमें बहुत बाल धीत्र गया तो वह नष्ट हा गया।' बग-शाय का सामान्य बान में है। लेकिन स्मृति ऐसा धीत्र है, जो बहुत ध्यान रखल देता है। इसलिए वह मनुष्य का ताकत के बाहर है। बाई कहता है कि मैं ना की योगिण करता हूँ लेकिन नीत्र नहीं आती। यह वागिण्य हा ना के खिलाफ है। धारण में करा बका हुआ या, सा प्रार्थना के बांध तुम्हें सा गया। पाँच मिनट में नीत्र आ गयी। पाँच मिनट के बाद उठना है, यह समझकर गया था लेकिन माड़े छट मिनट हो गये। उठने में बिनबुन गहरा ना के अनुभव किया। ना के लिए जो प्रयत्न है वह ना के

हा मुख्य गुण मानार लक्षण रही । वे रखे मूखे दीखत है । भक्त-नगरी
 का तरह आद्र हृदय हो रहा है इस तरह का वगन हम नही मिलता ।
 जमा कपूर ने कहा 'सुखा सुखा राम का दुखड़ा,' ऐसा यह है । लेकिन
 लयमें एक जगह गीतानन है बुद्ध नमी है । यह स्थान जो भगवान् बना
 यह है प्रज्ञा प्राप्ति में रस निवृत्ति हानी चाहिए और बुद्ध काम में ज्ञान
 और प्रयत्न ज्ञान ताकतें कम पड़ता हैं । वहाँ कहा है पर दाष्टा
 निवृत्तते और युक्त आसीत मत्पर । दा जगद परमेश्वर का उत्सव
 आया है । मत्पर याने मुझे हा पर समझकर मुझमें लान हा जाया ।
 मत्परायण भक्त श्रिया का कावू में रखा है । वहाँ प्रज्ञा स्थिर हाती है,
 जहाँ वह बिलकुल लाघार हो जाता है ।

संस्कारों की गतिविधि

मनुष्य का दा गतिविधि—गुणाय गति और प्रवृत्त-गति, ज्ञान शक्ति
 और धर्म गति—वहाँ पूर्व-संस्कारों के कारण कम पड़ता है और व
 पूर्व-संस्कार भी हम जन्म के नहा अनेक जन्मों से संचित है । यह जो
 अनेक जन्मों की जम्हूरत मात्रुम हुई बट इसलिए कि बुद्ध संस्कारों की
 वन्त ज्ञान पत्र वित्त पर है बावजूद इसने कि प्रवाट उलटा है । उसक
 कारण बनाना जरा मुश्किल हाता है । और संस्कार भा जिस वक्त हुए,
 हम वक्त के वित्त पर उल्टे हैं । संचित कालक्रमेण के कारण हाने चाहिए
 क्योंकि काल में वेग-शय की सामर्थ्य है । रिगी भी चीज का वेग, जैसे जस
 बान बतगा कम हाता जायगा । हम गैर फँसत है तो प्रविष्टाण उमरा
 वग कम हाता जाना है । यही हाल संस्कारों का है । जमे बान बीतता है
 वह कम आता है—उमरा शय हाता है । जस शाम का गुग्गा आया ।
 उसम बहुत बुद्ध कर खाने की इच्छा हुई । किसी कारण वह नही बना ।
 फिर रात म निद्रा आ गयी । दूसरे दिन वह गुग्गा बहुत कम हो गया ।
 'मूर्तिना इधिया मं बहावन है इस बान पर 'स्लान आधर करा ।'
 यान उतना बान बीच में बना जाय ता संस्कार का वेग कम हा जायगा ।
 ता म आध का वग कम हाता है अर्थात् संस्कार कमजोर पड़ने हैं ।

का स्मरण है। मुसुबमानों में पाँच बार प्रायना हाता है। उसन एक चक्र-अप् हा जाता है। डाक्टर कर्मा-वभी मिलन है। व आत रहन है। मै दवा ता नर्हा नेता, लेविन चेर अप वर लेता हूँ। वैश नमाज द्वारा चक्र अप होना है। त्रिपाल सध्या से चैव अप हाता है। तैविन अन्लाह का जिज्ञ मवन थोष्ट है। नित्य-स्मरण वगाने क लिए ससृष्ट में गन् है— अनु-मरण। भगवान् का अक्षण्ड लगातार स्मरण रह यह भक्ति का परम थोष्ट प्रचार है जिसस अय स्मृतिया ह्ता जाता है। बुरे सस्वारा का ह्ताना चाहिए इसलिए अक्ष्द्रा सस्वार डाना तैविन स्मृति व-माणी यह करती है कि वह अक्ष्द्रे और बुरे सस्वारा का स्मरण रखती है। वह बुरे सस्वारा का वाञ्छी नहीं। जम सान म स पाँच गये ता दा बच। यद् गणित में हाता है। तैविन बीजगणित में ए-वा करने से दोना वायम रहन है एव पाजित्वि आर एव निरोटिव साइन् के साथ—घन और ऋण चिह्न क साथ। यहाँ सस्वारा का घटाव हा सक्ता है तैविन बुरे सस्वारो का स्मरण (रक्ता) रह जाता है याने दाना रक्ताड स्निहास में रह गय। मान कीजिय फर्ना देन पराधान था। उनमें परचक्र आया। वह देन अय रमाधान हुआ है तैविन स्निहास म रक्ता वायम है कि वह दस पहल पग-मीन था। आज स्वाधान हुआ है ता भा पुराना रक्ताड वायम है। सवाव यह है कि रक्ता मे बीज कस हटे ? जवानी से आपने बचपन हटा लिया और बुगणे म जवानी हटा दी तैविन बचपन का और जवानी का स्मरण कैम ब्रटावेगे ? चाहे अक्ष्द्रे स्मरण हा, चाहे बुरे उनको कसे ह्ताया जाय ? इसाए भगवत्स्मरण बनाया है। उसीम मनुष्य पूगा एवाप्र हा सक्ता है। गणित में तमयना एकाग्रता रातन्नि हा सक्ती है। मयन में भी गणित क उन्हाहरण दाख सक्त है। जाग्रति में अगर हिमा गणित वा उत्तर नही भितना ता सपने म भितना है और बद्धन भानन् हाता है। यह अनुभव की बात है। तैविन वह तम यना भी बसा है जिसम भूय लगी ता खाना पटला है ना आयी ता सोना पन्ना है चाहे कम खाया और कम छाया। याने गणित सब वृत्तिया

बिना है। गान नही धानी ता गरार को डीसा छाड़ दा। लेकिन मन को डीसा छाड़ दिया, ता मुन्दिर है। जेस प्रयन ना के मित्र है के भूलना स्मृति के बिलाक है। बिना भुवो की योग्य बरन है उनना मान धानी है। रात निन वह या बिस को घेर रहती है। इसनिर दूसरी स्मृतिया का जगाने का मोहा ना देना है। इसलि भगवान् ने का मुक्त धासोत मस्तर'। पराएण का का धर्म इलना तनयण ह वि रात-दिन धोर कोई बात गूढ ही नही सवठी। दूसरी चीजें गूढ हा भूल जाना है। जायति में धय सब बालो में निग धायी। अनलि स्मृति का विषय यही साता है। स्थितप्रथ क सक्षण में स्मृति भरा याना बुद्धिनाग धर्यानु सर्वनाग बटा है। आत्मस्मृति हाना चाहिए। वह जादा है धोर धन्य स्मृतिया का धरार चित्त पर रह जाना है इसनिर 'म स्मृति प्रथ कहा है। सस्वारा का छोडा मुन्दिर नही मानूम हाजा, सविन सस्वारा का स्मृतिया को छाड़ना मुन्दिर है। सारी माध्या उममें है धन यधेता सततम्।' 'सततम यह एव शब् जाड निया। फिर भी श्रुति नही हुद सो धोर जाड निया

‘ धन-यधेता सतत यो मां स्मरति निव्यन ।’

स्मृति का महत्त्व कहाँ ?

यहाँ स्मृति का महत्त्व है। धय यस्तु का विस्मरण करने की योग्य उन स्मृतिया का जगती है। गलन स्मृति को हटाने में पाजिचि प्रत्रिया काम में धायेगा निगेडिब नही। उगम स्मरण तो बायग रहता है। अनलि का है मुन्दिरन कर से रे मना। कुरान लरीप में धारा है वि सनाल माने प्राबना कुराई का रावनी है धोर अछे काम में मना दना है त्रेकिन जितरन्नाहु धयजर।' मनलव, सतान से भी धन्ता का स्मरण बेहतर है। प्रार्थना अच्छी चीज है। उगम भला की प्रेरणा मित्रता है कुराई दूर हात्री है। प्रार्थना सगचार है। सगचार का सप्र करना चाहिए। उसमे लाभ हाता है। लेकिन प्रार्थना स भी बेहतर मल्ल

वा हुन संस्कृत टाकाएँ र्ना । प्राणन वा भा र्ना वैदिक गर नरे ।
 उर्ने भा शिष्ट पातव ने ही गाता पर गिनुन गवा वा है । वैदिक
 मन्त्रन वा तनुमा जिगने रिया है, उर्वा precision प्रेगिजन वा
 तयान बटून रचना पटना है । 'यदा-यदा हि धर्मस्य म्पानिनश्चि
 न्नारत । जव जव धर्म की म्पानि हाती है—धर तनुमा करने गने ग
 धर्म क विण कौनना घट र्नेगे ? Duty Religion वा Right-
 cou ness क्या रता जाय ? धर्म वा तनुमा विन घट में करेगे ? धर
 रगा कि जा र्ना ऊर है वन नोरे रता यने धर्म के विण धर्म रता
 ना धान सो प्रगिनत पाम हुए । पर संस्कृत में जा टाकाएँ है उनमें धर्म
 घट का धय धम नटा विना है दूमरा र्ना विना है । म्पानि बह
 प्राणांन मन जाता है । इग्ने विण गावा पटना है । जने गगित में
 एका की वेनु बनायो जम घोर जा ती हा एका नटा हाता बाणिए ।
 उधी तरह धर्म र्ना वा भा तनुमा करना हा, ता धर्म र्ना वा टापान
 नही हाता बाणिए । इन्तिए बहुत शोचन उमरा पर्याय विना पना
 है । नै पटना वा बार-बार वैदिक वटा मुने गेग भगती यो—कामान
 क्रोधोऽभिजायते । कामना न क्रोध उत्पन्न हाता है । गेगा अनुनर ता नही
 घाता है । काम माने वा र्द्धा दुर्द । हमने काम घा निपा । धर
 लता । ता उमय माध कए उत्पन्न हागा ? अगर उममें बाइ भापा जाने
 ता क्रोध घायेगा । काम माने नो मिता ता क्रोध नही घाता । और गीता
 ता निश्चिन हा कहता है कि कामान क्रोधोऽभिजायते । यह गावउ हुए
 मर ध्यान में भाया कि इग्ना मनन ३ क्षान । मून धय म बह क्षाम
 है । इध घातु है जिमरा मून धय क्षाम है । काम जिसे हम क्रोध र्ना
 है व क्षाम वा एव प्रकार है । फिर 'लोभान भवति समोह' गेगा कर्ते
 ना गरन धय हाता है । मह म्पान मीने की ता मुने लता रि म्पितरण
 क गण में वर बहुत वन खान है । उनमें र्ना भर है ।

भगवत्स्मरण आवश्यक

प्रज्ञा की प्राप्ति बाणिए तो मिर्द बुगम्वाग वा र्नेने मे नटा

में निरोधा रही रह साना । मत्र वृत्तिया में जो पिराया जा सारजा है, याने मत्र वृत्तिया के बावजूत जा कायम रह सारजा है जेग श्वासाच्छ्वास की प्रक्रिया, उगी तरह हर काम के साथ-साथ भा कायम रह सकता है, ऐसा भावतुस्मरण ही है । हर कति क साथ बह कायम रहना है । आप बनन है तो आपका बैठना बन्ने गया तैरिन श्वासोच्छ्वास ता चलना हो है । वैग हर वृत्ति में भगवत्स्मरण रहना है । नास्तिक धाम गहराई में जान नाने इनलिए मन्साग की जगने में नयत है । प्रेम क कारण एव-स्मर का अनुराग बहना है—जम पति धीर पत्नी माता और पुत्र इनका धिरा म लगातार एव-स्मर ता स्मरण होना है, तैरिन भगवत्स्मृति क सामने बह बहूत छात्र चीज है । भावतुस्मृति धनर-वाह्य हा गवता है । उनका पकड में दूसरी को चोज टिकनी नहा । विरहामक्ति धानि उपमा परमेश्वर की भक्ति के लिए दा है । पर यह भी बहूत बमजोर सिमान है । भगवत्स्मृति में मनुष्य कितना समय जाना है ।

आत्मस्मृति का साधन अज्ञात

इसलिए गीता में एक जगह कहा—‘पर दृष्टवा निवृत्त’ और फिर कहा ‘युक्त आसीत मत्पर -मत्परायण हो । उतता ही हिम्मा नमा का है । उतना ही गीतापन है । क्याकि यह सब एव सांख्यिस्ट का भाषा जमा है । माइन्स में तटस्थता होती है । चित्त स्थिर हो, वो धोम नहा होना । ऐसा पारमाधिक साधन आपके सामने रख रहे है । निराय-शक्ति का मतलब है चित्त पर कोई दबाव न हो, अथवा पचाम चीजें बाधा डाल सकती है । करुणा भी निराय में बाधा चल सकती है, इसीलिए सत्य प्रेम, करुणा कहता हैं । करुणा और प्रेम म दोष आ सकते हैं पर सत्य से उनका निराकरण हो सकता है । सत्य ही प्रेम और करुणा की पूति करता है । इसीलिए प्रना याने पका निराय ।

गीता में धोम के लिए क्रोध धन है । ‘कामात शोधो-निजायते इमरा भाष्य पहले कहा पर भी मर चित्त का समाधान देने लायक नहा हुआ । बार-बार मैं ग्यिज्ञप्रण क इनाका का चिठन करता रहा और कुव

दर्शन का फलित साम्ययोग

‘श्रतिपक्ष भारता’ स कुम्भार निरसन

राज्य की साधना में मात्र बड़ी मुक्ति कुम्भार का मित्र की नदी कुम्भार का मित्र की है। मित्र का नाम जाना है कि अक्षर सकार या बुरे सकार वचन में हृदय पर गहरा गहरा है। अतः मित्र-साधना अच्छी है, इतर जा रहा जाता है और यह एक भा है। मित्र-साधना जा भा हा लिंग जहाँ रक्षागुण और तन्मात्र काम करना है, वचन सत्त्वगुण काम नग करता। अतः कुम्भार कुम्भार का हना अनिर्णय-सा है। उन कुम्भार का प्रयत्नों में मित्र का मकरा है। वह मनुष्य के पुरुषार्थ का विषय है। कुम्भार का मित्र के लिए भगवान् के पास पहुँचना अनिर्णय नग उनका प्रति मनुष्य को गमित है। इसीका योग्यकारणों प्रविष्ट भावना कर है। अतः मित्र का मन्वार है, ता व अहिंसा व मन्वार में मित्रा, जायगा। ५ का मन्वार है, ता वह प्रेम के मन्वार में मित्रा जायगा। इसे एक प्रविष्ट व रूप में साधना-गाम्य में बनाया जा सकता है और मनुष्य प्रयत्न करने से ही हासिल कर सकता है। वह अर्थ कुम्भार का मित्र का है। कुम्भार गहरे हा ता अर्थ प्रयत्न करना पड़ेगा। प्रयत्न की पराजय भी करना पड़ेगी। पर वह यत्नाध्य है हा। कुम्भार को मित्रा अत्रिता वहा वठिन ममत्वा है।

स्मृति मुक्ति समस्या

वारण यह कि यह स्मृति रक्षा के रूप में गृह जाती है। इतिहास

चलेगा। गलत स्मृतियों को भी हटाना होगा। इसके लिए परमेश्वर की स्मृति का आश्रय लेना पड़ता है। ईसाइया ने पाप को खत्म करने के लिए बताया है कि कन्फेशन करें, ब्रूच करें, इजहार करें तो पाप खत्म होगा। जैसे बाल में क्षय करने की शक्ति है, वैसे पाप जाहिर करने में भी सामर्थ्य है। इतना तो ठीक लेकिन जाहिर करने से पुण्य का भी भय हाता है। यह उनसे ध्यान में नहीं आता। व्यापन में—इजहार में—पाप का सामर्थ्य है। इसलिए कुमस्वार और स्मृतियाँ हटाने के लिए ईसाइया ने उपाय कन्फेशन का उठाया। पर उमम भी क्या हाता है। ? कन्फेशन से कुन स्मृति पक्षी होती है। आज मैंने जाहिर किया कि पत्नी तारीख का मैंने व्यवहार किया या फर्मा तारीख का मैंने बतल किया या किसीका टगा। जाहिर कर लिया, उससे पाप हा गया कुमस्वार तो गये। लेकिन हमसे आगे अच्छे मस्वार हागे तो भी उन आज की स्मृति, या, इजहार से तो पक्षी बनी। इसका उपाय कन्फेशन में नहीं है। मैं मानता हूँ कि कन्फेशन में एक शक्ति है। ममान का बल हमें मिलता है ममान की मन् मिलती है और हमारे हाथ से ऐसे बुरे काम या गतिमा नहीं हागा। लेकिन उमक कारण स्मृति तो बनेगी रेकाड तो हा जायगा। रेकाड अच्छे काम का भी हाता है और बुरे काम का भी। इसलिए रेकाड में ही वह बस हटाये ? बुरे मस्वार या आत है। उस यादगहन को स्मृति में बने हटाये ? यने कठिन भवाला है। बहुत कठिन साधना है। इसलिए गोडा में स्थितप्रज्ञ लक्षण में भगवन्स्मरण की और भगवत् भक्ति का आवश्यता बनायी गयी है।

इसलिए

—कायवर्ता बग में

आत्म स्मृति का लक्ष्य

अन्धान् ने हन सब स्मृतियां वास्मृति बना करी है। याना जनीं माना स्मृति महा है वही ये दूसरा स्मृतियां हागी है। इतिहास आत्म-स्मृति की लक्ष्य का उपाय है बु-स्मृतियां का निदान का और गुण-स्मृतियां का हम्म करना का। बु-स्मृतियां निदानो ही हागी धार गुण-स्मृतियां हम्म करना हागी माने माना में इवानी हागी। अगुब ने अगुब अच्छा काम किया था एक स्मृति मने मन म रह गया। या हास मान करने में बहुत अच्छा काम किया, उन्का भी स्मृति रह गया। हास अच्छा कायों की स्मृति का के कारण उो भिगाना नग है। बुरी स्मृतियां का निदान काणि और गुण स्मृतियां का हम्म करना काणि। मान का वहपाता काणि नि जा जा गुण कायें हास ह उन्का आधार न में है न कायें दूसरा है बनि गुण-कार्ये सदगुण न प्रेरित हाते है। वे सगुण आत्मा का रूप है। इतिहास किसी महात्मा ने अच्छा काम किया या मने अच्छा काम किया— यह स्मृति माने आत्म-स्मृति है गुण-स्मृति है। किसी महात्मा ने अच्छा काम किया, ता प्रम के कारण किया गत्य और बग्या के कारण किया। मैने का काम किया वह भी प्रेम के कारण किया था किसी गुण के कारण हा अच्छा काम हुआ है। जितना गुण-कार्ये दुनिया में हाता है चाहे इत उरार गरा हाता हा या दूसर जिहा सारर द्वारा हाता हा मत्य मन बग्या काणि गुण द्वारा ही होता है। सदगुणों से प्रेरित हाता है और यद गुण आत्मा का रूप है मलिन इनका स्मृति वास्तव में आत्म-स्मृति म दुबाइ जा सकता है। अगर हम ठाक से पढ़वाने ता यह ही सकता। अगर हम हाका अहंकार मान कि इतना अच्छा काम ता मरा और उता अच्छा काम दूसरे जिहाता सो अहंकार हा जायगा। हाते मने अच्छा काम और मने दूसर के अच्छा काम, यो ने का जाय ता आत्म-स्मृति का हागी। आत्म-स्मृति न हम अलग ही हागे और उत हाता का परिभाषा म स्मृतिभग का बना जायगा। याते आत्म-स्मृति से बह अलग बात हागी। उतम निर जिहा महात्मा का विषय जय-जयकर होगा, ता दूसर जिहाका दया गुण कम

बनने पर भी रेखा कायम रहता है। रेखाई बनाने के लिए हानी पूर्णिमा की जरूरत होती है। उमर तिन कुन-का कुल रेखाई स्मृतियाँ बनायी जा सकती हैं। कुस्मृतियाँ को मिटाने के लिए परमेश्वर की कृपा का आशान करना पड़ता है। इसलिए 'युक्त आशीत मत्पर' ऐसा आशीत गीता ने लिया है। भक्ति का इस प्रकार अनिवार्य ज्ञान पर धावाही किया है। इसलिए भक्ति श्रेष्ठ है। ऐम ता परमेश्वर का शक्ति अन्तर मे आगिर तक प्राग्भ सं अन्त तक मन्द करेगा, लेकिन कुछ लोग मानत है कि ईश्वर पर आधार रखने से मनुष्य प्रयत्न छाड़ता है। ऐसी धान ना है। लाभ समझत है कि अवतार आवेगा और सत्र करेगा इसलिए कुछ नटा करना पड़ेगा। ये समझत नगे हैं। अवतार की राह दखना याने क्या ? अवतार किसलिए आवेगा ? दुजना के विनाग के लिए आर सजना के पालन के लिए और उस तरह धर्म मस्थापना के लिए। अत्र अगर हम दुजन बने रहत है तो अवतार आवेगा और हमारा विनाग करेगा। अवतार की राह दखना याने अपने विनाग की राह देखने का बात हागा। अवतार की राह का मतनत्र ही है मज्जता का पूर्ण वाशिंग। सत्य की राह पर रहने की पूर्ण कोशिंग करनेवाल अवतार की राह देखते हैं, ऐसा कर सकते है। अथवा अगर दुजन बने रह आत्मो बने रहे और कहा अवतार आया ता हमारा विनाग हो जायगा। सांगत ईश्वर निष्ठा म प्रयत्न का अभाव ना है प्रयत्न की परानाष्टा है। इसलिए ईश्वर की निष्ठा गुण म आगिर तक मदद देती है। लेकिन जहाँ वह अनिवार्य है या उसकी मदद के बिना जहाँ चलगा हा नहा ऐसा स्थान है—स्मृति मुक्ति। इस स्मृति मुक्ति का क्या किया जाय ? इन्का उत्तर मुझे किमी नास्तिक सं नहा मिला। बेसे नास्तिक सं और बटुत सुना जिसम कि ईश्वर की आवश्यकता नहा भी मान सकते है। लेकिन इस मामले का उत्तर नास्तिक ज्ञान में कतना ही मिलता है कि कम भाग भाग हुए अन्क जन्म प्राप्त करत हुए विनाग हो जायगा। जेनों ने मह उत्तर दत्त का वाशिंग की है।

इसलिए 'मत्पर' कृता है ताकि आत्म-स्मृति जागे और अन्य-स्मृति तुम हो। गीता में अर्जुन ने भगवान् का उपदेश सुना और अर्जुन स जत्र पठा गया कि क्या तूने एकाग्र चित्त से सुना ? तब माह नष्ट हुआ ? उत्तर में वह कह रहा है 'नष्टो मोह स्मृतिलक्ष्या ।' स्मृति मुझे मिली है । 'स्वप्नसादात् नष्टो मोह स्मृतिलक्ष्या' मोह नष्ट हुआ अर्थात् भली और बुरी स्मृति गयी और स्मृति मिली याने आत्म-स्मृति मिली। कम हुआ यह काम ? 'स्वप्नसादात्' । तेरी कृपा से। उसने बिलकुल एक आत्म स्वप्निया। मोहनाश माने स्मृतिनाश ये दाना भगवान् की कृपा से प्राप्त है। और वह भेरे गये म अर्जुनक भाया ऐसा अर्जुन शोक रहा है। नष्टो मोह स्मृतिलक्ष्या स्वप्नसादात्। यहाँ स्थितप्रज्ञ के श्लोक शुरू होत है। 'श्रोषाद्भवति समोह क्षाम मे माह हाता है माह स स्मृति भंग होता है। अपनी आत्म-स्मृति नष्ट होती है इससे बिलकुल उड़ी प्रक्रिया अर्जुन की है। यह विषय यग समाप्त कर रहा हूँ।

स्थितप्रज्ञ के लक्षणों में यह बहुत महत्त्व का अंग है।

ब्रह्मनिर्वाण

दूसरी बात—यह सारा विषय स्मृति और प्रज्ञा—योगसूत्र ने छेपा है जा गीता के बाद का है। बौद्धधर्म ने छेड़ा है जा गीता के बाद का है और बौद्धधर्म में उभवा भक्तक दीवनी है, जा गीता के पहने की है। याने वेदान्तिप्रद पूर्वजान है। गीता का मध्य-जान है। योगसूत्र बौद्ध धर्म का उत्तर-जान है या अन्तिम ज्ञान है। ऐम तीन ज्ञान अपने देग म हैं। बौद्धा में जैन भी मैंने मान लिया। इन तीनों में इसकी चचा बनना है वन्कि इसी चीज की चर्चा चलती है स्मृति मुक्ति और 'आत्म स्मृति का लाभ। अय स्मृतिया स मुक्ति। य' अहा होना है वहाँ अनुप्य की निर्वाण प्राप्त होता है। गीता ने कहा ब्रह्मनिर्वाण। आत्म स्मृति चाहिए। उसके लिए भगवान्-कृपा चाहिए। उससे ब्रह्मनिर्वाण मिलेगा। इस तरह एक ही छापे-में 'स्थितप्रज्ञ ज्ञान' में आमा ईश्वर और ब्रह्म ऐसे ताना गण्य का उपयोग हुआ है। आत्मा जिनकी हमें

गागा । मेरे जरिये बहुत अच्छा, बड़ा काम हागा तो मेरा दर्जा मेरे मन में बहुत बढ़ेगा । यं दर्जे बढ़ाने और घटाने के सब काम उन अच्छी स्मृतियों में से होंगे, अगर अच्छी स्मृतियाँ गुण प्रेरित हैं और गुण आत्मा के हान हैं । इनका भान रण तो हम आत्म-स्मृति से भ्रमण नहीं होंगे, इसलिए अच्छी स्मृतियाँ का आत्म-स्मृति में बुझना है । इगीवा नाम शुभ-स्मृतियों को भ्रमण करना है । मैंने बेला खाया और हम दिया ता उसे अपना रूप दिया । बेला बेले के रूप में खाया और भास के रूप में बह भा गया याने शरीर का रूप उसे दिया । (अपना याने शरीर का ।) बेला खाने का सम्बन्ध शरीर से है, इसलिए शरीर का रूप दिया । वैसे ही यदि शुभगुण प्रेरित काम हुआ—मेरे जरिये हुआ तो मेरे इस शरीर के जरिये नदी से किन अन्दर जो आत्मा है उसने जरिये हुआ । अब जब ध्यान में आया, तब स्मृतियाँ में काइ महात्मा नहीं आत्मा नहीं आत्मा ही रहता है । को महात्मा है और काइ अत्मा महा कोरा खयाल ही खयाल है । दर भ्रमण आत्मा ही है । आत्मा न महान् होता है, न अल्प । जहाँ उसका गुण का प्रकाश ज्यादा पडा, वहाँ महात्मा नाम देते हैं । जहाँ उसका गुण का प्रकाश कम पडा, वहाँ अल्पत्मा नाम देते हैं । प्रकाश एक बात है गुण दूसरी बात है । प्रकाश कम-बेगी जाना है, उस पर से हम महात्मा और अल्पत्मा कहा करते हैं । वस्तुतः जहाँ जितना गुण प्रकट हुआ, वहाँ आत्मा का ही धर्म है किसी व्यक्ति विषय को नहीं । इस तरह शुभ स्मृतियाँ को आत्मा में बुझना है ।

कुस्मृतियाँ मिलें और शुभ-स्मृतियाँ हम हा जायें, ता आत्म-स्मृति जागेगी और मोनो जाकर करेगा । शुभ-स्मृति और कुस्मृति दोनों रहगो, ता आत्म-स्मृति नहीं जागेगी आत्म-स्मृति का भ्रमण हागा । आत्म-स्मृति जागे उसका उपाय है—भनी-बुरी स्मृतियाँ से भ्रमण हाना । भनी-बुरी स्मृतियाँ न अगर हम भ्रमण हान हैं ता आत्म-स्मृति होती है । आत्म-स्मृति जागेगी ता अल्प स्मृतियाँ जायगी और अल्प स्मृतियाँ जायगी तो आत्म-स्मृति जागेगी । यह है पंच और द्वा पंच का ताडनवाता है परमेधर की कृपा ।

स्नमाल करें। यह हम करत भी है। मेरी बुद्धि कमजोर है ता गुरु का वाच मैं लेता हूँ। गुरु-कृपा मुझ पर हा रही है। ऐसा हम समझत ह। उम इश्वर का कृपा हम नहा समझत ह। जमे कना खाने म मास बना, ता कले की कृपा समझत ह। वैम ही गुरु-कृपा हूँ ऐसा समझत ह। इश्वर का कृपा हूँ, ऐसा नहा समझत। लेकिन एक मास आता है नहीं म गुरु-कृपा मन्त्र करती है न वायु-कृपा और न और वाइ कृपा। यहाँ गहर स एक मन्त्र मितने का मूरत है वह जगह है स्मृतियाँ तष्ट करने का। उम वक्त ब्रह्मा में जा परमेश्वर है उसका मन्त्र हम ल सकत है। जहा आत्मतत्त्व का कमा मात्रम हूँ उमरी जूनि के लिए परमेश्वर तत्त्व स मन्त्र मितनी है। बुद्धि-तत्त्व में जना कमजारी आनी है वहा बाह्य मृष्टि म जा बुद्धि-तत्त्व है, उमका मन्त्र हम लेते है और गुरु का बुद्धि क जरिये प्रथम परिमे बाहर की बुद्धि की मन्त्र लेते हैं। उसा तरह जहाँ आत्मा म बहूत जगदा कमजोरा महसूस करत है वहाँ परमेश्वर स ध्यान मृष्टि म जा सत्त्व है जिसक प्रतिबिम्ब-स्वरूप यह आत्मा है वहाँ से हम मद ले सकते हैं। यहाँ परमेश्वर का कृपा का स्थान थाया। परमेश्वर का स्वरूप यह है कि वह ब्रह्माडकारा है जम हम दरारधारी है। और जैसे हम तट भित्त है, वैम वह ब्रह्माड भित्त है। जम हम तट का पहचानने वाल है, वैम वह ब्रह्माड का पहचाननेवाला एक है। वह परमेश्वर है। उसस हमें मन्त्र मिल सकता है। अब वह मन्त्र अगर मितेगी और स्मृतियाँ सत्र खत्म जागी और गुम-स्मृतिया आत्म-स्मृति में डूब जायेंगा तब आत्म-स्मृति जायेगा और तब ब्रह्म निवाण हाया। ब्रह्म में आमा लीन हा जायगा। बचल निवाण हा जायगा यह श्रुत बौद्धा ने कहा। स्थितप्रज्ञ-वर्णन की पुस्तक क आभिर म ब्रह्म निवाण का आधार लेकर बौद्ध और बना का समन्वय किया गया है। उमके लिए एक नया श्लोक गीता का परिभाषा म बनाया है। एक ब्रह्म स य पश्यति स पश्यति। जा गूय और श्रुत एक है, ऐसा देखना है वही मही दखना है। ऐसा एक श्लोक हमने बनाया और वहाँ स्थितप्रज्ञ-वर्णन विताव समाप्त हाता है।

अनुभव होती है हम मनुष्य कहते हैं कि हम हैं, यह धारणा है। धारणा मूर्ति बना है उसमें परमेश्वर अनुभवार्थी रूप में विराजमान है, वह परमेश्वर है। और ब्रह्म वह है, जिसमें यह परमेश्वर और यह धारणा दोनों रूप में हैं। शरीरगत, शरीर को पहचाननेवाला जो एक तत्त्व है, धारणा में निहित उस धारणा कहते हैं। मूर्ति का अन्तर रहनेवाला, मूर्ति का पहचाननेवाला मूर्ति में निहित जो एक तत्त्व है, उसे ईश्वर कहते हैं। यही ईश्वर का अनुभव प्राप्त होता है, उसी कृपा में निहित है। यह रोजमर्रा हम अनुभव करते हैं। हम अनुभव करते हैं, फिर भी नहीं समझते कि यह धारणा का कृपा है। प्रतिक्षण हम श्वास धारणा सेन है स्वभाव वायु बाहर आता है। बाहर का स्वच्छ निर्मल वायु धारणा सेन है। यह ईश्वर की कृपा ही रही है लेकिन हम इसे वायु कृपा समझते हैं। शरीर में जल-तत्त्व है, यह जल का सूखता है तो पानी पीते हैं। इस हम जल-कृपा समझते हैं। परमेश्वर की कृपा नदी समझते। ऐसी मिसालें बहुत दी जा सकती हैं। हमारा शरीर मांस का बना है। शरीर का बजन जल धारणा है शरीर कमजोर बनता है, तो बाहर एक मांस बननेवाला मूर्ति का अन्त है, मन्थन और दूध हम खाते हैं और उससे हमारा शरीर बना है। इस हम दूध और मन्थन की कृपा समझते हैं। ईश्वर का कृपा नहीं समझते। याने ब्रह्मांड की कृपा पिंड पर हो रहा है, यह नहीं समझते। मूत्र की कृपा श्वास पर हो रही है, जल की कृपा शरीरगत जल-तत्त्व पर हो रही है। वायु की कृपा प्राण पर हो रही है। यह सब हा रहा है, इसलिए हम सब कुछ पान है। बाहर की मूर्ति का कृपा इस शरीर पर, पिंड पर नहीं होगा तो शरीर काम नहीं करेगा। वह चलेगा नहीं। यह जो हम पर कृपा हो रहा है, वह निश्चय ईश्वर-कृपा है। यह हम महसूस नहीं करते हैं। बल्कि वह स्वच्छ मूर्ति की कृपा है, ऐसा समझते हैं और कुछ हम तक यह नहीं है। लेकिन जहाँ हम स्वच्छ वायु की मदद लेते हैं। पेट में मजबूत करने के लिए यहाँ हम मन्थन कर सकते हैं कि अन्तर की वीर्य और मांस मिश्रित हुआ होने के लिए ब्रह्मांड अन्तगत स्मृत और मन का भी

जेन में हमारे ध्याव्यान हुए थे। जेन में ही रिवास्ट किया गया और विचार भां जल म डी बना। उनमें स्थितप्रज्ञान का समाप्ति गीठ भार वेगल्ल के समन्वय के विचार म का। फिर जब हम गया जिले में घूमने थे तब गौतम बुद्ध की स्मृति मन में रहता था। हमने वहाँ समन्वयाधन का स्थापना की। सन् १९२२ में लेकर १९४५ तक एक विचार हमारा हुआ, जिसमें बौद्धा का हमें मतलब स्मरण रहा। बाप में भूगान गुरु हुआ और उनमें समन्वयाधन बना। उनका बाप गौतम बुद्ध व धम्मपत्र का रचनानर हमने किया। धम्मपत्र व इलाक मुभाषित जन्म हैं। धर्म का स्वाम धानार नहीं है, ४२० लाख है। उन्हें हमने १५ अध्याय और १०० प्रकरणों में बाँटा। हर एक प्रकरण और अध्याय को नाम दिया और अन्त में कुल गणना की गुणा का, जो अभी तक बढ़ा भां नहीं बनी थी। गुरु में हमने जो प्रस्तावना किया है वह धारण काम का नहीं है क्योंकि अन्त में रचनानर है, लेकिन लाका का सजुभा नहीं किया है। वह किया जाता तो वह धाम योग व काम को चात्र हाती। आज वह विज्ञान व काम का चात्र है। सन् १९२२ में लेकर १९६० तक सतत यह विचार मन में रहा कि वेगल्ल और बौद्ध-ज्ञान का समन्वय होना चाहिए। बाङ्ग-दान म धरा मतान्व जितन भी ज्ञान हिन्दुस्तान में साधना व विषय म सावने हे परमेश्वर का अलग रत्तर व कुन दान एव और और परमेश्वर की मन्त्र अनिवाय समझकर जो दूसरे ज्ञान बने हैं वे दूसरी और एक का भास्तिव कहन है दूसरे का नास्तिव। लेकिन इस हम अध्याय समझन है। वह भास्तिव या नास्तिव नहीं। एव आत्म प्रयत्नवाणी है दूसरा आत्म प्रयत्न की जहाँ पगफाष्ट होती है, वहाँ मन्त्र व लिए श्वर की धर्म म स्मरणेगला है। दोना पूरे प्रयत्नवाणी है परन्तु एक प्रयत्नवाणी में ही समाप्त करता है और दूसरा प्रयत्नवाणी के अन्त में परमात्मा का कृपा की गति की बात करता है। इस तरह ये दो ज्ञान हैं। एव धामा पर निर्भर है दूसरा परमेश्वर का कृपा का धारान करनवाना। दाता ज्ञान का समन्वय होना चाहिए। तथा समाधान होगा तत्त्वज्ञान का और

जीवनसूत्र धर्म समन्वय

बौद्धधर्म गूयवादी है गोता ब्रह्मवादी । नेत्रिन गूय और ब्रह्म में पर्व नन् है । जहाँ कुम्भुतिर्या और अगुभ स्मृतिर्या नमरास होनी हैं, वहाँ यात्मस्मृति जागती है और धुन-स्मृतिर्या हाम हाना है स्मीको बौद्ध गूय कहते है । और यह कहता है, जहाँ आत्म-स्मृति जागेगा वहाँ अय स्मृतिर्या खत्म हागी । यह ब्रह्म का नाम लता है पॉजिटिव-धनात्मक भाषा बोलता है । यह श्रमणात्मक भाषा बोलता है । अधकार का मिटना और प्रसांग का आना दोन अलग अलग नहीं है । एक बहता है अधेरा मिट गया दूसरा कहता है, उजाला हा गया । अधेरा मिट गया एक पग, उजाना गे गया दूसरा पग । दोना पगो का वाद बना—अधेरा मिट गया कि उजाना हा गया ? यह वाक कसु भिटेगा ? दाना एक ही है जो कहने मे ही भिटेगा और किसी दूसरे तरीके ग नहीं भिटेगा । स्तलिए हम ब्रह्म निर्वाण कहते है और बौद्ध निवाण कहते है । ता गूय और बहा याना अधेरा मिटा और उजाला हो गया यह समन्वय का विचार हमने रखा । नम समन्वय की जल्दत हमने सतत महसूस का है । 'स्थितप्रज्ञ दर्शन' पुस्तक के अन्त म लिखा है यह हमें याद नहा था, हमारे मिथा न याद लिनाया । स्थितप्रज्ञ-दर्शन के पहले एक विताव लिखी थी जब हम जवान थे । वह हमारा प्रथम लेखन है — 'उपनिषद् का अध्ययन । वह अत्यन्त जटिल शय है फिर भी बहुत गहरा है । जब वह नये दिरे स प्रकाशित हुआ तो उसे हमने दुबारा पढ लिया । उसमें सात फर्क करी की जल्दत नहा महसूस हु । आन अगर वह लिखा जाना ता उानी जटिल नहीं लिगी जाती । लेकिन हमारे विचार म कोई पर्व नहा हुआ । वह हमारी पहली किताब है । बुद्ध भगवान् का उपनिषद् के अध्ययन के साथ काम्पन में कोई ताल्लुक नहा है । लेकिन उस पुस्तक की समाप्ति धम्मपाद म बचन लेकर की है । उसी तरह स्थितप्रज्ञ-दर्शन में भी हमने थोड़ी और वेग के समन्वय का विचार रखा है । 'उपनिषदी का अध्ययन' विताव सन् १९२२ की है और स्थितप्रज्ञ-दर्शन विताव सन् १९४१ की ।

बनवान और ध्यानयोग से एक भी गता में काम है। और ऐसी गता का आधार कुन नामा के विना है। लेकिन हमने गीता में जो गता धारा है, उनके आधार पर 'साम्ययोग' ही गता को धारा में माना है। स्पष्ट करना साम्ययोग है। 'अभिप्रेय परम साम्यम। प्राप्त्यन्तु साम्ययोगः' है। साम्ययोग हमने अन्तिम माना है और समन्वय का हम अन्तः किरण का पदवि बनाना मानते हैं। समन्वय पदवि में हम साम्ययोग का अर्थ, यह दृष्टि हमारे अन्तःकाल का अर्थ में रखा है। यिना भी हमने अर्थ विना अन्तःकाल उन्में पदवि समन्वय का और अन्तिम अर्थ साम्ययोग का है। हमार या काम विना साहित्य है, उन्में साम्ययोग पदवि है और समन्वय पदवि है।

इन्दौर

—प्रातःकालीन कायकर्ता वर्ग में

१४ ८ ६०

सभ समाधान होगा जीवन विचार का। जिनका जितना प्रथम हमने चिन्तित है उनमें बाद समाप्ति है। गीता प्रवचन का तुलना नजदीक-नजदीक प्रथम क साथ कीजिये। गीता रहस्य या गहरावाय का भाष्य स भाष्य तुलना कर सकते हैं। आप देखेंगे कि दोना प्रथा स वास्तव है और एक पण स वस्तु ज्ञान है। ऐसा दीपना है। एक ने कम-पण में वजन डाला है ना दूसरे ने ज्ञान पण स। इस तरह भाष्य लिखे गये हैं, लेकिन गीता प्रवचन स दिग्गया है कि जिनका वास्तव है, उनका समन्वय ही सकता है।

हमारा आखिरी प्रथम है साम्यसूत्र। सस्युत में है। उनमें हमने एक सूत्र लिखा है 'एकजनकयो एक प या'—'गुरु और जनक का भाग एक है। यही दो व्यक्तित्व लेकर 'गीता रहस्य स भगडा पण लिखा गया है। गुरु आदि इस मार्ग स गये—सन्ध्यास मार्ग स और जनकादि उग मार्ग से गये—कर्मयोग के मार्ग स। इस तरह दाना स वास्तव खडा किया ह। जेना अलग अलग भाग है, ऐसा बहुर सवास भाग स कम-भाग छेठ है ऐसा बताया है, यह विशेष वस्तु है। शुक और जनक का रास्ता एक ही है हमारा रास्ता अलग है। उनके रास्त में एक नडा। हमारा रास्ता उन दानो से अलग पडा है वह जरा हम देत न। गुरु जनक का एकना तब हम ध्यान स लेंगे, तभी गीता का रहस्य हमारा हाथ आवेगा। साम्यसूत्र स हमने यही लिखा है।

साम्योपासना

हमारे चिन्तन का तरीका समन्वय का है। अतः स हम साम्य की आशा रखते हैं। हम समन्वय पद्धति स सोचने हैं और उनका नतीजे स, अन्त में, हमें जरूरत है साम्य की। इसलिए गीता का हमने साम्ययोग नाम दिया। बाद कहता है, गीता कर्मयोग है जो ध्यानयोग कहता है, बोध ज्ञानयोग कहता है। सातभाष्य ने उस कर्मयोग कहा गांधीजी ने उसे अनात्मनि-योग कहा। ये सब नाम सही हैं अपने अपने विचार में। लेकिन हमने गीता को साम्ययोग नाम दिया। गीता में य स वास्तव आया है। वेने

में नहीं थे, 'पारिरीक मक्क' म ना थ । मिक भाध्यात्मिक मक्क होना ता आप हमें याद करते । लेकिन सबके पारिरीक था 'मनिए जा पूय' व उनका स्मरण नहा हुआ और जा प्रिय थे उनका स्मरण नहा हुआ जा पूय और प्रिय जाना थे उहाका स्मरण हुआ ।

हिन्दुस्तान के कुल लोग 'राजद्रोहा

भगवान् श्रीकृष्ण 'आर' लिए दानों है । व परमपूय है । उनम बन्दर हमारे लिए बाण पूय नहा है । उनका बगबण के रामचन्द्र हा सब है । उनम बन्दर हम बाण प्रिय नहा । मभव है कुठ मगा में रामचन्द्र भा बराबरा करें । मैने जान-बूझकर कुठ मगा में कहा है । व पूय थे परम पूय थे फिर भा स्वामी थे और 'म उनक दास । राजा राम । हिन्दुस्तान में इतने राजा हुए 'म किसीका स्मरण नहा करते । अपने अपने ज्ञान में सब हुए मगजन रहे । कुछ पालन भा गायन उन्हाने गागा का किया और सनाया भी बन्द था 'किन हमने उन राजाघा में म किसीका राजा नहा ममभा । हम ना सिफ राजा राम का जानत है । दूसरा राजा हम गहा मानत । पुराने जमाने का बाल है—सन् १६१० और १८११ का जिधर मगा उधर राजगह के कम बला थ । हम उन म्निा बच्चे थे और बचपन म माग्नि म बानने का मौका भी म्नाता था । एक माग्नि में मैने कहा कि हिन्दुस्तान के हम कुत लाग राजद्रोहा है क्यकि रामजा के सिवा हम किसीका राजा नहा मानत । इसलिए अब चिनका दूहन दो राजद्रोही के नाम पर ? हमारे राम ऐसे अद्वितीय राजा हा गये कि उन्हाने बन्दरा स जानबरा स बान लिया । भादया से सवा ला । सवरा स सवा ना । सवका सवा ना और सबका गौरव किया ।

तुलसा कहें नहीं राम सो साहिब शाल निधान

मैं बहुत बार याद करता हूँ तुलसीदास ने बर्णन किया प्रभु सद्यतल कपि डार पर ते किये धाप समान । व वैद्यत थे पड पर ऐसे बैवरूप बन्दर कि किसीकी कमी म्जान करना जानने नहा थ । प्रभु पड के नाचे

श्रीकृष्ण-रुमरुग

आज हम यहाँ भगवान् श्रीकृष्ण के जन्म दिवस पर एवत्र हुए हैं। भगवान् कृष्ण हिन्दुस्तान के परमप्यारे हैं। पूज्य तो वे हैं ही, प्यार भा हैं। कुछ लोग पूज्य होते हैं कुछ प्यारे। लेकिन भगवान् श्रीकृष्ण हमारे लिए परमपूज्य हैं और परमप्रिय भी। हम कह नहीं सकते कि वे हमको जितने प्रिय हैं।

पूज्य और प्रिय से सात्वता

हमारे एक मित्र थे। उसी बहुत बड़ा बीमार। हुई थी। अच्छी नोट नहीं आती था। बहुत सपने आन थे। बीमारी से ठीक होने के बाद हमने मित्र और कहने लगे, हम आपके—यान बिनावा के—और महात्मा गांधीजी के विचार के प्रेमी हैं और आपके ही विचार पर कुछ अमल करने का सतन कोशिश करते हैं। आप जाना का सगति भी हमें मिली है, लेकिन बीमारी में भी जो स्वप्न आये उन स्वप्न में न गांधीजी याद आये न आप माँ आये हमारी पत्नी या हमारी परमप्रिय है और हमारे बच्चे जो हम परम प्रिय है वे भी याद नही आये और हमें याद आयी हमारी माता। इसकी क्या वजह है? हमने कहा, 'आप एक ऐसे दुःख में थे कि जिनमें आपका सात्वता का जखरत थी। आपकी पत्नी और आपके बच्चे आपको क्या साबना दे सकते थे? आप ही उनको हमारा सात्वता देनेवाले रहे हैं। वे आपसे मागर्गत नही दे सकते थे। वे मित्र प्यारे थे। हम और गांधीजी आपसे पूज्य थे। आपने हमें पूज्य माना था। विनय विचार के प्रसंगों में हमारा सलाह आपका मिलती थी। लेकिन आप मित्र आध्यात्मिक सबद

लेकिन कृष्ण भी कुल के नाने मित्र थे। अपने सेवा का गूढ़ का भाव बन गया। उन दिनों एक मंकेन था कि—'गाम को लगे बन्द होता था। लडाई बन्द होने पर अजुन मध्योपामना के लिए जाता था और मगवान् कृष्ण घाटा की सेवा करने जाते थे। घाटा के दरार में बाण लगे हुए रहते थे। उनको निराशा महाना खरग करना।

मराहा सध्या

मराहा उनकी सध्या था। अग्निर युद्ध का समाप्ति पर युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया। तब यज्ञ में भिन्न भिन्न लागा का तरह-तरह के काम साम लिये—बन्द लागा का और छोटे नागा को भी। श्रीकृष्ण धाये और काम मागने लगे। युधिष्ठिर ने कहा 'आपका हम क्या काम दे सकते हैं?' वाले 'आप नहा देंगे तो मैं तब लूंगा। तब लाजिये। और उठाने अपने लिए काम तब लिया। भाजन के लिए लाग बैठने थे उनका पत्तों उठाने का और भूमि का गावरम तोपने का काम ल लिया। अग्निर तुनमातामजा के गद का उपयोग करके मैं कहूंगा तो तुममोतामजी भुक्त धमा करेंगे और मान्य भा करेंगे—तुलसी कहूँ नहीं कृष्ण से सेवक नीच निधान। हम सभी राजा को सेवक नहा कहते हैं वन्नि राजराजेश्वर कहते हैं। अभा हमारे एक भाई ने यहाँ कहा कि कृष्ण याग-योगेधर थे। लेकिन अपना स्थान उठाने सेवक का माना और सबसे बड़ा बात यह कि लोगो ने उनका स्थान सेवक का माना। जब-जब सेवा लेना थी तब कृष्ण से सेवा ली गिता मकाच के ला। अग्निर मारा भारत गापाल-कृष्ण का नाम-स्मरण करता है। गाया का चरानेवाले गाभेवक श्रीकृष्ण।

श्रीकृष्ण के जीवन में अत्यन्त प्रसंग हैं। जन्म रामजा के जीवन में ही गौतम बुद्ध के जीवन में ही ईमाममाह के जीवन में ही। वैसे अनेक दूसरे महापुरुषों के जीवन में भी हैं। लेकिन श्रीकृष्ण के जीवन के प्रसंग में चाहे प्रसंग मुझे निम्नतर था आत है।

सेवा मूर्ति

एक है सेवा-मूर्ति। वरुणा के साथ, वरुचिषा के साथ गोपिया के

बैठने थे और ये पेड़ के ऊपर। लेकिन ने किये आप समान—उठा आने समान बनाया। 'तुलसी कहें नहीं राम तो साहिब गीत निधान।' ऐसा स्वामी ऐसा साहिब। विलुप्त अविनया, उद्धत, जड़-मूढ़ जीवा की इज्जत करनेवाला। उनमें प्यार में सवा लेनेवाला। तुलसीदासजी कहते हैं, राम को छोड़कर दूसरा माहित नहीं हुआ—तुलसी कहें नहीं राम तो साहिब गीत निधान। इसलिए हम रामराज्य का अणु करत हैं कि गीत ही हमारा अपना में सर्वात्म्य राज्य होगा, उस हम रामराज्य नाम देते हैं। तुलसी कहें नहीं कृष्ण सा सवक शील निधान

लेकिन मेरी माँ कहती था रामचन्द्र सेवा लेते-लेते ऊँच गये। किसकी सेवा उठाने नहीं ली? सबकी सेवा ली प्यार में ली। सबका समान बनाकर सेवा ली। रामजी ऊँच गये। माँ कहती थी कि रामजी न नया अवतार लिया कृष्ण का और वनम लायी कि अन्न हम किमीची सेवा नहीं लेते, सबकी सेवा करेंगे। कृष्ण ने धान की सेवा की माया की सेवा की। रामजी ने बदरा से सेवा ली, राध्या से सेवा ली। दूसरे अवतार में घोडा की सेवा की और सेवा करनेवाले सेवक बने। माँ कहती था रामजी बने भाई थे। उठाने सेवा ली। दूसरे अवतार में ये छोटे भाई बने क्योंकि उनको सेवा करना था।

विविध सेवा

सुविष्टिर के मस्तक पर रामाभिषेक किया और अपने निज व मन्त्र पर कभी रामाभिषेक नहीं होने दिया। बंग-भुवि के बाल अपने हाथ में राज्य बना लिया, उग्रान को सीमा। द्वारवा चने गये तो मुक्त राजा नहीं बने चन्द्रराम को राजा बनाया। धीवृष्ण अर्जुन के सारथी बने। रामजी ने सवक सेवा ली। और क्या किमाकी माल था कि रामजी से सेवा लेना और उनसे कहता कि जरा मोटर चलानी है, आप हमारे शापर बनिये। क्या कोई बच्चा सज्जना था? उनका अपना एक स्वामी था लेकिन अर्जुन कृष्ण से कहता है तू मेरे स्वामी बननेगा? माटर का शापर बनेगा? या कहते हैं जा ही। यदि सर्वान करत है अर्जुन धर्मिय था

मे जड़ हूँ जाण-अज्ञ विचार के सप्रणया ग जड़ हूँ अज्ञान के गुणम—जाना होने पर भा गुणम—भाम्म प्राण विभुर नुर है । बाल नरा मर । ऐस मौके पर शैशव न भगवान् को याँ दिया धीर कवि निख रहा है कि भगवान् ने भक्त का रक्षा क विरा दम-मग भवनार रिये है । कहुन है एक भवतार जना बाका है लेकिन दस जहिर है धार ग्या-त्रवी भवरावतार लिया है । कपड़ का हा भवनार न दिया । क कान्त बने । जहाँ कोद काम जहा धावे वहाँ क धावे । धावक न जाना जाता है कि स्त्रियाँ भाना रगा क लिए रिस्वीन रने । शैशव ने पिम्पा न नहा रमी था । उमने भगवन् प्रेम रगा था । म्म प्रेम क सामने तु शामन की बुद्ध नग्य शनी । सोतामाता ने क्या प्रेम रखा था—भगवन् प्रेम, तो गवाणु का बुद्ध नहा शनी । यह गया-मूर्ति धीर प्रेम-मूर्ति यँ चित्र हमार सामने धाहृष्य ने रगा रिया ।

शैशव-मूर्ति

तामरा चित्र, जहाँ शनों मना के बीच रय रगा रिया है । उम जमाने का प्रश्नतीय धीर जिनने गा-अज्ञ क प्रमग में भाव्य-शैशव क भी छत्र छगये थ, वह माह कर रहा है माहृम्य हा गया है—स्वजन परजन भेन करव दतीन करता है । शनों बाजू स्वजन है माना क कहता है । अगर चीना पीज होती पाकिस्तान की पीज हाता या धीर कर् पाज हाता ता कर मरता था मुरावता । लेकिन ये तो मेरे ही हैं, ऐगा नेद वरने अहिज्ञ-वृत्ति क कारण नहा भागा धीर मयम्ब के कारण प्रश्नित शीर मयाम की धान करता है त्रिस गीता ने प्रजावा कहा है । धनीध्या मन्मोचस्त्व प्रजावादाँश्च भावमे—हाँ है जगको धाम-ममें । मा प्रमन हातर उम मोर का परम वत्रव्य का सपुट चराकर अगाव का वानो के ममान दीवनेवाला वाने वह बाल रगा है । उम समय माहृष्यु भवान् का एक रूप प्रकट हुआ—जान-मूर्ति । तय वह उरगा रिया जिन उरगा ने हिन्दुनाम का पाँच हजाक मार पढ़ने की विचार प्रणता का प्रभावित रिया धीर गाना पर भाव्य लिखनेवाक एव मान्द निवद कि जिनरी

साथ श्राद्ध करनेवाले, खेननेवाले आशालवृद्ध उनका साथ करनेवाले । वह लीला इतना प्यारा है कि कृष्ण का 'बाललीला हा मगधूर है । मैं उसका विस्तार तथा वर्णना । एवं हा बात कर्तुंगा कि आशुष्ण की अभे भावनामय गीता का योग ने गहन अर्थ लगाया है । गापिया क साथ श्रोष्ण क जा सम्बन्ध थे, उन सम्बन्धों का स्मरण करने शुक्ल्य नई परम ब्रह्मचारी और परम साध्या भा पावन हुए । लेकिन उम विषय में हिन्दुस्तान में एव गहन धारणा बन गया । उनका गापिया क साथ उ सम्बन्ध था उमस अधिक पवित्र सम्बन्ध हा रहा सरता ।

श्रीपदी पर एव विशेष प्रसंग छाया था । बन्ध-हरण हा रहा है । वृद्ध-कुट्ट पायना गिनती सत्रवा था है । बाइ बात धनी नहा, ता आशुष्ण का यात् कर रहा है, ह नाथ ह रमानाय । क्या यात् कर रही है श्रीपदी ? मनात्व की रणा क विण । गाविश्य का रणा क विण । प्रायना में कहती है हे नाथ हे रमानाय ह्य तरह भगवान् क जा नाम भिये श्रोष्ण न, उमकं महाभारत म तीन श्वाक है । उसमें कृष्ण का एक नाम पुजारा— ह कृष्ण गापो-जन प्रिय । अगत् कृष्ण का गापी क साथ गलत सम्बन्ध हाता ता पाविश्य रणा क सम्बन्ध में श्रोष्ण उमे यात् करती ? और गापा जन प्रिय नाम म ? इसलिए इसके पीछे कविषा ने जो कुछ विवृत बणन किया उसकी जिम्मेवारा उनका अयना है, भगवान् कृष्ण का नहा ।

प्रेम मूर्ति कृष्ण

जब बाइ बचानेवाला नहीं मिलता पति-व्रता भी धममर्थ मानिन हुए जनता भूक है पतिव्रत श्रोणीनियन बोन नहीं रहा जत् है, भूड है और पश्विक आपानियन क जो बर-बड़े नेता भाग्य, द्राण, विदुर कुछ बात नहा रह है । गूरुनाम बह रहा है 'भीष्म द्राण, विदुर भये विस्मित ।' यह पूछ रही है क्या शून म, प्रण में शून हारन पर पत्नी को शैव पर लगाया जा सकता है ? यह मजाल वहाँ बडा पेचीला ही रण है । आज का बया भी जवाब दगा कि यह गत है । लेकिन उम जमाने के अत्यत पानी भीष्म श्रेण विदुर—धयत पानी लेकिन समाज के रीति रिवाज

शंकराचार्य

शंकराचार्य अपने जमाने में अद्वितीय थे। उनके भाष्यों पर अमरस्य प्रहार हुआ। परन्तु जम भीम का बकासुर घूँसे मारना रहा और वह चानचलाता रंग उसने परवाह नहीं का हुनत्रा रहा। उसने कहा मार्ग मरा व्यायाम हागा। सा रंग हू वह हजम हो जायगा। फिर श्रेयसा। उता नरह चितने प्रहार शंकराचार्य पर हुए उतना उनका मारा मजबूत ही हुआ। आज भी ता तत्त्वज्ञान उन्होंने भारत का दिया है उसने सिद्धा हमर किसी तत्त्वज्ञान का अस्तर भारत पर नहीं है। हमारा अमल दूरा फूटा ह। कर्ना अन्त और कहीं दुम। लेकिन हमारा यद्धा अन्त पर है।

हमारा अयोग्य आचरण

आज ही एक घटना घटा। बड़ी दुःख घटना है। यहाँ माने क पन्त एक जगह हम गये थे। उन दो सदाता म पाच मिनट का अन्तर था। हमने कर्ना बग लि यहाँ हम कृष्ण के बारे में बानेबाने हैं। ता यहा क गग वहाँ क्या न आयें? और एक ही सभा क्यों न हा? सामने लम्बियाँ बैठी थीं। जोला ग एक सभा होना चाहिए। फिर हमने सनान पूछा कि एक हा सभा क्यों न जानी चाहिए? तब लम्बियों ने बग लि ही, एक ही सभा होना चाहिए। फिर हमने कहा एक हा सभा हा, ता वहाँ हम बाने। यहाँ क्या बाने? तब सभा में एक भाषण शर बाने कि यहाँ पार्टीवाजी है इसलिए यहाँ क लोग वहाँ नहा जारा। मैंने बग लि मैं आपको भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ। पार्टीवाजी के कारण आप लोग नहा जाता चाहेंगे, तो मत जाइय। नमस्कार है आपका। जो वहाँ जाना चाहें, व जा सकते हैं। और मैं वहाँ से बग गया। अन्त यह पार्टीवाजी। एक पुष्प का आप धान्तर बरत है। मुझ आप धान्तरगाय मानते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण के लिए परम धान्तर आपका मन म है। लेकिन आप उसका भा कीमत नहीं करत आप हमका भी कामन नग करत। आप सुनात है कि पार्टीवाजी है

बराबरी का महान् भाष्यकार दूसरे विधा ग्रन्थ का नहीं मिले। वेस भाष्यकार का दूसरे ग्रन्थ का भा मिल लेखित गीता का भाष्यकार जिन्हीं में थे, लाल नेता भी थे, गानी भा थे, परमज्ञाना भक्त, यागी थे। एम पुण्य, उस उस जमाने के नेता गाता के प्रभाव से प्रभावित हुए श्रीर अपने अपने जमाने के लिए जरा जाल एक ही गीता में निकाले। पार कई गातोपत्त साधान् गमर प्रगण में गान वित्त में लिया। प्रवत्त गमत्र सम्पात। गमत्र का सभार इकट्ठा करके आमने सामने रखे हैं। प्रवने गमत्रमम्पाते धनुस्त्रमय पाण्यव — ऐसा हालत में अत्यन्त योगयुक्त वित्त से ऐसा लिख्य मय उपदान लिया। इसके बाद भी कही पृथक् गया था कि वह उपदेश फिर से शीजिये, हम भूत गये। सा ज्ञाप्यु ने कहा था भूत गये वा हम भी मूल गये। जिस वाग्युक्त वित्त से उस वक्त कहा था, व. वाग्युक्त वित्त भव नहीं है, ऐसा भगवान् ने कहा है।

‘गीता’ का महान् भाष्यकार शारदाचर

गीता का कौन भाष्यकार मिले ? बहुत नाम हैं। बोड़े हा हैं। अभी चार नाम बताऊंगा। गकर श्रीर गमानुज गानेश्वर श्रीर गाधी। चार चार युग के प्रतिनिधि अपने अपने जमाने के नेता। आज महाराष्ट्र में गकर पूजिये गानदेव से बकर काश नाम वहाँ नहीं है। दूसरा नाम जानत तक नहीं। अत्यन्त नाम हाकर गीता का भाष्य के लिखने हैं। क्या कहते हैं ? माझिया सत्यवादाच तप वाचा केने बहुत बप — अनेक जमा से सत्य बालने की तपस्या मेरा वाणी न का है। ध्यान दन सायब गम है। मामूला नहीं है। गानेश्वर महाराज बान रहे हैं — मेरी वाणी न निक इस जमाने में नहीं, अनेक जमाने में सत्य बालने का तपस्या का है। किन्तु लोग ऐसे निकरेंगे जा कहेंगे कि इस जमाने में भी गम भूत गया दाते। माझिया सत्यवादाच तप वाचा केने बहुत बल्प — श्रीर उपर परिणामस्वरूप गीता का भाष्य लिखने का भाष्य मुझ निजा ऐम के लिखत है।

उरुद गजना करनेवाले पान्थि की घोर प्रणमन की भाषा य यहाँ वाच्य है। यह सज्जा सब भाषा यहाँ क्षम है जहाँ गीता के सामने के सन्ने है। कहते हैं कि गाथागार अत्यन्त गहन है। अनेक ने स्वरा विवरण किया, जिस पर भी वह अर्थ अनी दुगम हा रह गया। इसीसे स्वरा अर्थ के प्रकाशन के लिए मेरे द्वारा प्रयत्न किया जा रहा है। अने नम्र हो गये।

रामानुज

रामानुज कोइ सामान्य पुरुष न। ये। हमारे जा उत्तममनम शनी, परमपाना घोर परम भक्त माने जात है और वा हमारे गिराधार्य है नुत्स्योगमनी घोर बबोर के रामानुज के गिज्य थे। यह इतना प्रभाव अनरी भगवद् भक्ति का था। सरडा भक्त उनके सप्रभाव में थे। ये गीता व भाष्यकार थे।

गाथा भारतीय नेता

एक जमाने में महात्मा गांधी निरर परविं ये नेता थे—हिन्दुस्तान के बहुत बड़े नेता। उनरो अने नेनुच में तावन का वमा मातूम हुई, ता गीता वा भावातुन करके तावत प्राप्त वा। खर। नवाधों का निन्, निन्दर प्रेरणा देनेवाली भगवद्-गीता।

गीता नित्य-नूतन

पान्थेव मगराज ने पानेश्वरो में पावनी-गरमेश्वर गंवा किया है। गीता का स्वल्प-वर्गन के कर रहे हैं। नेप हह मृणे नेगिजे। देवी जमे कां म्बहप तुम्हे। समे हे नित्य ननन देविजे गीतातत्त्व। हे दधी, ह मायादेवी पावती महादेवी, जैा तर स्वल्प वा निगाय हा नहा सक्ता, उमी तरह यह गीता-तत्त्व नित्य-नूतन है। माया वा स्वल्प क्या क्या जायगा? वह अज्ञाना रहता है। हजारों रूप माया लेती है 'इने मायानि पुरहव ईयते' इद्र माया के कारण अनग अनग रूप धारण करता है। सहस्र-गन्ध अनत अनत रूपधारिणी माया—जैश गाना-तत्त्व नित्य-नूतन है। 'सम हे नित्य नूतन देविजे गीता-तत्त्व। गीता वा रूप

कमलिए वहाँ नहा जायगे । जहाँ श्रद्धा का विचार चला वहाँ इसके काइ मानो है ?

मही लोग कते है भारत के अपने ही लोग कि अगर हिन्दुस्तान पर चीन का हमला होगा, तो हम सब एक होंगे । अरु कम्बुडो, एक शान के लिए क्या हमने का जकारण है ? सोचने का दाव है । हम बिलकुल नाशायब हैं । श्रद्धा के लिए काइ योग्यता हमारी नहीं है ।

शकराचार्य का महत्ता

हिन्दु भा आज भारत पर किसी तत्त्वज्ञान का प्रमाण है, ता वही शर के तत्त्वज्ञान का है । उस जमाने के के चित्रने पराक्रमी पुष्टय थे । हम सोचने है के तत्त्वज्ञानी थे महानरि थे श्रद्धाचारी थे योगी भी थे, मयासी भी थे और परिश्रम विना कते थे । सार भारत में पदल पदम घूम । लोग कहते हैं कि बाग पदल घूम रहा है लेकिन शरगचार्य एक जमाने में घूमे जिसमें रास्ते अच्छे नहीं थे । क्या उनके आगे पीछे मात्र चलती थी । उस जमाने का आठ साल का उबरा पदल-पदम निवन्ना है और कश्मीर तक पहुँचता है । हम श्रीनगर पहुँच थे । वहाँ शंकराचार्य का नाम का एक पहाड है । वहाँ—पहाड पर—शकराचार्य समाधि नगरी थी ऐसी कहाना लोग मुनाल थे । के कहते थे कि शरगचार्य का नाम आप आये हैं । मैंने कहा दूसरे भी आये थे, लेकिन व्यापक धर्म-काय नर नहा आये थे । मरा कार्य व्यापक धर्मकाय इन लाग न मान दिया और शरगचार्य का स्मरण करके मैंने कहा 'आप मरा बहुत शर कर रहे है जिसके लिए कोइ योग्यता मैं अपने म नहीं देखता हूँ ।

राजना करनवाले गीता के सामन नम्र घन

शरगचार्य का भाष्य करते हुए शरगचार्य कहते हैं 'वय घूम । हम शरके वदाम हम बोलते हैं उम कहते हैं ऐसी गन्ना करत है तस्मि जनी गीता पर भाष्य करने का प्रमाण आया वहाँ कहते है उम गाँवा व आविष्कार का मुन्ने कन सिखा जा रहा है । कमलि प्रयाग कतरि प्रयाग में रहा । वय घूम । इन आलने है, इन आगने पूछा है हम

प्रमाद्येत ? लेकिन लक्ष्मण ने एक बार मवाल पृथ्वा । आजरल तो प्रान
 गू स्थिते जान ह । न मवा है, न मगति न सब । अक्षरारवाले धान है
 धार प्रान पूछते हैं जैम कोई मुनरिम हा । भट्ट भट्ट प्रना वा प्रहार करत
 है और उनक ज्वार भो उनको नानी चाहिए । लेकिन न मरा की हिम्मत
 नग ह था । गारह सात वा याना में साध रहा मवा की और जाने
 नमय हा गये रामजा म ल मण । तुलसीदासजी उगगत करत ह नदमण
 वा । धय ह लक्ष्मणजी । रघुपति कीरति विमन पताका । दड समान
 मपड जस जाग । रामजा की मगाध्वजा के तिए मगाध्वा भडे क तिए
 नमगुना न के समान थे । भग ऊचा रहे हमारा भग उचा रहे
 ऐसा मव कटने हैं । लेकिन टंगा उचा रहे हमारा यह काइ कहता है ?
 वा नही कटता । नाम भड वा नाम डडे वा । बिना डडे के भडा हागा
 ऊपर ? जब दडा मगा हाता है नव उनक मिर पर भंडा लखता है ।
 ड वा नाम नहा बह ता मेवा कर रहा है । नाम भ वा । रामजा का
 नाम लक्ष्मण का नाम नग । रामजी का मग भडे क समान और लक्ष्मण
 का मग टडे क समान । ऐसा तुलसीदासजी विलन ह । अम्भुत है तुलसी-
 दासजी । नमण भा अम्भुत रामजी भी अम्भुत और हम भा अम्भुत,
 निनवा य भाष्य हासित हुआ है । एक बार ही रामजी का सनात पूछा
 गया और वही रामजी ने उपणा किया और धन में नव व राय छा
 क खन गये थे तड दा-दार वातें बनाया था । उहाने ज्याण उपणा
 मग किया । प्रमल किया तो उनरा नाम ही नाम चना । भगवा कृष्ण
 ने गोता वा उपणा दिया ता बह उपण्य बना । य दा चीजें है जो
 भारत की ताकत है धार दुनिया अगर पचाने ता दुनिया की ताकत है ।
 भगवान् का नाम और नाम्ययोग वा उपणा ये दा चीजें है ।

अत्यंत अनामत्त

धामर धामने भगवान् क तान प्रगग दन । सवामूर्ति प्रेममूर्ति
 नानमूर्ति । चाये प्रमण ना वगन करके म समास बन्गा । कीरवो का
 सहार हुआ, पाडनों का भी हुआ । पांच पात्र इधर उधर चले गये । यध

नित्य-नूतन है। हमलिय रिमीरा गाना वा कमयोगशास्त्र कहना, किमीका मानयागशास्त्र कहना इत्यादि सब पित्रूल धारें है। गीता वह शास्त्र है, वा आप चाहत है। वन आपने लिए जिम शास्त्र वा जरूरत हागी वह शास्त्र गाना आपक लिए वा वनेगा। आज आपक लिए उमा धार चाहत है वना गानाशास्त्र वनेगा। निरथ तनन हे गीतातत्त्व' मान्य महाराज ने क्त। मैं मानता हूँ गाना वा लाव प्रिय बनाने में ज्याग-न-ज्याग का क्रियोने किया है ता वह शास्त्र महाराज ने रिया है। उनर काग्य गीता धर धर म पढ़न गया। इतना लाव प्रिय धना म उट्टने सब निरा अपने अनुभव क माथ। म जमाने के नेताधा वा जिक म कर चुता।

रामचा का नाम और वृष्ण की गीता

वना परम शिव्य भय्य पान अर्जुन क निमित्त मे भगवान् ने लिया। इमीक आधार पर हम भगवान् वृष्ण की वक्ता करते हैं। वृष्ण वा जगत्पुरुष तेमी सत्ता तेन है। हम साचने हैं कि हिन्दुस्तान का उदार करनवागी सप्रम वडा कौनसा चीजें है ? आवृष्ण वा गीता और रामजा का नाम—वे ल चाहें है जिनरी बराबरा की काद तीसरी काज वाग निनेगा। रामजी ने बहुत उपदेश महा लिया वे मयादा-पुरुषात्तम थ। वे कहत थ 'हमारे के भगवान् न मर्याग बतायी है इमलिए मुझे क्या बनाना है ? मुझे ज्याग कुछ कहना नहा है। मुके ता उस पर धमन करना है। इमलिए उहान मयाग दिखाया उपदेश महा लिया है। एक मोके पर उपदेश लिया है। तुनगीतामजा बणन करन है एक बार प्रम मुख आसीना एक वक्त जगत म भटरने हुए अत्यन्त एकाउ म गान स्थान म प्रमत्र वित्त स प्रभु बैठ थे। मुख्यमय अवस्था म बैठे थ। लक्ष्मन कह वधन छलहीना। उन वक्त लक्ष्मण ने सवाल पूछा और उतरा जयार रामजी ने लिया है, जा तुनसी मजी १ डेड पृष्ठ में निता है। वही एक प्रयाग है जिम मय उहान कुछ उपदेश लिया। नमग निरतर उनके माथ रहत थ लेकिन रभा प्रश्न पूछा नहीं था। वे लेखक थ कि प्रभु कस बैठन है कस बालत है—किमासीत कि

पा रहे हैं य उमे काट रहा है वह उम काट रहे हैं। बनराम भा दुक्ति होकर चल गये। भगवान् आहुत्या वहाँ से दूर चल गये और एक वग के नीचे बैठे। इधर सहरा चल रहा है और व दूर चले गये। वेड के माने जावर ध्यानस्थ बैठे पुत्रों पर पाव रखा आराम से बठे है। बाप्य मां उनके पाव पर पडा था। उनके पाव का आरक्त वण देखकर दूर से एक व्याध ने समझ कि शायद हिरण हागा और उसने बाण मारा। मून का धारा बहने लगा। त्रिवार पवने के लिए नत्राक आया ता दखा भगवान् आहुत्या का उमन बाण मारा है। बडूत दुषा दृषा, नत्रार पटुषा दृष्यावा वा न रह है, मा भी जर ! व्याध का नाम जरा था। 'जर, 'मा भी । मूने मरा न्छा फण की। मुझे यह जगर छोटना ही था। इसलिए तू मरति म जारा। तुझे सजनि प्राप्त हागा। भयोगनि नहा मिलेगी। व्याध बचारा पश्चात्ताप्य था। परमेपर वा कृपा उम 'र' था। उर ना स्वरा जाना या या लेकिन एकनाय महाराज कहते है कि प्रभु ने अन्तिम समय में हम भजा व विप क्षमा का आन्त लिखाया। परम भमा का दान कराना।

दशमगाह का कहना है। उम भा पंखी पर कन्वादा यमा थ । हाव-पाव बाँव से बाले टाजी या लात्र बेना हो रही था। आधिर आया जा था। वाने 'Eh, Gh kama Sabaktai'

भाय हिर है। भायत है आउ टेम्टाम में। वे भगवान् से कह रहे है कि हे भगवान् क्या तुने मरा त्याग किया ? क्या नू मुझ छो रहा है ? और एतम या आया न्मामगाह का कि भगवान् ने मुझ छाना नहा है भगवान् तो अतयामी बठे है। वे आहत नही ! फिर क्या,

Thy will be done —तेरी इच्छा जसा होगी वैसा हागा और आधिर त्रिन्होंन उनका सजा था उनने लिए कहा कि प्रभु उनका क्षमा करेगा, बसकि They know not what they do —वे जानने नही वे क्या कर रहे है। इसलिए ह प्रभा उनका क्षमा कर। ऐसा क्षमा का आन्त ईसा न लिखाया। ईसा से एक बार पूजा गया था कि विपनी बार भमा करना चाहिए ? उनने कहा था, साठ बार। फिर पूछा सात

चिरञ्जिव और भगवान् टूट्टा। बाकी सब मारे गये। बच्चे-बच्चे कल्ल
हुए। एकाध बच्चा रू गया। तेसी हालत में गांधारी ने मिरने भावान्
जा रहे हैं। गांधारी हमारा धौवा पर पट्टी बांधे रखती थी। पति घृत
राज अंधे थे। उनकी महानुभूति में वह झाला पर पट्टी बांधी थी। बहुत
गान और मन्थी थी। दुर्घोषन की बुराई में कभी उमने उत्तेजन नहा
निया। उमका पतन हमारा धमक लिए रूना था। उसके दानक लिए
प्रभु गये युद्धक अंत में। उसका सीक सी लडके मारे गये हैं। बहुत
ध्वनि हुई थी और धाट्टा सामने लडे हुए। उहाने नमस्कार किया।
गांधारा कहती है क्या यह सब तुमने करवाया? पाटव गये कौरव गये
ता क्या पाटव बचेंगे? यानी गान किया। आठपण हंसि और बाने
यद् भावि तत भविष्यति। जा हानेवाला है वह हागा। कतने
वेकिन थे।

राजा रजिक्मा ने कई अछा समचारें पाचो हे। उन सब मुन्दर तस
बारा में हमें जिम तसवीर ने खीचा वह तसवीर कही है, जिसमें धृतराष्ट्र
तरवार में बैठे हैं मांग की जा रही है पाडवा का तरफ से कि आधा राय
ता नो। और कृष्ण हतने बेपरवाह वहाँ बैठे ह। उम वक्त दुर्मोथा
गालियाँ दे रहा ह धृतराष्ट्र चुपचाप बैठा ह मुन रहा ह।
मुन्दर कम्पान कको क लिए कुछ धर्म विचार की भूझ। दाना में खीचा
तानी हा रही है और वह मुन रहा है। सारे धुव्य हैं। सबके चेहरे धम्य
दीखन हैं जहाँ सज्जना का गालियाँ दी जा रही हैं। कृष्णजी कुर्मी पर
बैठे हैं। उनका नज्जिक मात्यकि बेटा है। वह एतदम खान होता है और
तयवार मोचकर भागे बडना चाहता है। और उम हाजन म भगवान् ऐस
बैठ है माना कुछ भी नहीं हो रहा है। उनका चेहरे पर को भाव रहा।
मात्यकि का हाय जरा पकड लिया उस रोकने के लिए। यहाँ भी अत्यन्त
सामक और बह दिया यद् भावि तत भविष्यति। धाविर जो
हानेवाला है सो हागा।

परम क्षमावान्

धाविर म प्रमग भाया—धाविर धावत में लड रह हैं दाराव भी

पा रहा है यन्त्र काट रहा है, वह उसे काट रहा है। बजराम ना दु खिउ
होकर चल गये। भगवान् धातुपत्र बना स डर चने गये और एक वन क
नाच बैठे। इधर महार चल रहा है और व दूर चले गये। पड के नाच
जाकर ध्यानमय बैठे धुन्ने पर पाव रखा प्राराम स बैठे है। काफ़ी मात्र
उनके शरीर पर पडा था। उनके पाव का आरक्ष बग दखकर दूर से एक
व्याध ने समझा कि गायक हिरण होगा और उसने बाण मारा। खून का
भारा बहने लगी। प्रिय पकडने के लिए नवनाक आया ता दस्ता
भावान् धातुपत्र का उभन बाण मारा है। बन्त दुखी हुआ, नवनाक
पुत्रा कृष्णनाथ रह है मा नो जर। व्याध का नाम जरा था।
ह कर 'मा भा।' खून मग च्छा पुण का। मुन यह शरीर छोडना ही
था। अग्नि नू मद्रति में जाया। तुझे मद्रति प्राप्त हागा। अधाग्नि
नग मिलेगा। व्याध बचारा पश्चात्ताप था। परमेश्वर का वृषा उम
पर नू था। उन ता म्यग जाना ही था त्विन एकनाथ महाराज कहत
है कि प्रभु ने अन्तिम समय में हम भक्ता के लिए क्षमा का आत्म प्रिया।
परम क्षमा का दान कराया।

इसाममाह का कहाना है। उन भा फाग पर लपकाया गया था।
हाथ-पाँव बाध थे कीर्ने टाका था तात्र वेदना हा रहा था। आग्नि
गन्मा जा था। वाले Eli, Eli lama Sabakti

भापा हिन्दू है। गायन है आठ टेस्टामन्त में। वे भगवान् से कह रहे
हैं कि हे भगवान् क्या तूने मेरा त्याग किया? क्या तू मुझे छोड रहा
है? और एकदम या आया य्नाममाह का कि भगवान् ने मुझे छोडा
नहीं है भगवान् ता अन्तयामा बठ है। वे छोडन नहा। फिर कहा

Thy will be done —तग इच्छा जमा हागी वैसा हागा और
आगिर जिन्हाने उनका सजा दी उनक लिए कहा कि प्रभु उनका क्षमा
करगा क्योंकि They know not what they do —वे जानन
नगी वे क्या कर रहे हैं। इसलिए हे प्रना उनको क्षमा कर। ऐसा क्षमा
का आत्म इसा ने प्रियाया। ईसा से एक बार पूछा गया था कि कितनी
बार क्षमा करना चाहिए? उसने कहा था मान बार। फिर

रफा भी क्षमा करने पर काम न हा ना ? ता वाले "Seven times seven" — उनवास बार । धर उगर धाने पूछे का बुध रहता हा नहा । याने जितनी रफा करना पडेती उतनी बार क्षमा ही किया करा— क्षमा गस्त्र करे यस्य दुजन कि करिष्यति ? क्षमा हा तुम्हारा गस्त्र है । जहाँ हाय में क्षमा का दान्न है वहाँ दुजन क्या करगा ? यह ईसा का बोध है और उमीव अनुमार इसा का गरीर गिरा । इसामनाह ने कहा कि वे जानते नहा कि वे क्या कर रह है गलिए ह प्रभु उर क्षमा कर । भगवान् वृष्ण ने कहा मा भी जरे । तुम डरा मत, मरी इच्छा ने थी । तुम्हें सन्नति मिलेगा । और उराने अपने वध का प्रसन्नता से स्वीकार लिया ।

परम क्षमानान् धा ग वृष्ण धयान् मयामूर्तिः प्रेममूर्तिः ज्ञानमूर्तिः क्षमामूर्तिः । ये चार प्रभग हमारा शरीर का सामन रहत हैं और धा धान है । ॐ

इंदौर

१४ ८ '६०

श्रीकृष्ण जमाष्टमी के अवसर पर

ॐ यह प्रवचन करते-करते हर दो-तीन मिनट पर विनोयाजी का गला भर धाना था । बाणी भवद्व हा उठती थी । उतनी शरिया ने शानुमा की धारा ता प्रवचनमर ही बहती रही ।

भगवत्-शरणाता की आवश्यकता

स्मृति कैसे काटे ?

साधका के सामने दो समस्याएँ रहनी हैं (१) कुमस्वार कब जाय और (२) मुमस्वार कबसे आयें । जब यह ध्यान में आता है कि जान बुझकर नहा स्व प्रयत्न से नहा तो भी परिस्थितिवश कुछ मुसस्वार प्राप्त होते हैं और कुछ कुमस्वार भी । जितने हम नये सस्वार ज्ञानते हैं वे अगर अच्छे बनायें ना उनमें कुमस्वारा का शत सस्त है और कुमस्वार खत्म हो सकत हैं । अच्छे सस्वार बनाना भी कठिन है । उनके जरिये कुमस्वारों का कानना भा कठिन है । फिर भी यह पुण्याय में सधना है । उनमें भा कठिन कार्य है उन सस्वारा की स्मृतियाँ का ज्ञान । मान लाजिये, मेर पान मात ताले कुमस्वार थे और फिर मैंने मान ताने मुमस्वार हासिल किये ता मान-सात शून्य । यह हा सधना है । नय मात शुभ सस्वार बनाये जायें ता उनके उदले पुरान सात कुमस्वार खत्म हा सकत हैं । लेकिन उनका जा स्मृतियों हैं वे कस खत्म हा ?

स्मृति में अक्षगणित नहीं, बीजगणित

हमने पराधीनता मिटाकर स्वाधीनता प्राप्त की लेकिन रेखा में पराधीनता मिट नहा सकती । रेखा में पराधीनता को भी मिखा जायगा और उसके बाद का स्वाधीनता का भी । विचारा में मे पराधीनता गया, लेकिन स्मृति से नही गया । स्मृति में अक्षगणित नही हाता बीजगणित ज्ञाना है । अ—ब = जा कुछ बनता है, उसमें अ और ब दोना कायम रहते हैं । इसलिए पुरानी खराब स्मृतियाँ याद आती हैं और उनका मिटाने का बात बहो जाय तो और याद आती है । अतः स्मृतियों को

सामने अत्यन्त कठिन समस्या है कि स्मृतियाँ बस हटें ? जारनार प्रयत्न में हम कुसस्वारा का मो हटा सकते हैं लेकिन उनकी स्मृतियाँ बस हटें ?

मनुष्य के अपने पराक्रम से स्मृतियाँ जलती नहीं

जा लोग नास्तिकता का प्राण बहन है उनका पास दूसरा उत्तर नहीं है। वे जानते ही नहीं कि मारी प्राणें कितनी महरी हैं। वे समझते हैं कि मामूली व्यवहार में ईश्वर का क्या जरूरत है। लेकिन वे समझते नहीं कि स्मृतियाँ को हटाने जाया तो दोहरी स्मृति बन जाता है। स्वयं में तो वह भ्रात्री है। इसलिए यहाँ पर ईश्वर-भूषा का सवाल आता है। साधक के सामने अत्यन्त कठिन समस्या यही है कि निरंतर शुभ-अस्थान हासिल करने की वागिंग करने पर भी चालीस साल पहले एक खराब सा मुता था, वह आज या आता है। इन स्मृतियों को हटाने के लिए भगवान् ने मरण का याजना की है ताकि दूसरे जन्म में पुराना कुछ भाग न रहे। हम लोग का धर्म में जला देना है ता सत्त्व हा जाऊ है। लेकिन यह ईश्वरीय याजना है। आपका पुण्य सब वे स्मृतियाँ नष्ट करता है।

स्मृतियों का हटाने की युक्ति

स्मृतियाँ सत्त्व हा ता उनका परिणाम रहता है जा नया स्मृति बनकर आता है। इसलिए मुक्ति प्राप्ति नहीं होता। आपसी सम्बन्ध में हम पुनः-स्मृतियों को हटा सकते नभा भाग्यवारा समझें हागा। आज हमने अपने लिए एक तरासा अपनाया। बचपन में भा हम ऐसा ही करते थे। उम्र समय हमें कविता लिखने का शौक था। तान-चार दिन बहुत महत्त करने शब्दा बनावृत्ति बनी तेमा मामूम हाता और मुझे शम्भुग समाधान हाता ता मैं हृ कविता धनिनारायण का समर्पित करता था। फिर जब मैं बन्ता गया, ता कविता लिखकर गंगाजा का अर्पित करता था। आजकल बहुत-से कवियों की कविताएँ छाती हैं। मेरा क्याल है कि मेरा भी कविताएँ धरना, ता उनका प्रथम नती, ता दायम दर्ता ता जाता हा जाऊ। लेकिन मैंने सोचा कि मुझे प्रथम दर्ता मिल सकता है

स्मरण पक्का रह जाता है। व्यक्तिगत साधना में और सामूहिक मस्थापना में भी यही भ्रमेसा सदा शाना है। मैंने आज गाविया से कहा कि पत्रा व कागज ता जत गये और पुराना सब स्मृतियाँ मर हा गया। यदि आया ता भी बालना नला है। मर तर में मूफ मनसे आपन सामने विरावमान हूँ। प्रभु शरणना

जब हम सावन है कि मस्वाराय मर स्मृतिया का मर जलाया जाय ता वही ईश्वर आता है। और दिया जगह ईश्वर का दमल देने का जरूरत नला है। जना ने निजरा की बान का है। एव एव मरण में सब मर ना जाता है मरने मरत अनेक जन्मा म मत्र स्मृतिपा मरत होना है, एगा माता है। लेकिन हम दगो जन्म म सबका काटना चाहत है। इनक लिए हमारा पास का साधन चाटिए। यहाँ पर वह साधन इश्वर आता है।

जा पिड म, यही ब्रह्माड म

सारी गक्तियाँ पिड म नला है ब्रह्माण्ड में भा काइ गक्ति है। कुल दगने की गक्ति आँव में ही गता है, गक्ति मूय म भा है। सारी गक्ति हमारे फेफडा में नही है, कुछ गक्ति आवाग म भा है। इनो तरफ हमारा गरीर में जो का गमनेम है त्रिप हम आमा कहत हैं वेम ब्रह्माण्ड म भा बोई कागमनेय दगा जिसकी इस आत्मा का मन्द मिल सवना है। जग मूय का मन्द आँस को मिनती है आवाग का मन्द फेफडा का मिलती है उस तरह ब्रह्माण्ड की गक्तिया की मन्द पिड को मिलती है। मरन्ति पिड में जो अन्तयामी है उमका जग नव मन्द की जरूरत हा तत्र वह ब्रह्माण्ड से मिनती है। जग फेफडे म तरवाप हा तो मुगी हवा क लिए किमी त्रिपस्टेशन पर भगा जाना है। इस तरह बाहर मे मन्द हासिग करने का एव साधन हाता है। उमकी जरूरत जब तक नही मटमून हाता है तब तक वह नग मिलती है।

इश्वर की मदद जरूरी

स्मृतिया को हटाने क लिए इश्वर की आवभाव म प्राचना करना पडता है। स्थूल का जलाने का बाजिग हम करते हैं। लेकिन हमारी सारी गक्ति

मन्त्रों पर भी काम नगाना ता ईश्वर का मदद माँगने पता है। ज्यप्रकाशा ने एक लेख लिखा था—इ मॉडर्न कार गुडनेस। इस पर कुछ लोगो ने धोरे उगया कि गुनम क तिम ईश्वर की क्या जरूरत है? कुछ हन तक यन धोरे मता भा है। वहाँ पर ईश्वर निपटा का जरूरत अनिवाय नहीं है। यह काम ता हम एयिनम (नीतिगाम्न) मे निमा लेन हैं। तेकिन स्मृतिया का कम भूला जाय। भूतने की कागिग कराना धीर हन हा जानी है। इमनिण नम समस्या क समाधान में ईश्वर का जरूरत महमूम हाता है।

धर्म यानी पुरान अनुभवों का सार

प्रश्न क्या व्यक्तित्व जीवन में स्मृतिया का कोई स्थान नहा है ?

उत्तर कुछ स्मृतिया का कोई स्थान नहा है अछ्दी स्मृतिया का स्थान है। उनमे ना मुक्त हाता आखिरी चीज है। तेकिन कुस्मृतिया म व्यक्तित्व और सामाजिक जीवन में मुक्त गाना आवश्यक है। इस दृष्टि मे इतिहास नम ही मराध नियम है। यह स्मृतिया का जापन रखता है। हमें धन्यदा बुरा मारा या रखना है यह गवा गवन है। हम तो सार लेना चाहिए। धम नत्र बना जइ पुराने अनुभव का सार खडा हा गया। तेकिन पुराने भने धीर बुरे—सवता रकाड याने इतिहास है। आखिर इतिहास या करव करना क्या है? सार इतिहास का आखिरी पन मे म्वप हूँ। हमम सारा इतिहास भरा ही दुआ है। उम विनाय म लेने म क्या रखा है। सारी प्रेरणा मुभमें है ही। कभी-कभी उपवास इतने आवश्यक हात हैं कि वे हमारा या आत्र हैं जमे अपने जीवन का घटनाएँ और इतिहास या धाना है। वन ही भूटा कहानी भा या आता है इमनिण यह सारा मामला बहुत ही पचाग हा गया है।

प्रश्न सेवा का उद्भव कैसे हाता है ?

उत्तर सवा-वक्ति वन उ ची प्रेरणा म नगी धाता है। इमने पटने न बहुत सेवा पायी है। हम आसमान मे नीच टपके ऐसा वात होता ता फिर सेवा भावना धाये या न धाये यह सवाव पना होता। जो धाम

मान से नीचे टपकेगा वह अण्णासाहब जसा भगी-बाम नहा करेगा । हम ममभक्ता चाँहिए कि हमने बचपन से भर भरकर सेवा पाया है मन्त्रिण अरु हमें सेवा करनी है ।

प्रश्न छाँटे-छाँटे क्षेत्रो म म क्या करें ?

उत्तर मैंने एक बार कहा था कि हमारा आज यह हालत है कि जिन पर हम प्रेम करत है व हमारे कर्म के साथ नहा है और जो कर्म क साथ है वे प्रेम के साथी नहा है । यह भेद मिटाना चाँहिए । जहाँ कर्मोत्र और प्रेमोत्र एक गन है, वहाँ धर्मोत्र हाता है । जिनम प्रेम बना है उन्हें अपने काप में साथ लाना चाँहिए । जिनका काप में साथ हो गया है उन पर प्रेम करना चाँहिए । इस तरह की गहरा प्रक्रिया करनी होगी । प्रेम-ओत्र और कर्म-ओत्र एक हो जायगा तब धर्मोत्र बनेगा । कुछ लोगो क जावन के लो और भी टुकड़े हा गये है । एक आपिस का साथी दूसरा टेनिम का साथी तीसरा घर का साथी इन तरह उनके अलग अलग साथी हात है । उन धर्मिण को हर रफा तसवार खावा ना अलग अलग दीखेगा । अपने प्रेमीजनो को कर्म क साथिया के साथ निजाने की शोणिा हमें छाँटे क्षेत्रो म करनी चाँहिए । कार्यकर्ता अपने गत्र पमे पून (कबहु) करें यह बहुत हा स्थून विचार है । केवन आर्थिक दृष्टि से, सपत्ति वाग्नेभरसे काम नहा हागा । येना लो यह चाँहिए कि हमारे प्रेमीजनो के साथ सब अयोय प्रेमीजन बनें । य प्रयोग जितना मरुन होगा उनना मह-जावन का प्रयाग मरुन होगा । आज यह होता है कि वैमिक टीचर की पत्नी का वैमिक नालीम कुछ भा नहा मिलता है । इसलिए वह स्वय वैमिक टीचर नहीं बन सकती । फिर बच्चा को क्या सगति मिदेगा । जिसका पत्नी अलग है उसके बच्चे ता अलग है ही । इसलिए हाता यह चाँहिए कि प्रेमोत्र और कर्मोत्र एक हा जाय ।

इंदोर

—राजस्थान-समप्र-सेवा सघ की बैठक में

सन्त-समूह धनो

भगवान्-चित्तन से आध्यात्मिक स्नान

अधर घाट-म मीना म म विष्णुमन्त्रनाम वन्दन है । प्रतिदिन यह प्रथम धनना है । उसका हमने एक कोश भी बना लिया है उगवा चित्तन धन रण है । अन्तु धान धाना है । प्रथम स्नान करने म गरीर निर्मल हाता है और प्रगल्भा मानुम हाती है । वैम न भगवन् चित्तन म आध्यात्मिक स्नान हाता है और अन्तु प्रगल्भा का अनुभव हाता है । प्रगल्भा क्या चात्र है और किम सरह आती है म्मया चिना म नहा करत । नगर हातिनो और चबा करेये ता नो उगवा मीमागा नहा हातेवाता है । अनेका ने मानांमा की है । सेविन उगमें विभासा म न । मिला ।

निद्रा कैसे आती है ?

परमेश्वर व म्मरण मे नामभाव व उच्चारण म प्रसन्नता वसे आती है यह गहरा विषय है । एक मामूली-मा बाल है । निद्रा की अनुभूति मत्रवा हाता है, मन्विन वह निद्रा निम तर आती है । हमका काँ मानांमा अभी तक नहा म है । उत्पत्तिना व अनेक संघ पड़े है । जिनम क्या गया है कि निद्रा में क्या होना है । उसका वग्न और व्याख्या कुद्य भी कात्रिये म्मवी कुंठा हाप नहा धायी है । धाण्णान्ध में कता है असाध प्रत्ययावचना धति — निद्रा एक कृति है जिसका आचार धाणव की अनुभूति है । उपनिषद् कहता है कि निद्रा म जाया-मा परमात्मा म सान हा जाना है और अज्ञान की उपाधि चित्त का लगती है । गील किया हुआ साण नटा में सान होना है उना तरद् जीवात्मा अहंकार-वष्टिन प्रात्मा परमात्मा में मीन हाता है । धार वह गृहकारवष्टिन न हा ता

पाना में पानी मिन जायगा। मुक्ति का अनुभव आयेगा। लेकिन निद्रा में सोनाचंद सोना पाना में चलने के जसा अनुभूति होती है पाने मुक्ति का इतना अनुभव आता है। वेगतिवः ने निद्रा की व्याख्या की है और कहा है कि निद्रा में भी जाग्रति होती है और जाग्रति में भी निद्रा। निद्रा में जाग्रति का एक क्षण होता है और जाग्रति में निद्रा का एक क्षण होता है। जाग्रति में बहुत घना जाग्रति रहता है लेकिन निद्रा का घोर अंग रहता है। निद्रा में एक क्षण मात्र निद्रा का तो दूसरा क्षण जाग्रति का आता है। उमर बढ़ाया स्वप्न भा आते है तो जाग्रति का मनाया बनता जाता है और जाग्रति में आते आते तो निद्रा का मनाया बनता है। उपनिषद् की अनुभूति साक्षात्कार का आधार आदि मंत्र मिलकर भा निद्रा का व्याख्या नही हो सकता। यही नही कहा है जब चाहो तब सोनाचिबरेवा - इस तरह चाहे तब निद्रा और जाग्रति—यह अनुभूति साक्षात्कार नही होता।

विष्णु-सहस्रनाम से स्नान गाता सं पोषण

जहाँ निद्रा की मूढ बात है वहाँ भगवत्भाव का चित्त पर क्या असर होता है? नाम-स्मरण से प्रसन्नता केम निर्माण होती है मट बोन बनायेगा? मैं गीता का परम भक्त हूँ। तिस पर भी गीता के पठन का मुझ पर बड़ा असर नहीं होता है, जो विष्णु-सहस्रनाम के पठन का होता है। गीता में चिन्तन मनन होता है। जीवन के साथ उमर सम्बन्ध रहता है तो बहुत लाभ होता है। बहुत बड़ी खुराक उमर मिलती है लेकिन विष्णु-सहस्रनाम से स्नान होता है। सुराज से पाण्डु मिलता है। ज्ञान ध्यान कर्म भक्ति, साधन चित्त विकास त्रिभूति विस्तार, आत्मनात्मनिवर आदि विविध खुराक गाता में मिलती है जिससे पुष्टि मिलती है। लेकिन विष्णु-सहस्रनाम से स्नान होना है, मन धुल जाता है तो वह एक विशेष ही अनुभूति है। इसमें अलावा मुझे ऐसा भा अनुभव है कि कहीं मं पुला हवा में जाता है पहाड़ नये आसमान का तरफ दखता हूँ, तो विसा तरफ मेरे अन्तर्गत भाव गुन जात है। यह नही कि इन तरह से स्नान के

लिए विष्णु-महसनाम अनिवाय है। अनिवायं कुछ भी महा है सिवा इसके कि हमारा जिन खुना हो। जिसमें भगवद्भाव सहभाव जित में प्रविष्ट हो मर्के उमक लिए जिन खुना हो इसमें अधिक कुछ नहीं चाहिए। चित्त का दरमजा खुना हो नि एक और निष्पाधिक भाव हो ता वह अनुभूति कभी ना आ सकता है।

अनन्तनामी अनामा

विष्णु महसनाम में भगवान् के हजार नाम बताये है। दरअसल भगवान् क नाम कौन बतायेगा ? उमक अनन्य गुण है और असम्प नान है। मनुष्य की वाणी से उमक गुण प्रकट हो यह असम्भव है। हम किन्नर छात्र पत्र ह ! हममें स जो परम जानी है, वास्वार है भगवद् ज्ञान स जिनमें वाक्पति का प्रादुर्भाव हुआ है उन्ही वाली भा छाटी पत्रा है जहाँ भगवद् वरण का प्रसंग आता है। लेकिन साधका की साक्षात् व लिए ये सारे साधन बताये गये है जिनमें विष्णु-महसनाम भी एक है। कृष्ण-कहा भगवान् के चौबीस नाम बताये गये है। कुरान शरीर में भगवान् क ६६ नाम बताये गये है। पारसिया ने भा इस तरह भगवान् क नाम गिनाये है। रामदास स्वामी ने लिखा है चौबीस नामों सहस्र नामी अनन्तनामी तो अनामी। तो कसा आहें अतर्कामी विवेकें शोचन्वावा। भगवान् के चौबीस नाम कह गये है महसनाम कये गये है। उसके ता अनन्त नाम है, फिर भा वह अनामी है। वह अतर्कामी भगवान् वैसा है यह विवेक स हो जाना जा सकता है। इस तरह उमका ज्ञानने का एक साधन बताया गया है।

एक अनोखा शब्द

आज में विष्णु-सहसनाम पत्र रहा था तो एक शब्द की तरफ मेरा ध्यान खिंचा। इस तरह कभी-कभी कोई शब्द ध्यान लाचता है। व्याकरण क अनुसार भगवान् के नाम उसमें एक वचन म बताये गये है। जन दामो र काव माधव — लेकिन उममें एक नाम बहुवचन में आया

है, जो एक ही ध्यान साधता है। कुन के कुन नाम एकवचन में और एक ही नाम बहुवचन में। वह नाम है सन्त — इस पर मैं गूब सोचना रहा। मेरा संसृत का जिनना ज्ञान है उमरा। लेकर मैं ठूँठता रहा। सन्त नाम का कोई अकारान गण होजा ता उसका एकवचन बना बनता। सारे एकवचना के प्रयाद में यह एक बहुवचनवाला गण कुछ अस्पष्टता लगाता है। वह सन्त एकवचन बने ता टीक हागा, यह सोच कर मैंने उग एकवचन बनाने का काफी कागिण की लेकिन उगमें सरु-सता नहीं मिली।

पुरुष त्रिशय का भगवान नहीं मान सकते

सत्पुरुषों के समूह को भगवान के तौर पर ग्रहण किया है और यह बहुवचन का अर्थ बनाया है। किसी एक सत्पुरुष को ही भगवान माना जा सकता है। ऐस पत्थर का भी माना जा सकता है। अक्षय धन को भी माना गया है ता फिर सत्त एकवचन में क्यों नहीं बना गया? इस पर सोचता रहा कि सत्पुरुषों में एक-एक भगवत्त्वला प्रकट होता है, तो सावत्य का आरोप किसी एक पर करना कठिन जाना है। मानव होने के नाते सत्पुरुष में भी कुछ-कुछ गुण और दोष गुणधराया के रूप में होते हैं। उनका दाप नहीं मानना चाहिए बल्कि गुण की छया मानना चाहिए। फिर भी उस पर सावत्य का आरोप करना कठिन मान्य होता है। सृष्टि के अचेतन पदार्थों पर सावत्य का आरोप सहज रूप से हो सकता है लेकिन किसी पुरुष विशेष पर भगवद् आरोप दिया जाय यह कुछ कठिन मान्य होता है। बहुत हुआ ता उस पर भगवद् अवतार का आरोप किया जा सकता है। उसमें भगवत् अर्थ है ऐसा कहा जा सकता है। भगवान् कृष्ण का हम पूर्णतार मानते हैं। यह हम अपनी कृष्ण भक्ति के कारण कहते हैं लेकिन पूर्ण और अवतार इन दो गणों में ही विरोध है, इसलिए शकरोपाय ने गीता भाष्य में कहा है कि भगवान् अपने एक अर्थ में कृष्णरूप में प्रकट हुए—वाक्यार्थ इसका वि

जमाना बोन रहा था कि कृष्ण पूर्णान्वित है। गङ्गाचार्य ने वैसा गिला। कृष्ण का पूजावतार माना गया यह भक्त का भावना का भाग्य है। लेकिन गङ्गाचार्य को भाग्य में कहा गया है कि जिसका एक पुत्र विशेष परमात्मनः परमात्मा का धाराय नहा दिया जा सकता था कि उसमें गुण-गण हान है। हम शरीर को भूदर पर पर गुण का धारण करें य० मुक्तिवत हाता है।

ध्यान के पुट से पोते सा बढ़ता है

हयारा धर्मों के वाक् किमा पुत्र-विशय का नाम भगवत्काम बन जाता है। धनेक भावनामा का पुत्र चत्वर या तामिपारधी में घोटकर पाटन्मा बढ़ापी जानी है, वैसा जो ध्यान में गवा पाटन्मी बन्नी है। होमियापया में पाडाभी दशा लेते हैं और उस पर गत्कर के पुत्र बढ़ाये जान है, उगवो धाग जाता है। मत्त गुणवधनम्—जितना मर्तन किया जाय उतनी गुण-वृद्धि हाती है। बन्ना जाना है कि यह म्वा एक लाख पाटन्मी धाना है, याने उगमें पुत्र बढ़ाये गये है। उमी तरह भगवात् के नामा का ध्यान करके धमक्य श्रिया ने धाने ध्यान के पुत्र किमी नाम पर बडा कर उगकी पाटन्मा बढ़ापी हा य० हाता है। मपर मै नया विष्णु-मत्त नाम किन्तु ता उमो नाम पर मर ही ध्यान का पुत्र बढ़ाया लेकिन पांच हजार वर्षों स श्रिया-मुनिया के ध्यान क पुत्र जा आज क विष्णु-मत्त नाम पर बन्ने है वेगे उग पर नहा बन्ने। लेकिन मुमकिन है कि मै नयी गाना किन्तु ता पुरानो गीता क गुणा का लेकर उगम और वृद्धि भा कर सकूँ। यह काम ता बार्द समामाय पुत्र्य ० करेगा फिर भी यह सम्भव है। परन्तु विष्णु-मत्तनाम पर जो धनेका के ध्यान ने पुट का चुक है व नये नामा पर कम आयेंगे ? नय नामा में उनका धाविर्भाव कम हागा ? हमकिण होमियोपथी का तत्त्व वनी लागू हाता है। उगके हर नाम पर ध्यान के पुत्र बढ़े हुए हैं। किमा एक पुत्र्य विषय के नाम पर ध्यान क पुत्र चत्वन-चत्वन उगक गुणा का बन्ना और गान —

आदिर गुण ही रहे, यह होना है और किसी एक भवतार पर पूजा का धाराप किया जाता है।

अतयामी राम के साथ दाशरथी राम का स्मरण

कुछ लोग समझते हैं कि हम राम का नाम लेते हैं तो दारय क बने का नाम लेते हैं लेकिन जब लोग ने मुझसे पूजा कि थाप विमला नाम लेते हैं तो मैंने कहा कि हम उस राम का नाम लेते हैं जिसका नाम दारय ने अपने बेटे का रखा था। राम-नाम दारय ने धार उनके बेटे में पुराना था। इसलिए राम और कृष्ण के नाम भगवत्-नाम ही हैं। ये ही नाम कृष्ण पितामाह। कृष्ण पुत्रो क रत्न ह। अब हम उनका स्मरण करते हैं तो जो पराक्रमी बेटे निकले उनका भा स्मरण भगवन्नाम के मान-माय हो जाता है। हम हिन्दुस्तान के लोग ऐसे समझते हैं कि अन्त यामी राम का स्मरण करने हुए दाशरथी राम का भा स्मरण कर लेते हैं। कभी-कभी ध्यान का पुत्र चन्ने चन्ने कोई एक पुरुष विशेष ईश्वर का याचना पा लेगा लेकिन सामान्यतया एक पुरुष पर सात्वत्य का धाराप करना असंभव है। इसलिए सन्ता यह बहुवचनान्त गन् इस्तेमाल किया गया है।

स-पुरुषा का समूह

सत्पुरुषों का समूह भगवत्समूह ही है। सत्पुरुषों की एक ही जमात है। फिर वे दुनिया के किसी भी भाग में पदा हुए हों, उन्का एक नामा है। उन सबका अन्तर्गत तात्पुर्क है। कुराना-शीफ में कहा है उम्मतुम काहिद तुम्हारी उम्मत वाहिद है। तुम सब सत्पुरुष, जो दुनिया में रहते हो गये, उनका एक ही जमात है। सत्पुरुषों के समूह का ध्यान में लेकर गन् गन् का बहुवचन में प्रयोग किया गया हागा जो भगवान् का नाम ले गया है।

इन्दौर से अपेक्षा

आप पढ़ सकते हैं कि इन्दौर को सर्वोत्थ-नगर' बताया है इसका

क्या जाना ? मैं कहना चाहता हूँ कि इन्दीर सत्युषों का समूह
 बने मूल की विमल कुल चार लाख लाख जायें। सारा इन्दीर इस
 तरह एक समूहों का समूह बने यह अशुभव नहीं है। बच्चों का लगना
 है कि इन बलिपुत्र मय्यं नग हागा / वाग धन्यप्राय बालें कहना है।
 लेकिन मैंने त्रिभुवन गंगा बलि कहे है। अगर मैं कहूँ कि मिनिरी
 सिद्ध कर, तो वह अत्यन्त मातृम हा राखना है। जब मैं कहना हूँ कि
 मन्दाटा देव न ने, मान मे ता नाग कथन है कि वाग का धनुमत्र म ना
 धन नग भाषी। इनने सारगिणन चवाया ता यह रहा घना, फिर भा
 यं गेग बालें करता है। यद्वा गंग नीर है ललित धन मे जा मुभाव
 देग कर रग हूँ वं एक आशान वाम है। मने बग कि नगर का गराजा
 पर ता स्वराज विप्र है उवा ट्याया जाय। समस्त नागरिक और नगर
 निगम नग करें कि हमारी दाशना पर गन्ने विप्र नग रहेंगे। वहाँ पर हम
 मन्पुष्य क वचन निरों। हमारा लोखला पर ऐसा कोई ना गन् या
 विप्र नग रेट्या जा वासना म आपन करेगा। इनती चीज भाग करत है
 ता मैं मानूगा कि इन्दीर सवाय्य-नगर बन रग है। इतना गाग-भा मवन
 मैंने भाषने सामने रखा है। क्या जाना है कि निगने एक क्षण भा हरि
 नाम का उच्चारण किया वह मा १ का नरक गमन करने के लिए बद्ध
 परिवर हुआ। प्रेम हा इन्दीरवान अगर इनना साग मा कायक्रम करत
 है जिसके लिए "दाग त्याग नग करग पण्य ता मैं मानूगा कि इन्दीर
 म सर्वोप्य-नगर बनने की और मन्पुष्य का जमान बनने का काशिग हा
 रग है। स आग मे मैंने विष्णु-महेश्वरनाम म म एक नाम का विन्नेयण
 आत्र आपने समग किया।

इन्दीर

—प्राथना प्रवचन

चित्त-निर्माण और विश्व-समस्याएँ

पद-यात्रा न भवति चित्त निर्माण

भारत का यात्रा एक बार पूरा करनी चाहिए, यह विचार मेरे मन में आता है। लेकिन दूर के प्रान्तों का सञ्चालन क्या। यहाँ पर भारत हम गाररिक् उपस्थिति का आवश्यकता मानते हैं, तो उन स्थानों पर पद-यात्रा गलत साबित होगी। पदल-यात्रा के अर्थ में कुछ मात्रा गुण है और हर साधन का मर्मदा तो होती ही है वही उम्मीद भी मय्यत है। पद-यात्रा के साथ एक विचार है, जिसके कारण चक्रमण्डल पञ्चमर्मादि शक्ति का साधनाया क तौर पर महान् पुण्या ने माना है। उस विचार का हमें समझना चाहिए। उसी दृष्टि में मैंने इस पर चिन्ता किया। पुराने जमाने में शंकर और रामानुज धूमल थे। उस समय रेलवे जस्त साधन नहीं थे, फिर भी पदल-यात्रा में कुछ नुत साधन ऊट घोंग आदि थे लेकिन उन्होंने उनका उपयोग उचित नहीं माना। उसमें एक दृष्टि थी। यह दृष्टि चित्त निर्माण की थी।

हम आम निर्माण आदि का बातें बोलते हैं लेकिन आज मानव का सामने असली समस्या चित्त निर्माण की है। असम में आज का प्रसंग उपस्थित है यह दूसरा जगह ना उपस्थित हो सकता है। सब तरफ चित्त तो बढ़ी है। चित्त-वर्धन आर्थिक, सामाजिक समस्याओं का मूल में जाने का आवश्यकता प्रजात होनेवाला है। एक निमित्तमात्र बाह्य कारण हीय न लेकर हम उनके परिधि चित्त निर्माण की तरफ सोचें, तो उनमें से दुनिया की समस्याओं का हल करने का उपाय मिल जायगा।

चित्त निमाण का साधन प्रवृत्ति और निवृत्ति

विचारकों के सामने हमारा एक विचार रहा है कि बाह्य भावात्म्य नमस्या का समाधान करने हुए अथवा चित्त-निमाण का तरफ ध्यान दिया जाना ठीक होगा या बाह्य समस्या का कि उम उस जमाने में उपस्थित है उसे बाह्य बनाकर चित्त निर्माण का वाणिज्य करना ठीक होगा ? इस प्रकार का विचार चलन था । जिनो विचारों में निवृत्ति भा माय है और प्रवृत्ति भी । आन्तरिक रूप में निवृत्ति और बाह्य रूप में प्रवृत्ति । जिनमें निवृत्ति माय महा है, व विचार धारे और प्रवृत्ति म त व्ययन्या और हिंसा की तरफ जान है । जहाँ प्रवृत्ति ही माय महा है वहाँ निवृत्ति में मे विचार गहरा में जान है और अन्तरण में दूर में प्रवेश करने है । अगर उमका अन्तरण ही तो वहाँ भा जाना पता है और जहरन हो, तो हिंसा का तरफ भी जाना पड़ता है । हमने एक मर्यादा मान ली है कि व्ययन्या में जाना पड़े ता भा सत्ता में जाना न पड़े । और सत्ता भी शाय में लेना पड़े तो हिंसा की तरफ न जाय । ऐसा मानसिक निश्चय हमने किया है ।

प्रवृत्ति चित्त निमाण के लिए हा

लोक-व्यापण चाहनेवाले सब लोग न ऐसा निश्चय महा किया है । व कहते हैं कि हिंसा और अहिंसा बाह्य बाज है । नाश-कल्याण व निण कभी-कभी स्थूल हिंसा करना पता है । उन तरह का विचार माननेवाले नाश-कल्याणकारा ध्यान भा है धावजू इमने कि हिंसा व साधन अथ अाउर आफ डेर—गये-वीन हा चुक है । लेकिन उन्होंने बाह्य-निश्चय नना किया । हमने एक बाह्य निश्चय कर लिया है । हमारे सामने हिंसा का रास्ता बन्द है । हम महा चाहते कि प्रवृत्ति का माना जाय और निवृत्ति को न माना जाय । बवल निवृत्ति को माननेवाला रास्ता हमारे लिए अिनशुन बन्द नहीं है । बल्कि व्ययन्य जीवन में जो खोज शानी है वह ता दूर म की जाती है । इस तरह प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों का योग ही ऐसी एक प्रक्रिया हमने उगाया है । बाह्य

प्रवृत्ति को उत्पन्न हुए चित्त निर्माण की वाग्नि होनी चाहिए। बाह्य प्रयत्न वचन चित्त निर्माण का साधन बनना चाहिए। इस तरह मैं आप मरका ध्यान लाबना चाहता हूँ।

आत्मस्वयन शून्यता का आकर्षण

महावीर ने सामूहिक काम ग्य में नये निया बल्कि उठो जा मध्यस्थ चित्त की प्रेरणा हुई, उस समाज क मामन रखत हुए वे घुमन चले गये। कई काम काम उठाने हाथ में नहा निया। बुद्ध भगवान् ने एन काम हाथ में लिया। यथीय हिमा राकने या काम उनके लिए निमित्तमात्र था और उमक जरिये व चित्त निर्माण का वाय करते रहे। चित्त निर्माण क लिए समाज का निमा समस्या को उठाना उठान जन्म माना। इस तरह दो विचारधारा बलता आयी है। मेरा अपनी व्यक्ति गत भ्रत स्फूर्ति होता है जा मुझे बाह्य आत्मस्वयन चित्त निर्माण वाय का तरफ जारा म विवना है। वचन में बुद्ध कम साबता था, लेकिन भव वह सोचाव बना है। स्वराय प्राप्ति के वाता ता उम तरफ का विचार और भा बना है। मैं चाहता हू कि आत्मस्वयन गूम बू बाह्य प्रवृत्ति का सफल न रखने हुए स्व चित्त निर्माण और समूह चित्त निर्माण का वाय करे। लेकिन एक प्रवाह जाता है। गांधीजी के साथ मेरा जा मस्वयन बता उसका टालना मर लिए अनय है और अयाय भी है। मैं नहा मानता कि उसे टालने से मरे विकास में वृद्धि होगी। इसलिए प्रवाह-यतिन होकर मैं काम गुन किया, तो मुझे भ्रान्त का काम मिला और अब यह डाकुभा का काम मिला। लेकिन य काइ स्वत प्रवृत्ति नग उगाया। यह सहज ही आयी।

सहज प्रवृत्ति : भूदान, पदयात्रा आदि

अब मारे भारत ने भ्रान्त की प्रवृत्ति मान्य कर ली है। गन स्पेण ग्य प्रवृत्ति का आधार मैंने चित्त निर्माण क लयाव मे निया, लेकिन वागू क साथ मेरा गन १९१६ म लेकर १९४८ तक २२ मास

भान—भयावह प्रयोग में प्रयोग करता है। अगर उपवास भगवद्भक्ति के तीर पर आता है भगवान् के गाथ रहा मैं—गाथान् २४ घटा उनका साथ रहने में—अगर खाने में बाधा आती तो उपवास करना गीत है। तब उपवास हो सकता है। भयथा उपवास ठीक नहीं है। जल्द में तो मानता हूँ कि जमे हम चरखे का तेल देने हैं, जैसे ही आहार खन हैं, तो उसे क्यों नाश जाय ? यह मेरा गमभ में नता आता। बच पल में हम एकाग्रता रामनवमी आदि पर उपवास करते थे। चित्त में राम और कृष्ण की भक्ति आज भाग्य मरी है, लेकिन आज यह प्रेरणा नहीं जाती है कि रामनवमी के दिन खाना छाड़ूया खाने में परिवर्तन कर। क्यावि खाना तो औषध-तुल्य समझकर खाना चाहिए।

चित्त निर्माण की समस्या

एक तरह उपवास का विचार क्या के मन में आता है और तीव्रता के कारण आता है। अगर मैं खूब रूप से यह विचार माय करता तो उसमें शायद ऐसा दोषता कि बाजा असम के लिए कुछ कर रहा है। लेकिन मैं उस विचार का छाड़ना हूँ और अपनी पल वाता जाता रखता हूँ और फिर भी सोचता हूँ कि असम को कस मरू पहुँच, तो यह चित्त निर्माण का सवाल हा जाता है। असम में बगानिया का राजन दनी है, व लाग क्या में पड़े हैं। मन् १९४६ में मैंने यह काम किया है। लेकिन उस समय भी प्रधान वान चित्त निर्माण की ही थी। गाधानिधि ने अपनी रिपोर्ट देना करते हुए हमसे कहा कि एक-एक स्थान पर एक-एक व्यक्ति का रखा जाना है। इस पर मैंने पूछा कि चार पाँच का साथ क्यों नहीं रखते हैं ? तो उन्होंने कहा कि उसमें एक-दूसरे की बनना नहा है। ये सब बातें चित्त निर्माण की समस्या पेश करती हैं।

सोम के कारण उन्मत्त स्थलता

दूसरा विचार यह आता है कि हम कब तक इन छोटे-छोटे मसला में पड़े ? जहाँ भी मानसिक शांति हाता है वहाँ बुराई आती ही है। मर

पास एक पत्र आया कि असम में क्रिया पर अत्याचार हुआ। मैं नहीं जानता कि यह कौन कौन सही है। अगर सहा हा तो मरी ममता में नता आता कि भापा के ममते पर भगड और मारकाट हा भी सकती ह लेकिन क्रियों का सम्बन्ध वहाँ से आता है ? मैं असमिया का दाप नहीं दना चाहता, क्याकि वहाँ की स्थिति को मैं जानना नहा हू। लेकिन हमें साचना चाहिए कि ये सब क्यों क्या हाती हैं। शोभ के कारण चित्त बेडूट दौगता है। किमा भी कारण उमे दौडने का मौका मिला ता जो राहें बनी हुई हैं उन पर वह दौगता है चाहे भापि मसला हा राग का हो या और कोइ हा। मानसिक क्षाम परागा के जा गरिये ह व सब प्रकट होन है। उसमें मानव का हीनता प्रवेग करती है। बाकी वहाँ पर कोई उस अंग को स्वतंत्र रूप से हटाने की वाशिष्ट करेगा तो उसका जखरन नहा है। क्याकि तांग स्वय मानत है कि वह काम गलत है, फिर भा क्षाम के प्रगम म यह सब हाता है।

पल म प्रलय

अभा तयप्ररागजी ने विहार व काम का जिम् करते हुए कहा कि वहाँ पर अच्छा काम चल रहा है। पहले से ज्यादा काम हाता है परन्तु उसमें वह ताकत नहा बनता था। अच्छे काम बन रहे हैं लेकिन एकाध ग्रामदान का अगर दोष पर नहा गेता है। अब खान यह है कि आपका समय बितना भिन्नेवाता है ? सामान्य समय में भले ही अवकाश मिले लेकिन आज का परिस्थिति इनकी उलभा हू है कि कोई नहीं वह मकता कि किम कसत क्या हागा। अभी पण्डितजी विनेग गये थे। एक देग व मुख्य व्यक्ति से बात करके लौटे। ता-तान तिन बा ही उसका सरदार कहा नहा रहा। गिबेर-अम्भवन का क्या हुआ, हम सब देख हा रहे हैं। ऐसा मत्र चल रहा है। ता आप गान्धिपूर्वक नव निर्माण का काम करते चने जायें यह कस बनेगा ? ब्रह्मदेव का गकर की तरफ स आशामन मिला था कि जब तक तेरा काम पूरा नहीं होगा तब तक मैं

नहीं आऊंगा। लेकिन यही बीच-बीच में संवर पाई जाने है उस क्षण में हमें क्या करना चाहिए ?

निर्माणों का मूल

दुनिया की क्षणतः का दण पर अन्तर हाथा ही है। दण व क्षणतः म हम निर्माण-नाम करें तो यान में वह चीजें दक्षय गी है और हमारा निर्माण गम होता है। मैं मर छय इगतिण न, कह रहा हूँ कि निर्माण-कार्य तही करना चाहिए बल्कि इगतिण कह रहा हूँ कि हमारा अपना चित्त निर्माण हाता चाहिए। मर १९६९ में मैंने गिया भाइया को बुद्ध मेवा की। लेकिन ३३ साल बीगित करने पर भा परिणाम बुद्ध भा तहा निबन्ता गिया गये कि भूमिहीना का तरक मे मांग पा हूद और इग यान की तरफ मरा बिन गया। जहाँ काय बाह्य निर्माण की यान बना है वहाँ प्रयथाय हागा ही। इगतिण चित्त-निर्माण व क्षणतः म हम बाई चीज हाय में लेते है तो वह काम बने या न बन, ता भा चित्त निर्माण हाता ही है।

सरकार निरपेक्ष कार्य का प्रयोग

क्या हम किसी एक क्षेत्र में ऐसी हया पैग कर सकते है कि जहाँ सरकार का अन्तर महगुन न हो ? मैंने बिलकुल अन्तिम काय कही है लेकिन उमीषी हाय में लेकर काम किया जाय—बाबजू इनक कि सरकार अच्छी हो तो भी उगने गलत काम हाता है। अन्तर हम ऐसा क्षेत्र निर्माण कर सकते है कि जहाँ सरकार की अन्तर न हो, ता कुल दुनिया को आवाहन कर सकते है। आज सारे दुनिया की भावना है कि ऐम बुद्ध प्रयोग चरें। दुनिया इत सरकारों से भरत है। अच्छी-न अच्छी सरकार से भी दुनिया लग भा गयी है। अभी दानैड में चुनाव हाय है। कोई पार्टी यह नहीं कह सकती की कि हम अच्छा हावन पायेंगे। ययाकि गुण तो वहाँ पर है ही। लेकिन वहाँ ऐसी काय पार्टी खडी होयी जा कहती कि दानैड का प्राज का जा गुण है उगका भाया

हम खींचे और धाया दुनिया का बंटिये तो यह भाज बेवकूफ कहा जाता, लेकिन कन बड़ी पागो टिकनी। अगर चुनाव में इस तरह का काम हो, तो उसमें कुछ जायका धायेगा। मार यह कि दुनिया के मारे देगा में चाह है कि सरकार का कर्तव्य न रह। क्या यह समन है ? क्या यह स्वयन्वत् हा है ? हिन्दुस्तान म कहा पर इसका प्रयाग करें और उनके स्थून चिह्न क नीर पर अज्ञान और पुनिम की जन्म न प या कहकर समाज का बना मके ना वह करन जमा कागिग है। अगर कहा ऐसा शेष बनाया जा सकता है, ता में भी उसका तरफ ध्यान ना चाहता हूँ।

आज की प्रथम आवश्यकता

चित्त निर्माण और सामन विहात गापण-मुक्त समाज की स्थापना मया दो उद्देश्य लेकर हमें काम करना चाहिए। मरा मन ता यहाँ तक जाना है कि समाज मने हा गापण-मुक्त न हा पर शासन-मुक्त तो बनना हा चाहिए। गापण ता हम सब करने हैं। सारा समाज भगी का गापण करता है और भगी अपना पत्नी का गापण करता है। इसलिये विलुत गापण-मुक्ति धाय समभव न हा वह मने बने लेकिन शासन-मुक्ति क प्रयोग हमें करने चाहिए। वैम इस तरह की भाषा में एकागापन आना हा है, समत्व नहीं रहता है। वह एकागापन चित्त की बान प्रक करने क लिए माहियिक इम्नमान करते है। जैसे गाधीजा ने बन् धा कि सय के लिए म स्वराय छाड मता हूँ। विशेष वस्तु के लिए धार बनाने का उमका आन्तपूर्वक कहने का वह एक प्रकार है।

इ-दौर

—प्रबन्ध समिति की बठक में

१७ द '६०

उद्योग • सर्वश्रेष्ठ योग

[धारणा में योगात्मक व माहर्षी के सामाहिक ध्यान बनाय ।
उसके बाद विनोबाजी का प्रवचन हुआ ।]

शरीर-स्वास्थ्य योग का प्राथमिक अंग

आपने सामूहिक ध्यान का कार्यक्रम रखकर बहुत ध्यान हुआ ।
वचन में मैं जब बड़ी-बड़ी बातें कह रहा था तब प्रचारक ध्यान देना करता था ।
मई १९०५ के लेकर १९११ तक, लगभग सात महीने बड़ी-बड़ी बातें
वोने । वहाँ एक छात्रों व्यायाम-शाला थी जिसका नाम था मणिकराम
भारत में मान्यता हा गये है । उन्हीं व्यायाम-शाला में मैं भी
व्यायाम-शाला में बनी चली थी । प्रायः मणिकराम का नाम था जिसके
जिनका नाम था कुन्दनानन्द हा गया है । वे उस समय वहाँ पर थे ।
उसमें मुझे बड़े थे लेकिन उन्हीं महीने मर गये थे । वे इस प्रकार मर
जाते थे और बगल थे । हम देखते थे, फिर हमने भी कुछ करना
शुरू कर लिया । योग-शास्त्र-ग्रन्थ अनुसार नाम का एक विचार उस समय
में मिला । उसमें चित्त भा के और विधि भी थी । उन्हीं दिनों-दिनों हम
भी कुछ किया करते थे । आज आपने यहाँ पर जितने ध्यान बताया व
मैं हमने किये हैं । जो आपने नहीं किया, व भी किये हैं । सिर्फ एक
ध्यान हमसे नही बना । हमारे हाथ में कुछ कमजारी थी, इसलिए अनु-
शासन हम नहीं कर पाय । क्योंकि उसमें हाथ पर सारा भार आता है ।

समाधि योग वृद्धत धूमत धूमते

ध्यान तो शरीर-स्वास्थ्य के लिए एक साधन है, जो योग का बहुत
प्राथमिक अंग है । योग का मुख्य अंग धारणा ध्यान, समाधि है । समाधि

दिनांक तथा मने उतना धन उगा उद्योग में होने वाला था धारण करने में कि समाधि कम लगेगी।

माना में क्या है कि धीरे-धीरे प्रारम्भ प्राप्त माना है धीरे धीरे धारण करने का हानि बाधित। साम्य मार्ग पर। व मुक्तिविक एकात्म मुक्तम पर पहुँचा देनेका है। याग का मार्ग विधाविता का मार्ग है। लेकिन वचन में हम उद्योग था कि जन्म समाधि लगे। बन-न-बन उद्योग भाग गा हा। गर्मा की सुदृष्टि में हम नन व नाथ गिद्धागत लक्षणर वेत्त थ। विरहदुःख धारण-मा धार बहनी रहता था। उद्योग म बंधन-धर्म धारण टपकता रहता था धीरे हम मान लेते थ कि धन हमारा समाधि लग गया है। वं गत हानि भाग हाना था कि समाधि लग गया धीरे धिन का मनापान हा जाता था। समाधि में पचने तक बैंग जाता है। हम भी वैग गवत है। हम नहा जानते कि उन प्रकार समाधि का साधन बटुना ने किया हुआ। लेकिन धारण में मैने मुता कि प्राकृतिक उद्योगराल बन है कि इस तरह निर पर व-धर्म धारण टपकनी रूढ़ यह धर्म है। हम ता पाना का उद्य धारण का नावान् का कृपा समझते थ। उद्योगे टपक ना पहुँचनी धी धीरे मानते थ कि समाधि लग गया। हम यह नगा कह संभव है कि गार्त्राय समाधि लग। लेकिन समाधि का आभास हाना ना बडा बात है। अहं ब्रह्माग्नि बह देता भी बड़ी बात है। तुलनागणना ने कहा है कि 'ब्रह्म-ब्रह्म ब्रह्म' एकात्म गमम में नहा जाता है धार-धार धीरे समन में धारी ह। लेकिन समाधि का आभास हो जाय धीरे धिन में ऐसा मन्मूस हा कि हम मन्म है भव हा प्रक न हा परन्तु भाकर आभास हा ता दुनिया में बाद ताकत उद्योग है जा इन्धन का मोधी रातु ग रात मने।

आत्मोपम्य सर्वश्रेष्ठ योग

मन् १९१६ में हम पर धारणर ब्रह्म को गान में निकल पड़े—
 धारणा ब्रह्मजिज्ञासा। धन जिज्ञासा पूर्ण हुई है धीरे सामूहिक ब्रह्म जिज्ञासा की धारणा म हम काम कर रहे है। सामाज्य जनता का जीवन-धर उद्योग उद्योग गरीय धीरे दुनिया व दुम में म हिम्मा में, मुखा धाने गुण

का हिस्सा हमरो को दें—'म उद्देश्य स यद्वा यदा याग, जिस सहयोग
 कृत है, करना होगा। यह उद्देश्य उच्च याग है। एक-दूसरे के सुख दुःख
 का बीज लेना ऊँचा याग है। गाँगा ने उस आत्मापम्यता नाम दिया है
 और कहा है 'त योगी परमो मत'। ध्यान-याग की प्रक्रिया का वर्णन
 करके अंत में जो इरादा रहा है उसमें घटवाना वही है। फिर आगे
 अध्याय में कुछ प्राणायाम का प्रक्रिया बताया है। लेकिन ध्यान की कुल
 प्रक्रिया छठे अध्याय में ही बतायी गयी है जिसमें पहुँचे हुए योगी का
 वर्णन किया गया है और आखिर में कहा है कि वह स्वयंसेवक याग है, 'य
 आत्मोपम्य स वरतता है अपनी उपाय में सबका सुख-दुःख दन्ता है,
 जैसा मुझे सुख दुःख है, वैसा ही दूसरा को भी है इसलिए दूसरा का
 समान स्वयंसेवक जो वरतता है वह योगी स्वयंसेवक है ऐसा भावार्थ ने
 कहा है। शंकराचार्य इस पर भाष्य लिखते हुए कहते हैं 'अहिंसक
 इत्यर्थ'—शंकराचार्य ने ध्यान में परिभाषा बतायी कि जो अहिंसक है
 वह परम याग है सब यागियों का निरामयि है। यह बात ध्यान में
 रचना चाहिए कि यागाम्यास का प्रक्रिया के अन्त में भगवान् ने यह
 बात कही है।

पारस्परिक श्रोतश्रोतता का अनुभव योग है

हमने बंगाल में त्रिपुण्यपुर में उन तालाब के किनारे जहाँ रामकृष्ण
 परमहंस की प्रथम समाधि लगी थी कहा था कि जिस समाधि का अनु-
 भव थी रामकृष्ण देव ने किया उन समाधि का सारे समाज का अनु-
 भव हो सामाजिक समाधि का हम अनुभव हा यह हम जानते हैं। यही
 हमारा लक्ष्य है और 'म' नामी स्वयंसेवक भूदान का बहाना लेकर हम
 धूमने हैं। हम कहते हैं कि सारे समाज का सहजित बने। मर लोग साथ
 रह, जिस लोग मगठन करने है, उस सवाल से हम नहीं बाल रहे हैं
 लेकिन हम चाहते हैं कि सबको यह एहसास हा कि चाहे हमारे गरीब
 अल्प धन हा, फिर भी हम एक ही गरीब में नहीं मरते हैं, मारे शरीर
 में हम ही रहते हैं हमें एक सूत्र गरीब मिला हुआ है लेकिन बाकी के

गरर भी हमार ही है, जमे किमी अमार का दो सौ कोटरवाला मवान हा तो उच्चमें एक-एक कोटरा में एक-एक मनुष्य रहता है तैकिन हर घन कहता है कि पूरा मवान हमार है। हर गन्ध पर पूरे मवान की जिम्मवारा रहनी है क्वाकि सब मित्रकर एक परिवार है। सतूलियन के निग हरणक का एक-एक कोटरी दी गया है लकिन वह एक ही बाठरा नका नहीं है सब मवान उसवा है। किसी बाठरा में गदगी हा या का बामार हो ता वह सबका जिम्मवारी माना जाती है। उमी तरह नें रहने क निग अलग अलग कारियाँ मित्री हुइ हैं निने धरीर कहा जाता है तैकिन सब मित्रकर एक ऊचा मवान बनता है — अवा मवान तरा — जिसमें हम रहत हैं और जिसकी जिम्मवारा हम सबकी है। हममें हम और हममें आप ओल प्रात हैं। ताने में घाना और वाने में वाना जसा रहता है वैने ही हम सब हैं। अमका सांगात् अनुभव हा अमका नाम है याग।

कर्म एक शक्ति है, ध्यान दूसरी शक्ति

पतञ्जलि ने योग विवरण में समाधि का आभिरा नये कहा है। समाधि क कारण चित्त शुद्धि हाता है और उमके बाट विवक-म्यानि हाती है। यान सांगान् प्रण प्राप्त हाती है। पतञ्जलि का सूत्र है अद्धाशीय समाधिप्रणापूर्वक योग — यन्ते अद्धा फिर वाय फिर स्मृति और फिर समाधि जिनका त्रिः अष्टांगयोग में किया जाता है और उमके बाट प्रणा। इन तर, का क्रम बताया गया है। स्थितप्रण के लक्षणों में गना में यही कहा है समाधि के बाद जब प्रणानाभ हाता है और क स्थिर बनता है तब मनुष्य स्थितप्रण बनता है। उसका भावार्थ यह है कि समाधि ध्यान साधन है अन्तिम अवस्था नहीं। ध्यान एक शक्ति है तने कर्म एक शक्ति है। कर्म का उपयोग मन्त हा सकता है और सनी भी। तब ही ध्यान भी गलत काम क लिए इस्तमाल किया जा सकता है और महा काम क लिए भी। तैकिन कर्म भी भाग्यन् प्रण हा तब वह मानन परमार्थसाधन बन जाता है। यने ही ध्यान भी भावन उपपन्ना

और सत् कार्य के लिए घने ता पारमात्मिक माध्या बनाता है नहीं ता वह केवल एक गतिमात्र है ।

ध्यान और कर्म की प्रक्रियाएँ साधने से प्रज्ञा की प्राप्ति

ध्यान और कर्म परस्परपूरक शक्तियाँ हैं । कम क विना दम-योग प्रियाण करती हानी है माने उन मकरा ध्यान करना पडता है । ध्यान प्रज्ञा एकदम गंधे विना कर्म नहीं हो सकता । कम के लिए घने वस्तुओं का भावधाना से एक माय खयाल करना पडता है । उममें एक शक्ति विनामत होती है । उसमें भिन्न गति ध्यान व विवर्गिन हानी है । ध्यान म कुल वस्तुओं को छोडकर एक ही चीज का ध्यान किया जाता है । पचान चीजा का ध्यान किया जाय तो कर्म शक्ति विवर्गित होता है और एक ही ध्यान पर एवाग्र होने म ध्यान गति विवर्गित होता है । कम कर्म के लिए घने वस्तुओं का खयाल करना पडता है येम ध्यान क लिए एक ही वस्तु का करना पडता है । दाना पूरक शक्तियाँ हैं, घडी में अनेक पुरजे हावे है । उनको अलग अलग कर दिया जाय, तो आपका कम-शक्ति सध गयी । उमने वान घडी के सारे पुतों का इवट्टा करके फिर से घडी बनायी जाय, तो ध्यान गति सध गयी । पुतों का अलग अलग करने का काम तो बच्चे भा कर सरत लेविन एकत्र करना बठिन है । पुतों का अलग करना और एक करना हम तरन की दाहरी प्रक्रिया जब साधनी है तब प्रज्ञा बनती है । इन दो प्रक्रियाओं में से एक कर्म का और दूसरी ध्यान की प्रक्रिया है । जब दाना प्रक्रियाएँ साधनी है, तब प्रज्ञा जाती है जा निर्णयकारिणी होती है ।

सद्योग

आपने अभी योगासन किये, वह एक मुत्तर व्यायाम है । इसका सूत्र यह है कि हमने लिए न ज्याण गह की जरूरत है न धौजार का । कममें कम नहा है एकगाइटमट—उतेजना नगी है जगे दूसर व्यायामो म हाती है बरिन् हममें गति है इसदिग हम व्यायाम से धाराग्य क साथ

हागा। हमसे आपके लिए सुन्दर वातावरण निर्माण होगा। अच्छे वातावरण में ही योग बनता है। रात को सिनेमा देखा जाय, सुनह देर में उठा जाय उठने पर गंदे चित्र याद आ जाय, ता वातावरण खराब हो जाता है। इसलिए आपका सर्वोत्तम प्रचारक बनना होगा। सबक सहायक से ही आनका यह गहर इन्दौर सर्वोत्तम-नगर बनेगा। सहायक एक श्रेष्ठ योग है।

इन्दौर

—योगाधम म

१७ = '६०

बीरहा

शब्द शक्ति और शब्द शक्ति

दुनिया में जो शक्तियाँ काम करती हैं उनमें तोरमाय शक्तियाँ गयी हैं एक है शब्द-शक्ति और दूसरा है शब्द शक्ति । जिस शब्द पुण्य को वाग्ना म शब्द का, समाज का या दुनिया को शब्द मित्वा है और वह सबकी थोड़ा अपना तरफ भाव जाता है । माना सब थोड़ाएँ उस शब्द में एकत्र हो जाती हैं और शब्द शक्तिगामी बन जाता है । शब्दका वह शब्द यथायथ हान हुए भा शब्द या ठीक हान हुए भा दुनिया में बिखर जाता है उन शब्दों में शक्ति का प्रवाह नग बढ़ता ।

शब्द शक्ति

शब्द शक्ति है शब्द शक्ति का किना चित्तगत अनुभवी पुण्य को या किना प्रयोगगत शक्ति का । लेकिन ऐसा हर शब्द सबकी भावनाओं का आकृष्ट कर लेता शक्ति शक्ति में ही ऐसा नही होना बावजूद इन शब्दों में वह शक्ति वाग्ना हा वह शब्द दान हा या उमर दुनिया का भाव हा सब ऐसा समझ हा । यह जो शब्दों का थोड़ा एकत्र हाती है उसका मैं ईश्वर शक्ति मानता हूँ । किसी द्रव्य का या किसी शक्ति का शब्द का भाव ईश्वर अपना शक्ति जा शब्द है तब वह सबकी थोड़ाओं को आकृष्ट कर सकता है । ऐसा भी कहा है कि किसी एक व्यक्ति के शब्दों में ईश्वर उग व्यक्ति का जिन्गीभर अपना प्रेरणा भन्ता रह । जिन्का शब्दों प्रवृत्त माना है उन शब्दों का भाव भी ईश्वर का प्रेरणा जिन्गीभर रह, ऐसा कहा है ।

रामचन्द्रजी के बारे में मैंने अपने मन में एक बात मान ली है । मानस

नहीं कि उममें मैं टीक-टीक कुट्टि का प्रयाग कर रहा हूँ या नया। लेकिन मैंने मान लिया है कि जहाँ रावण-भुक्ति हुई, वहाँ राम का भवनार समाप्त हुआ। उमके बाद राम एक अच्छा राजा रहा। इसलिए वायु अपने रामायण में तुलसीदासजी ने उत्तरवाणनाला धन लिखा नहीं। याना माता का परित्याग एक नाम के पूत्र का वध लक्ष्मण का परित्याग और भगवान् का स्वगाराहण—यह सब नहीं लिखा। कतना ही लिखा कि रामचंद्रजी अपने भाग्या और हनुमान् का सेवर एक उद्यान में बंटे है। यहाँ पर तुलसीदासजी ने चरित्र को समाप्त किया है। याना उद्याने ऐसा नाम कराया है कि रामचंद्रजी जिगा उद्यान में हमारे वाच निरात्रमान है। सागना यह कि रावण-भुक्ति के बाद रामचंद्रजी का जावन एक मानव का था एक उत्तम मानव का था।

सन् और असन्, प्रकाश और अन्धकार

ईश्वर-सकल्य के अलावा एक और भा सकल्य है। वेद व्यापन अथ में ल्यों ता हम सन् भवतार ही है। कोई काम का भवतार है ता कोई ब्रह्म का भवतार है वाइ मोह का भवतार है। उमके मरल्य में सन् और असा दोनो समात है। प्रकाश और अंधकार दोनो उमके पेट में समाते है। लेकिन कभी-कभी किसी एक विशेष स्वरूप में परमेश्वर का एक विशेष रूप जुग होता है। ईश्वर ने सकल्य दिया कि सृष्टि पदा हा ता सृष्टि का हूँ उमके सकल्य दिया कि जिनिय जानियाँ पदा हो और फलें ता जानियाँ फन रही ह। इस प्रकार विश्व में उमका ही सकल्य है। लेकिन जब किसी विशेष पुरुष के चितन के साथ ईश्वर की प्रेरणा जुड जाती है और जब तक वह जुडी रहती है तब तक दुनिया उमके पीछे चपती है। जब ईश्वर कोई सकल्य करता है।

रामजी के बारे में जैसा मैंने कहा वैसा विश्वेषण सबका हम नहीं कर सकते। हम कोई परीक्षण नहीं है। यह ता सहज एक विचार मेरे मन में आया मो मैंने कहा। मार यह कि ईश्वर जब कोई विशेष वायु करता चाहता है तब वह अपना सकल्य किसी विशेष पुरुष के साथ जोड़ देता है

और तब वह वाप होत भी है। लेकिन जब तक वह अपना मन्त्र्य नग जोन्ना नब तब गन्ना घाता है और लाग उन सुनत है। दुनिया म अनक प्रेरणाए बन रहा है। उनमें म वह भा एक प्रेरणा होती है और उमा प्रकार बनता है। लेकिन तब इश्क काई सकन्य करना है ता ये चरनेवाली विविध प्रेरणाए स्वतम हो जाती है और सबको थडा और गति एक में एकव नू जानी है।

विविध प्रेरणाओं को खत्म करनेवाला

विष्णु-सहस्रनाम में एक नाम घाना है वीरहा। वीरहा का अर्थ होता है वीरों का हतन करनेवाला वीरा का नाग करनेवाला। लेकिन ऐसा कसे हा सरता है? इश्क वीरा का नाग करता है ऐसा अर्थ यहाँ कसे हो सकता है? समुद्र कहा जाता ना समझते कि असुरों का राक्षसों का नाग करनेवाला। गजरावाय ने काफी साबने पर उमरा अर्थ किया है कि वारण यानी विविध ईरणाओं का हनन करनेवाला विविध प्रेरणाओं को खत्म करनेवाला। जा विविध प्रेरणाओं का खत्म करके सबको एक में एकव करता है वह है वारहा।

इश्वर की इच्छा से ही काय

मुझे लगता है कि गन्द में ये जो गन् इश्वर लगे पड़े है व सारे एक क्षण में खत्म हाने चाहिए। लेकिन यद तब हा सकता है जब ईश्वर मरे गन् क साथ अपनी प्रेरणा नाग द। अगर इश्वर उसकी प्रेरणा मरे गन् क साथ जोन् देना है तो ये सारे इश्वर एक क्षण में खत्म हा सकता है। लेकिन बैसा नहा होगा तो मेरी तीव्र वासना हात हुए भा ये इश्वर यहाँ पर रजेंगे ता मुझे बुरा नहा लगेगा। मैं मानूगा कि मेरी तीव्र वासना होने हुए भा सबको प्रेरणा नहा हा रही है ता इश्वर की इच्छा नहा है।

आरम्भ में 'अकेला धालो रे'

जब भूगान गुन् हुआ तब आरम्भ में मैं अकेला ही भूगान मांगता

था। एक साल तक भारतभर में एक ही भ्रूतान की सभा हाता थी और में अबेला जमान माँगता था। उस समय जमीन मिलती थी और चूँकि वह ग्ब नयो चीज थी, इसलिए सबका ध्यान खिचता था। उम समय एक भाइ ने मुझसे पूछा कि 'कस प्रकार यह माँगने का कार्यक्रम, काम पूरा हाने के लिए कितने समय तक चलता रूगा ?'

मैने कहा, 'भाप जिस गति को देखकर पूछने है उम गति के हिसाब से पाँच से साल लगेंगे।'

'अपर उसने कहा 'तब यह काम कस हागा ?'

उन टिना चुनाव का प्रचार जारो से चलना था और जगह जगह सभाएँ होंनी थी। भ्रूतान की ता मेरा एक ही सभा होती थी। सब-सेवा मय उमके बाट आया। मैने उनसे पूछा कि 'आज के दिन देग भर म भ्रूतान की सभाए कितनी हुई होली ?'

उहाने कहा 'गाय' एक ही सभा हुई होगी।'

मैने फिर पूछा, 'आज देगभर में चुनाव को कितना सभाएँ हुई होंगा ?'

उहाने कहा 'मेकडो हुई हागी।'

तब मैने कहा 'जब अगभर में भूदान का हजारों और लाखों सभाए हागी तब यह काम तुरत हागा। बैसा नहीं होना है और बैसा आज चर रहा है बैसा चचना रूगा ता पाँच से साल म काम पूरा होने में लगेंगे।'

वारहा का अवतार

बाट में हमने दखा कि इस काम में अनेक लोग आये। हमसे से कुछ लोग अलग अलग कामों में लगे थे उनकी विविध ईरणाए मत्म हुई। 'वारहा—भगवान् का अवतार हुआ और वे सब इस काम में एकत्र हो गये। काम एक रू तक हुआ।'

त्रिविध ईरणाएँ शुरू

उसके बाद भगवान् ने सोचा हागा—साधा हागा इसलिए कहा है

कि मैंने अपने दरबार में जाकर पूछा नही ! (लेकिन मुझे ऐसा लगना है—भगवान् ने माना होगा)—कि वह तब इनका कामों में प्रेरणा करता रहे ? तब मैं विविध ईरणाओं का काम करना शुरू ही गया ।

आज देश में सरकार को छोड़कर और किसी भी संस्था का पास अपनी शक्ति नहीं है, जिनका सर्वोच्च-सायकताका काम है । आज समाज के सायकता, भ्रमण का कार्यकर्ता मानवा-मय का शक्ति का स्मरवा-दृष्ट के कार्यकर्ता शक्ति निधि के कार्यकर्ता इस प्रकार सर्वोच्च का पास जिनकी शक्ति है उतनी शक्ति विद्या भा संस्था के पास नहीं है । यह मनी है कि जब चुनाव का समय आता है तब पार्टियाँ बहुत-सा शक्तिपूर्ण युवा मनी है लेकिन जहाँ तक नियम काम का सम्बन्ध है सर्वोच्च का कार्यकर्ता का बहरर किसीकी शक्ति नहीं है ।

मानवता को शान्ति-सेना ही बचा सकती है

इन दिनों मुझे लग रहा है कि शान्ति-सेना का बहरर और कोई प्रेरणा नहीं हो सकता । आज विविध ईरणाएँ छोड़कर सब इस काम में लग जायेंगे ऐसा हम सबका मुझे लग रहा है । आज राष्ट्र का ज्यादा-से ज्यादा जम्हर शान्ति-सेना की है । शान्ति-सेना का मय हट जायगा ऐसा मरना करना हम सबका नहीं है । आज छान्ति-छाटे देशों देश में हो रहे हैं । ऐसी सीध पर अगर शान्ति सेना हाता है, तो वह इन सुराश्या को काफी हद तक रोक सकती है । ये सुराश्या तब हानी है जब मानवता गिरती है । जब मानवता गिरती है, तब मानव सेना उमर नहीं रोक सकता । एसी सुराश्या के समय शान्ति-सेना ही काम आती है ।

मुझे लगना है कि शान्ति-सेना होगी तो सबकी विविध प्रेरणाएँ काम आनी और सब उसमें जुड़ जायेंगे । इसलिए मैं भगवान् का प्रार्थना कर रहा हूँ कि भगवान्, तेरी प्रेरणा हममें भर दे तो सबकी विविध ईरणाएँ काम आनी और सबके सब इस काम में जुड़ जायें । मैंने शान्ति सेना के लिए सर्वोच्च-सायकता का कार्यक्रम लिया । आज तब एक भा व्यक्ति

ऐसा नहीं मिला जिसने सर्वोत्तम पात्र रखने से इनकार किया है। हर गम्भीर उमरा टीस मानता है और कहता है 'यह सर्वोत्तम-पात्र काम में रह सकेगा क्या? उमरा काम व्यवस्थित ढंग से चल सकेगा क्या?' ऐसे समान लागू पूछ लेते हैं, लेकिन जिस पर भी सर्वोत्तम-पात्र रखने से इनकार नहीं करते और रखने की तैयारी ही तान है।

शांति सेना को सबका समर्थन

सबको लगता है कि शान्ति-सेना की शक्ति बढ़ेगी, ता दंग की प्राण-शक्ति पूरक-शक्ति बढ़ेगी। सब पार्टीवाले कहते हैं कि यह काम अच्युत है लेकिन वह हम नहीं कर पायेंगे। जा भगड़े सचप होते हैं, वे पार्टियाँ बकारण भी होने हैं या पार्टियाँ उनमें कहीं-न-कहीं मिली हुई हाता हैं, इसलिए ब कहते हैं कि मोके पर हम कुछ शान्ति-सैनिक का काम भन्ने हा कर लें लेकिन स्वतंत्र रूप से वह काम हमसे नहीं बन सकेगा। लेकिन यह काम जरूर बनना चाहिए।

जिस काम को सबके आशावादी हैं और जिसके जरिये हम दंग व सभी घरों में प्रवेश कर सकते हैं वैसा यह काम है। हम अगर शान्ति-सेना के जरिये अंदरूनी "गे-फसा" के बारे में दंग की सरकार को निश्चिन्त बना सकते हैं तो उसमें सरकार का ताकत बढ़ेगी। हम गाँव-गाँव जाकर गाँवों की ताकत बना सकते हैं। इससे सरकार की चिन्ता दूर हागा और दंग की ताकत बनेगी।

शांति का काम होगा, तो भूदान आगे बढ़ेगा

जब सभी सरकार के नेताओं से मिलना होता है तो वे अक्सर यह पूछते हैं कि आपके शान्ति-सेना का काम कहाँ तक आया, क्या चलता है? यह काम बढ़ेगा सरकार के नेता चाहते हैं। फिर भी अगर सब लोग इसके गढ़ उठा लेते हैं तो मैं मानूँगा कि अभी इसमें ईश्वर की प्रेरणा नहीं है। लेकिन मैं यह बात कहता रहूँगा। मुझे लगता है कि इसके बिना आपके भूदान-आन्दोलन शान्ति काम नहीं चलेंगे। आप गाँव में चले गये जमीन माँगी, लोगों ने जमीन दी, लेकिन आप अगर उनसे कहेंगे कि भूदान

शक्तिये बाकी जीवन व धर्म प्राना व चार में हम कुछ नग कर सग
 ली धारत व भूतान-शामानन धाम नही बहें । गौता में तागेसन को
 पमाला में पकर उन्को रोसन का तागत शिवा गरेंगे तथा भूता
 गनान वागदह वदेगा ।

येमा शान्द मिले, ताकि सारी शक्तियाँ एकत्र हों

ये भगवान् से प्रार्थना करता है कि इस शक्त का एक ऐसा शान्द कि
 शिवा कारण सारी शक्तियाँ एकत्र हारत एव साथ काम में लग जाय ।
 ये शान्द दना मिसाल देता है । एक बहा पकर पडा है । गव मिनवर धार
 एक दो छान धानवर जोर लगात है ता वह जगह ग हन्ता है काम
 हा जाता है । लेकिन धगर में धारत ली बज आर लगाता है, धार छान
 वज आर लगात है धौर व चार बजे तार लगात है ता उमग व्यायाम
 मने ही हा जाय, पकर नहा हन्गे । धार धारा फुरसन स भायेंगे, ता
 शान-भूतान धारता राह नही दनगा । सबको एव साथ जोर लगाकर काम
 कर लेना चाहिए । धार में विविध प्रेरणाएँ भले चले । जग हमार धार
 का शक्ति है कि काम शिवा ता धारत में कुछ धरानट धानी हा है ।
 फिर शिवा, धाराम शिवा धौर फिर शक्ति धा गयी ता काम में लगे ।
 काम पूरा कर दिया फिर धाराम शिवा ।

इस गतिरगात्र का तरह ही गनात्रगात्र में भी चलता है । चाड़े शिवा
 जरा आर स काम चना तो धार में स्तव शान्त भावा है । धारमा का
 जग धामाद प्रमा विना धारि का जहरत हाती है । शाने शिवा स्तव
 शान्त गया ता भले गया । धार फिर स एव साथ तार लग धौर सब
 विविध दरणाएँ खरम हां धौर काम आर स चले । उसवे धार फिर धाराम
 धारता धौर उसवे धार फिर नयी प्रेरणा धारयेगा । इसलिये शिवा एक
 बार आर स काम में लग जाना चाहिए ।

विचार, विचार और चिंता से मुक्ति

साहित्यिकों की कठिनाई

वचन से मेरा साहित्य के साथ सतत सम्बन्ध रहा है। हिन्दुस्तान का अनेक भाषाभाषी के साहित्य से मेरा कुछ परिचय रहा है और बाहर का भाषाभाषी का भी थोटा-सा परिचय रहा है। प्राचीन साहित्य का काफी परिचय रहा है। उन जिन भी मैं मानिक पत्रिकाएँ देखता रहता हूँ जिसमें कुछ भलक मिल जाती है। अखबारों में कभी-कभी नयी किताबों की समीक्षा रहता है। उसे भी देगता रहता हूँ। लेकिन इस वक्त हिन्दुस्तान में नये साहित्य निबलता है उमर मुझे सतोप नहीं है।

आधुनिक गद्य-साहित्य का धीरे धीरे विकास हो रहा है लेकिन साहित्य से जो अपेक्षा होती है और जो करना चाहिए, वह पूरा नहीं हो रहा है। उमका एक कारण तो यह है कि बहुतों का जीवन-कलह (स्ट्रगिल फार एक्जिस्टन्स) में टिकने की काफी कोशिश करना पड़ती है साहित्यिकों को भी करनी पड़ती है। उसमें बहुत-से हार सात है। कई साग साचारी से कुछ ऐसे काम ढढ लेते हैं और करते रहते हैं जो काम स्वाभाविकतः साहित्य की प्रतिभा के लिए अनुकूल नहीं होते। वेस प्रतिभूल परिस्थिति में पढकर भी कुछ बची हुई साहित्य की प्रतिभा का उपयोग के कर लेते हैं। लेकिन आज की परिस्थिति एक बहुत बडा कारण है। जिस किमीरा राज्याध्यय, सरकार का आध्यय या धनिकों का आध्यय मिलता है वह उमसे स्वागतार्ह हो जाता है और दूसर लोग वेगा आध्यय ढढने रहते हैं।

छोटे मसलों में चित्त गिरफ्तार

दूसरे वक्त यह है कि जमाना बिधर जा रहा है बिधर जाना जमाने

के लिए उचित है, तानिमा है, इसका कोई खास भान साहित्यिका को होना ही सा नहीं पड़ता है। बल्कि उससे उड़ी चिन्ता भी ही जा रहे हैं। जगत् जगह अपने आसपास को छाननी मोटो समस्याएँ हैं और छोटे-भाटे सुख दुःख दाग पग हैं उनमें मानियिक उनभ जात हैं और उनका कारण उस पार का दान पर-दान उन्हें नहीं होता है। उनमें बहणा भा हानी है, लेकिन उसकी गन्तारी बहुत कम हाती है। कुछ साहित्यिक मजदूरों का वतन बने उनमें में ही अपना बहणा समाप्त कर लेते हैं। इन चिन्ता आवादी बने रहते हैं चिन्ता का कृदुम्ब का विस्तार हो ता उह तकनीक होती है इसलिए कुछ व्यक्तियों को बहणा कृदुम्ब नियाजन के काम में ही समाप्त हाता है। य तो मैंने कुछ मियाये दी है। ऐसे छोटे छोटे कामों में अपना वास्तव्य वृत्ति को सदानुभूति का ता बवि-हृदय के लिए बहुत आवश्यक हाती है वे समाधान दे लेते हैं और विश्व में जा भगवत् प्रवृत्ति बन रहा है उनका प्रकाश उह उपनयन नहा हाता और छोटे-छान मसला में उनका चित्त गिरफ्तार हो जाता है।

कुदरत का स्पर्श नहीं

तीसरी बात मैं यह बख रहा हूँ कि कुदरत का जो स्पर्श चाहिए— कुदरत के दान का और कुदरती जीवन का—वह साहित्यिका को नहा हाता है। उन्हें दोनों में अलग रहना पडता है, इसलिए स्पर्श का एक बहुत बडा मोन कुछिन हा जाता है।

शाश्वत मूल्यों से बचित

चौथा बात मैं यह बख रहा हूँ कि नये मूल्यों की खोज में सब्बे मूल्य न नये हाते हैं और न पुराने होते हैं, इनका भान साहित्यिकों का नही रहा है। इसलिए वे बहे जात ह और नये मूल्यों के नाम में शाश्वत मूल्यों में बचित रह जाते हैं।

दोहरा सम्पर्क हो

पाँचवी बात यह है कि हृदय प्राण-मुह्य से जुडा होना चाहिए। जो नह्य बर्षों के अनुभवा से समृद्ध है उनसे हृदय जुडा हुआ हो और बुद्धि

आधुनिक प्रवाह में जुड़ा हुआ हो, यह आवश्यक है। इस तरह का दोहरा संपर्क अर्थात् बुद्धि व जरिये आधुनिक प्रवाह में संपर्क और हृदय के जरिये पुराने प्रवाह में सम्पर्क साधना मुश्किल हो जाता है। इसलिए व्यक्ति या तो पुराना संपर्क करना है या आधुनिक। बुद्धि अद्यतन और हृदय प्राचीनतम से संपर्क हो, यह तो एक याग ही है। वह याग आज के साहित्यिकों को नहीं संपन्न रहा है।

साहित्यिक मुक्तात्मा हो

एक बात जरूरी है कि साहित्यिक को मुक्तात्मा होना चाहिए, यानि उसके मन और बुद्धि दाग का समाधान होना चाहिए। इस तरह आजकल ध्यान नहीं लिया जाता है। और धर्मसाधना में से साहित्य का निर्माण होगा यह अर्थात् व्यापक बन रहा है जो उत्तम साहित्य के निर्माण में बाधक साबित हो रहा है।

साहित्यिक बनो

आप आश्चर्य में पड़े होंगे कि ये चीजें कितनी ही सही ही लेकिन हम लोगों के सामने रखने से क्या लाभ है? इसका उत्तर सुनकर आपको और भी आश्चर्य होगा। उत्तर यह कि मैं आपमें से साहित्यिकों के निर्माण की अपेक्षा करता हूँ। जो काम आपने उठा लिया है उसमें सार-हृदय के साथ संपर्क हाता है। आप सतत धूमते रहते हैं इसलिए कुत्तर के साथ संपर्क रहता है। आपने जो राय उठाया है वह युग प्रवृत्ति होने के नाते युग प्रवाह के साथ आपका संपर्क हो जाता है और एक तत्स्थ सेवन के नाते आपका विश्व दर्शन होता है। ये सब चीजें आपको उपलब्ध है इस हालत में आपमें से ही सर्वोत्तम साहित्यिक निकलने चाहिए। यह अपेक्षा मैं तो रखा है। इसके लिए एक आत्म विश्वास होना चाहिए कि यह चीज हमका सधेगी। इसके अलावा यह चीज साधना अपना कर्तव्य है उसके बिना हमारा काम पूरा-सगडा पड़ेगा यह बात आपको ध्यान में आनी चाहिए।

आपके लिए मुक्त मन की आवश्यकता

जब जहाँ जहाँ जाते हैं वहाँ-वहाँ अनेक-विध प्रसंग बनते हैं जिनमें मन कुछ खाखी को मिलता है। लेकिन वह हम प्रचार मागता है और प्रसंग ही बनता है। हमारा प्रेरणा धर्म तो मनुष्य मागता है। यही तो हमारा साधना सिद्धि ही जाता है। अनेक विभाग प्रसंग आया तो मन ही जाते हैं। वही का एक स्थिति ही है। उममें मनोना की पहचान ही है। एक छाटा-सा मस्तिष्क मिल गया तो हमका बुद्धि में मगान् आविष्टार होता है। हम प्रचार व आविष्टार व विचार धर्म पण-मुक्ति का वास्तव है। लेकिन यह पण-मुक्ति करना महत् और गुनम हाता चाहिए कि विभाग विस्तृत मुक्त रह। वही म भा गुन विचार का सत्त मित्रता है तो उसे महत् करने व विचार विभाग मुक्त हुआ जाता चाहिए। हम धर्म में हमने पण मुक्त होने की जरूरत माना है। अगर हमारा मन मुक्त रहा तो स्वाभाविकतया महाबाव्या की स्फूर्ति ही सत्तनी है। साठ-नाम्य कथा आदि क लेखन की भी स्फूर्ति ही माना है क्योंकि वह सारा निजानुभव का उत्पन्न ही होगा महत् प्रसागत ही होगा। इसलिए वह हृद्य होगा। मैं मानता हूँ कि यह हृद्य होना चाहिए।

‘धी धार सेवन’ की स्फूर्ति

वह सबक धूमने निजता। उम समय एक बहरी मे मित्रता ह्या। उमने लम्का से पूछा कि तुम किने भाइ-बहन हा ? उमने जवाब दिया कि हम भात है। उममें से एक समुन्ध व नाचे बूझा है दूसर का स्फुन मग नज्जाक हुआ है हम सब वहाँ जाकर बहन है उम या भा करत है। उम पर वही कहता है कि बहन। तुम तो भाय नहा रहे पाँच हा रण मग क्याकि दो भर गये। लेकिन लम्की बहना है जी नग हम मात है। वह हम बात को बतल नहीं करती कि हम पाँच ह। वह बहना चाहती है कि हम हन पाँच इस वक्त मृष्टि में ह धा और वा अन्यक्त मृष्टि में है, लेकिन सता है। उन पर नहा का आरोप करना गम्भीर

है। इस प्रसंग में स वरुणवर्षे स्फूर्ति का विनमनी पाता है और एक समर कविता लिख डानता है 'वी भार सवन ।

कार्य म से स्फूर्ति के नव पल्लव

हम राग अच्युत वाम करन है लेकिन उग वाम व माध मरस्वती का सेवा भी हाना चाहिए। क्रुम्य म अवि मरस्वती की प्रगमा कर रहा है कि 'ह सवात्तम मा नू सर्वोत्तम नानामा है। जिम् नानिया का प्रवाह प्राट है व गणा-यमुना जता नानिया उत्तम ह परंतु तेरा गुण पवाह है नानिए नू सर्वोत्तम है। मर दवताया म श्रेष्ठ प्रकाश देनेवाता है। हम मर अग्रगन्त है। निगोक्टेड निम्न नानिया है। हे माता, नू हमारी प्रगमि कर-म तरह मरस्वती हमारा प्रगमि करेगी। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए। तुनिया आपन सहज हा अप म करेगी कि आप एमे वाम में मग्न है कि जिमम स्फूर्ति व निय तव-मस्तव पल्लवित होने चाहिए।

आप पन्याया व लिए निवचन है ता बान में एकाध घण्टा दिगो धात एनात स्यान में बैठकर विगाना चाहिए। हम भी हमी तरह विजात हैं। हमें उतावली क्या है? अपने गवन म भाराम हा है। इसलिए वाच म एन घण्टा बैठकर विगत मनन करना चाहिए। मगीत भजन आदि चलना चाहिए। तीन घण्टे का कामना हो तो चार घण्टे का मानना चाहिए।

निद्रा म विचारों का विकास

बादा रात रात की सवा आठ बजे सोना है और दिन म भी बीच-बीच में दो-तीन दफा पन्द्रह-पन्द्रह मिनट राता है। आप राग भी निद्रा में कृमा न करें। मरपूर निग वेता चाहिए। दिश हमी वात की रखनी चाहिए कि निद्रा गड हो। आपन और तारा म मत पडा। निग उगारना म लगे तो जाप्रति व ममय स्फूर्ति रहेगी। नो ता बहुत-ने आपना घटा तव धवण करन ह लेकिन अस्फूर्ति की अवस्था में धवण करत है तो वह असर नहा हाता, ना हाता चाहिए। बुद्धि में भालरा हो

और उस अवस्था में हम मुनन रहें यह बन नहा सकता। उस अवस्था में हम वास्तव रहते हैं क्योंकि उसमें हमें बहुत कम काम करना पड़ता है। बहुत सारा काम चरखा हा कर लेता है। उसमें बुद्धि पर भार नहा आता है। आप सबका चाहिए कि रात का दस से तेकर सबर पांच तक निद्रा ल। उमोस प्रतिभा त्रिनेगी। निद्रा का प्रतिभा क साय बहुत सम्बन्ध है। जा लोग मत्ताय-याग म निरत है उनका निद्रा समाधि स्थिति है एमा माना गया है। यागिया का बहुत प्रयत्न न जा समाधि शामिल हाता है, वर समाधि कमयागी का अप्रयत्नेन लीनापायेन प्राप्त हाती है। क्याकि अन्यही निद्रा समाधि ही है। वैसे समाधि न भा श्रुयान ता हाता हा है। बाय का मिट्टी के अन्दर लीकन है ता अन्दर ही उमरा विराम हाता है और फिर वह अकुरित हाकर पूर निकलता है उसी तरह सोउ समय हम सर्वोत्तम विचार करें ता भूमि में उन विचारा का बीज बोया जायगा और उस पर निद्रा की मिट्टी डाला जायगी ता उनका अत्युत्तम विवास हागा। अगर निद्रा न हाता ता उस तरह का विवास नही हा सकता।

निद्रा समाधिस्थिति

निद्रा में हम परमात्मा क बिलकुल करव पदुब जान है और फिर वही म शक्ति तेकर लीकते हैं। वेने में बहा है कि जस पणी राम को अपने घासले की तरफ जान है वैसे ही मेरा मारी भावनाए उस परमात्मा क पाम पहुँचने के लिए उस बसति-स्थान की तरफ जा रही है। पना लिन भर क काम स बच जाते है ता आखिर उस एक विधाम-स्थान का तरफ जात है। वैसे ही मारे जीव बचे गणि हाने है लिनभर चिन्तन और कम स बक जाने है तेकिन निद्रा में भी अगर उह स्वप्न घायें तो वह एक तरह का मजा हा है। निधाम-कर्म-याग निरत मनुष्य का निद्रा समाधि क नसी हाती है। उसमें स्वप्न नही आते है वर स्फूर्ति-स्थान बनता है इसलिए आपके जीवन में रात में निद्रा का निरचित स्थान रहना चाहिए।

निद्रा के प्रयोग

मेने निद्रा क वर प्रयाग विष है। दा घटे न तेकर

निद्रा लेने के प्रयोग किये हैं। कुछ दिन तब मैं बारह बजे माना या और दा बजे उठना था, बाकी बाइस घंटे काम करता था। इस तरह के प्रयोगों के लिए मुझे प्रेरणा थी और मोटा भा मिलता था। ११ घंटे की निद्रा में जा अनुभव आये वे भा भरे पाग पड़े हैं और जब मेरा शरीर कमजोर था, तब पुष्टि के लिए मैंने बारह घंटे निद्रा लेने के प्रयोग भी किये हैं। रात में घाठ घंटे और दिन में तीन चार घंटे एक एक घंटे निद्रा ला है और उसने भी परिणाम आजमाये हैं। कुछ मिलाकर मरी यह राय है कि पचास से लेकर साठ साल तक के मनुष्य को कम-से कम छान घंटे और दो सवे को घाठ घंटे निद्रा मिलनी चाहिए। उसमें आधा घंटा ज्यादा चंगा, लेकिन कम नहीं। इतनी निद्रा ला जाय तो स्फूर्ति रहगी।

पाल का साथकता

इस तरह कोई नहीं जानता। सब यही बतते हैं कि नाम से आयु क्षीण हो रही है। कवि कहता है कि नाम से अपना आयु खत्म क्या करत हा ? लेकिन नीचे में आयु खत्म हुई तो जाग्रति में भी खत्म हुई, यह समझना चाहिए। पाल सार्थक कह जाता है हमरा एह विचार मैंने अपने लिए बनाया है। जिस क्षण मन में विचार आता है, वह क्षण धर्य गया, ऐसा मानना चाहिए। जिस क्षण विकार नहीं है वह क्षण चाह गैत में जान चाहे गतरज के खेल में घीने, ता भा वह समय आपने कमाया, खामा नहीं। बीनसा समय सार्थक हुआ और बीनसा निरर्थक हुआ हमकी यह कभीनी है। निद्रा में स्वप्न आये तो वह समय धर्य गया ऐसा मानना चाहिए। रात निद्रा आयी तो समय मायब हुआ ऐसा मानना चाहिए। क्वाति गाड निद्रा का जाग्रति में उपयोग होता है।

नींद में जाग्रति और जाग्रति में नींद !

उन दिनों यह जो क्रम पला है कि कम-से-कम नींद लेनी चाहिए, वह सत है। नाद तो पूरा ही लेनी चाहिए। नींद में जा जाग्रति आती है उमाका नाम स्वप्न है। और जाग्रति में नींद आने का नाम है विचार।

जागति में नाना प्रकार के विचार पैदा होते हैं, तो उनकी मूर्च्छा है ऐसा सम्भवा पाणि। यह बात जैना का है। हम चाहते हैं कि जागति में विचार न हो। उगीसे नि स्वप्न निद्रा धार्येण। यह बहुत गम्भीर है कि रात में जाने नि के अन्त में हम नाय-स्मरण करें और पूरी रात में प्रत्येक मासिक करने के लिए मने ध्यात ध्यातों एवं मुग्धा बता दिया। ऐसा निम्नो, जिसमें दर्शन हो

मस्तर हाथरी लिखने की बात बग जाती है। बापू भी बार-बार बन्दे थे। लेकिन वह बात मुझे बन्ना जची नहीं। तुम लाग हाथरी मन निष्ठा करा। उसका बाद उपाय नहीं है। जायदा निखने का मतलब है, भूतनाम में जाना। इस जून प्रवण का टाका। बापू बुद्ध दूसरी बात कहते थे। व जो कहल थ वह खुद भी करा थ। खुद अपने लिए जहरत न हो, ता भी करते थ। दा मिनट उठने में थेर हूँ, यह बहुत बन्ने जाता है। यह भी बाई हाथरी म लिखने की बात है? बुद्ध लाग हाथरी में ध्यान दाप निष्ठा करन हे वह गहन और बुद्ध लाग दूसरा व दाप लिखा करन है, वह भा गहन। मै बन्ना धारीक-धारीक बाँने निष्ठा पसन्द नहा करवा। मै भूतनाम म जाना नहा चाहता। जब हमारी उत्तिया हमस्य बन्ता है कि पुगना बाई भाषण दक्षिण, ता में कहना हैं कि मै भूतनाम में नहा जाऊगा। मैने देखा ही नहीं तो म मुक्त हा जाऊगा। निम्नो का ताका प्रेज रखने के लिए बहुत गम्भीर है कि व्यर्थ के व्यौर न किये जाय। उगी बात निष्ठा जाय जिनमें दान हा, चिन्तन हा किमाका बाप हा। इस तरह निखन रखन से मासिक का निर्माण हाता।

जीवन म योग की साधना

जवानी में याग की बहुत जरूरत है। हम ताका के जागन में त्याग ज्याना जाता है। मै भोग-गरासण लागों का नहा हमारे बायवर्तिया का बात कर रहा है। हमारे जीवन में भाव प्रवार के बनेस बट रहन हैं। हमें अनेक प्रकार के काम करने पडत है, विपरात परिस्थिति में रहना पन्ता है अनिष्ट जीवन में त्याग अधिष्ठ है। यह टाक ही है। लेकिन

त्याग वा अनुभव करना है, ता उसमें सन्तुष्ट रहना चाहिए। मैंने गिन
 वा सूत्र बनाया है त्याग दो मात्रा और भोग एक मात्रा। हममें स
 कुछ वा जावन भाग क अनुभूत होगा ता कुछ वा जीवन त्याग क।
 यह सब परिस्थितिवग नना है। लेकिन त्याग और भाग एनों स्थिति
 म हम याग साधना चाहिए। 'ममस्य योग। वित्त वा समत्व
 नग रहा ता जीवन सुख जायगा। हमारी एर लड़का बहुत कमजोर
 है। कश्मीर में पार-पजाव लाघत समय उमने बना ही पुरुषार्थ
 किया उमने सहन श्रद्धा बनी, लेकिन बाद में उमने बहुत ज्याण
 काम किया ता याग चला गया। हम तरह जावन में याग वा लोप हाता
 ह ना वह चिन्ता वा बात है। कुछ चीजें करने की हाती हैं और
 कुछ बोलने की। मयास वाली की चीज है और योग करने की
 चाज। समास एक श्राकाशा है। हम जितना आगे बढ़ेंगे, श्राकाशा उतना
 और आगे बढ़ती जायगी। उसवे और हमारे श्राच फासला रहे ही जायगा।
 हम जितना आगे बढ़ेंगे, मयास वा एन एन नया रूप सामने आयेगा श्रा
 हमें मालूम हागा कि हम यह नहीं सधा। इसलिए समझना चाहिए कि
 मयास श्राकाशरूप है। हमें अपने जावन में योग साधना चाहिए। उससे
 उल्साह, स्फूर्ति बनी रहेगी। और फिर जितनी सहजता स लाग अपने घर
 में नी नहा रहे पाते है उननी महजना स हमारी श्रासम-यात्रा चलेगा।

सौ साल जीना ही ह

यात्रा में खाने की जो मित्रा सा खाने हैं यह टीक है। क्या खाया,
 वह महत्व वा बात नहा है लेकिन जितना खाया यह महत्व की बात है।
 मन्त्रिण नाप-तोलाकर खाना चाहिए। व्यसन वा चीज वा सत्रन नहा कराना
 चाहिए। मयाने बारा भी ज्याण नहा खाने चाहिए। वस हमारा श्राहार
 सात्त्विक हा रहता है। लेकिन उसम भी मात्रा मधनी चाहिए। बाद फल
 खाता है लेकिन ज्याण खाता है और दूसरा बाद दाल राटी खाता है,
 लेकिन परिमित खाता है ता कहना चाहिए कि दूसरा याग है। यद्यपि

पत्नी का स्वित्त है तो भा ज्यो माया में रहने न मानेवाना याता नही बनता । ये सब कृत नग पुनरा पाता कि हमारा कान्ति-भक्ति हमारे पना । कान्ति-भक्ति और कान्ति का नाम में विराय गना बन्ति । कान्ति जाति में गन ताजगा रना चाहिए । ता गन धाराम्य कान्ति रहो गना कृति और हृदय में भी तावना रहनी । इसने विण बमसाया काम का परिमाण कम करता है ता भी परबट नग क्याकि नवानु हमें बग घानु दोवाना है । म नला मरनमाने गन है । मम का मान पाता ही है । उमर कान्ति भा जो कान्ति है । कान्तिमान्य ने बग है कृष्णकर्म कर्मानि जिज्ञीविद्यत गत सभा इसनिग उतापना नग कान्ति जाति । कर्म की गना गोन कम करना पने ता भा हा नही लेनिन योग का माया कम नग पत्नी जाति ।

ध्यात शब्द का अर्थ है ध्यान करने से ही न मेने धारम्भ किया और धारणा ध्यान से प्रकट कराया । चिन्ता ध्यान व अन्धे माण्ड्य में धारणा प्रवेय नहा होगा । यह एक ध्यान धान मुने धारण बहनी थी ।

अपना ध्यान

ध्याने निण म एक घात कना चाहता हूँ । सन् १९१६ में मेने घर ध्याना, तय ह्याण मान का उम्र था । मेने माना था कि इच्छोस सात और भिन जाये तो काम मदन हागा । ब्रह्म जिनामा लेकर मे घर ध्यातकर निकना था । उसके निण मुक इच्छोस साल चाहिए थे । पहले इच्छोस सात घर म वान थे । उनने ही और चाहिए । सन् १९२७ की समाप्ति क शिन ध और इच्छाग सात पूरे हा रहें थे । उम समय मेरा गहर अयन्त कम जाट था । वजन ८८ पौण्ड था । मेने माना ही था कि घत्र ज्योण वजन का जलगत नहा है क्याकि क्वीम सात पूरे हा चुक है । अय समाप्ति है और समाधान भी मुके भिन चुका । समाधान ता मानने पर निभर करता है । मुके ना अक्षयन में भा इतना ही समाधान था । अक्षयन से मात्र तब मुने कमा पना हो नग कि जागा ता समाधान हासित करने में

तब तीव्र मानस होनी है। तब वाक्य तो अतमाधान व निष्पन्न होगा। बचान म म समाधि की कोशिश करना था, यद्यपि मैं मानता था कि समाधि वर्जित है। गरमी के दिनों में नून व तावे पचाना लगाकर बैठ जाता था, ऊपर म नाना-भा धारा गिरता था जैसे मग्न्य व गिर पर का अभिप्रेत प्राप्त हो। मेरा वित्त गलत हो जाता था और मैं मानता था कि समाधि लग गया। वास्तव में समाधि लगा था नहीं यथा भगवान् ही जाने उन दिनों में उम समय मान लेता था कि मरी समाधि लग गया।

मनु १६२५ व आरम्भ में मैंने मान लिया था कि मेरा समाधान ही पुरा है वा अत्र समाधि होगा। बापू के पास गिरायन पहुंच गया कि मेरा योग कमजोर है। मैंने उनसे और मन् वाच चार मील वा ही फासना था। सविन म अपने काम म इनका समय रहता था कि कभी उक्त पास नग गता था और मैंने यह भी माना था कि उनसे समय की बहुत कोशिश है। जब बापू का पता चला तो उहाँ मुझे बुलाया। कहा कि तुम्हारा योग कमजोर है तो मेरे पास रहो, मैं उपचार करूँगा। मैंने उनसे कहा कि आपके उपचार पर मेरा यत्न विधास नहीं है। आपके पास पचाना राम है। उममें मेरे पास काम है बीमार का मेरा और उममें भी पचाना काम आपके पास है जिनाम म म्क मे है। मेरे हिम वितना आश्रय ? म पर बापू जाने कि बात तो ठीक है फिर तुम डाक्टर के पास जाओ। मैंने जवाब दिया कि डॉक्टर के पास जाने व करने सम्राज के पास जाना ही है। फिर बापू जाने कि हमारे के लिए चही जाया। फिर वे एक-एक स्थान बनाते गये—मसूरा उबमड बगलार आदि। आखिर मैंने हवापेरी की बात बताने का और कहा कि मेरे स्थान बनाने के लिए तैयार हैं। मुनत हो वे मुग हुए और उराने पूछा कि कहीं आश्रय ? मैंने कहा कि वधा से चार मील की दूरी पर पवनार है, जहाँ अमना राजा ने एक बगना बनाया है वहाँ मुन म मिल हागा हवा परा के लिए मैं वहाँ जाऊँगा। इस पर बापू जाने कि यह भी ठीक है कि मरीज लग कहीं दूर जा सारा है ? लेकिन वान ठीक तो है वार्ते कि

आज तू जा चिन्तन करना है वह सब छोड़ दे। परनार चार ही मील का दूरी पर है तो मग लाग चचा करने आयेंगे। मैंने कहा कि गीक है भ साग चिन्तन छाड़ू हूँ।

उस समय चार मील चलने का ताकत मुझमें नहा थी। इसलिए मैं मोटर में बैठकर पवनार गया। जब मात्र घाम नगी क पुत्र पर पहुँचा तो 'मयस्त मया सयम्न मया'—मैंने छाटा मैंने छाटा, ऐसा मय मन में त्रिवार बोलकर मैं पवनार के उस टाँके पर बैठ गया। त्रिप ज्ञानद्वय का एक किताब धरने पास रखा जिसके चयन का काम उस समय मैं करता था। उसमें त्रिप आधा घटा देता था और बाकी शिभर हूँना और लेटना। 'गरीर कमजार था इसलिए आरम्भ में मैं पाक भिन्न खाता था। धीरे धीरे उसे बढ़ाया। आहार तो मरा हमेशा स्लाइडर हा रहता था और पीछे भी रहता था। लेकिन उस समय मैंने दूध की बाग माना क्योंकि और बाकी चित्त में का विचार हा नहीं छ। विचार तो पढ़न से न नग था। इस तरह दूय स्थिति में मैं परकिता था। सामने पह पह आदमा नाम रहे हैं लेकिन चित्त की का शर्त अनुभव नहीं हा रहा है, चित्त पर उमका का अमर नहा हा हा है। कोई चिन्तन नी नहा चन रहा है तेमी जानत थी। परिणाम हा कि एक मान म चानीन पीठ वजन बना और म म बढकर है। एक पन्च गया। मरा यह अनुभव है कि जब हम विचार और शक्तों पर कातू हा है और नाना से अलग हाकर कवन आरति हाक है तो मरा बन्त जन्म स्वस्य हा जाता है।

गुजरान ने मैं ६८ पीठ वजन लेकर था। और जब क म नीटा तो ६६ पीठ था। फिर कानत पर दूर। उसमें ज्य व्याग तबनाफ लाग का हूइ मुके कये हू। आर मैं व्यक्ति टाना ता मुके ज्याग तबनाफ हूँ न जात हू व्यवस्था का काम स्याताय लो हाक हू है। यात्रा में बड़े लोगो मे मिलने का मरतु है।

बहुत तरलीफ उठाकर मिलने आने थे । यज्ञात यात्रा में मैंने फिर से एक प्रयोग शुरू किया । पवनार में बाहरी काम कुछ नहीं था । थोड़ा-सा जान दब का चिल्लन और फिर सादना घूमना, बैठना खाना और साना—और कुछ भी नहीं था । कोई मिलने आया तो मैं बाल कर लेता था । उसकी बात सुनता था । यात्रिण तौर पर उत्तर देना था और वह मनी भी होना था । तैरिन चित्तनपूर्वक उत्तर नहीं देता था । इधर इस अज्ञात यात्रा में मैंने नया प्रयोग शुरू किया । भूगण आदि की सारी चिन्ता छोड़ दी । विचार और विचार की मुक्ति के साथ चिन्ता-मुक्ति भी आरम्भ हुई । मुझे कोई कतब्य नहीं है ऐसा मान लिया । मन चिन्ताएँ छोड़ दी, तो परिणाम यह हुआ कि मैं खाना चना गया और गरार बढना चना गया । अक्सर यह माना जाता है कि बुनाप में शरीर बढने में दर लगती है । लेकिन मुझे कुछ भी देर नहीं लगा । इस समय गरमी की बहुत ज्यादा तबलीफ हुई, घूल की तरलीफ तो थी ही, निस पर भी शरीर आराम ही महसूस कर रहा था और मेरी सारी कमजोरी हट गयी । जो काम बहुत-से औपधिया से नहीं बनना वह विचार विचार और चिन्ता की मुक्ति से बनता है, यह मेरा अपना अनुभव है । इसका थोड़ा-सा अन्वयास आप भी करें ।

इधर

२३ = '६०

—गुजरात के कायकर्ताओं के साथ

